Bharat Ki Aitihasik Jhalak

By

Shiva Kant Jha

"I had a lot of interest in history, and I studied it comprehensively. I wrote the *Bharat Ki Aitihasik Jhalak* (1954) whilst I was a student of Class XI. The book was published with the financial help from my mother. Prof. K.K. Mishra, who taught me history for four years at C.M. College, commented on my book:

"The history of any country is best understood when studied in its social, economic, political and cultural aspects. The writer has spared no pains in analysing such aspects throughout the book."

Shiva Kant Jha, *On the Loom of Time* p. 100 (2nd Ed. 1914) uploaded at www.shivakantjha.org; and also at https://ontheloomoftime.wordpress.com/contents/

1954

Shiva Prakashan, Bengalitola

Laheriasarai

Printed by: Panchayat Press, Laheriasarai

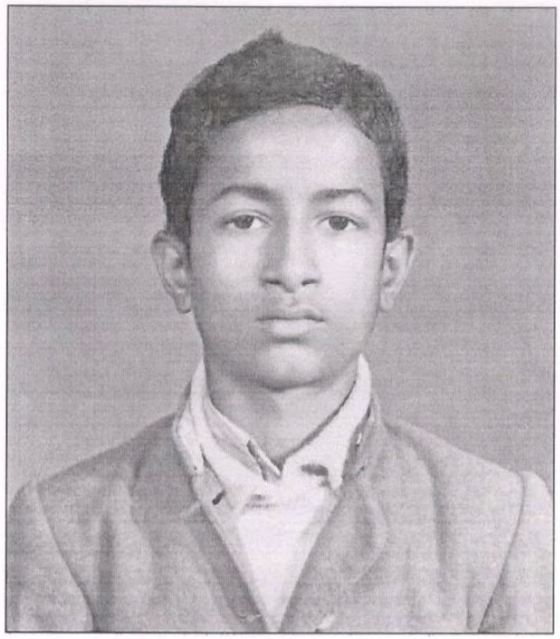

Shiva Kant Jha, a student at
M. L. Academy, Laheriasarai

Shiva Kant Jha, a student at
C. M. College, Darbhanga

"……… मैंने प्रस्तुत पुस्तक की कतिपय अंशों की पाण्डु-
लिपि का अवलोकन किया था। लेखक ने पुस्तक के कई स्थलों में कतिपय प्रामाणिक ऐतिहासिक ग्रन्थों से सामिग्री लेकर समाविष्ट की है जिसका उल्लेख आपने पुस्तक की पाद टिप्पणी में कर दिया है। पुस्तक लिखने में बिहार माध्यमिक स्कूल परीक्षार्थियों की आवश्यकतायें मुख्यतः ध्यान में रखी गयी हैं। मेरी आशा है कि स्कूल छात्रों के लिए पुस्तक लाभप्रद सिद्ध होगी।

जे० कुमर

२४–७–'५४

प्रधानाध्यापक
एम० एल० एकेडमी, लहेरियासराय

"जिस मनोवैज्ञानिक रूप से ऐतिहासिक युग प्रवाह का चित्रण प्रस्तुत पुस्तक में किया गया है, वह इस क्षेत्र में नवीनतम प्रयास समझा जा सकता है। भाषा की सरलता मधुरता एवं प्रवाहशीलता, इतिहास-रस के परिपाक में पूर्ण सहायक है।

इस विवेच्य ग्रन्थ का अन्तरतल उसी तरह प्रामाणिक एवं विस्तृत है जिस तरह बाह्य कलेवर सरल एवं मधुरता से युक्त है। माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के लिए प्रस्तुत ग्रन्थ आलोक-पुंज सिद्ध होगा ऐसा मेरा विश्वास है। जिस प्रगतिवादी धारा की झलक यत्र तत्र दमकती है वह चमक नवीन छात्रों के निर्माण में सहायक होगी।

बदरीनाथ मिश्र

एम० ए०, बी० एल०, डिप-इन-एड

Department of History & Political Science
C. M. College (Darbhanga)

I have gone through some portions of 'Bharat ki-Arti asik Jhalak' by Pandit Shri Shivakanta Jha who has taken great pains in collecting materials for this book. The book covers all aspects of Indian History. An attempt has been made by the learned author to provide facts in a systematic way which is very useful to the studerts preparing for Secondary Examination.

I am sure the book will undoubtedly removs the outstanding grievances of the students.

K. K. Mishra M. A.
Professor of History

27-7-54

आवरण पृष्ठ मुद्रक—पंचायत प्रेस, लहेरियासराय।

[...]हावीर क[...] [...]क्या शिक्षाएँ हैं?

[...] बाल्यकालीन [...] [...]र था। इनका जन्म [...]में कुण्डग्राम (जो भ[...] [...]मक गणराज्य में था) में [...]। इनके पिता का नाम [...]र्थ था और माता का नाम त्रिशला। वे मगध अधिपति बिम्बिसार के सम्बन्धी थे। वर्द्धमान की शादी यशोदा नामक एक सुन्दरी राजकुमारी से कर दी गई। इनके मन में कई प्रश्न उठे—जीवन क्या है? मोक्ष कैसे प्राप्त होगा? सत्य क्या है? उपर्युक्त प्रश्नों के समाधान के लिये उन्होंने ३० वर्ष की अवस्था में घर त्याग दिया।

इसी काल में पार्श्वनाथ नामक जैनाचार्य भ्रमण करके अपने धर्म को फैला रहे थे। जैनधर्म का आदि प्रवर्तक आदिनाथ थे। वर्द्धमान पार्श्व के अनुगामी हो गये। फिर भी उनके दिमाग में वे प्रश्न चक्कर काट रहे थे। कहा जाता है कि बारह वर्ष तक उन्होंने अपने परिधान समेत को परिवर्तित नहीं किया। ४२ वर्ष की अवस्था में इन्हें कैवल्य[1] प्राप्त हुआ। उन्होंने इन्द्रियों पर विजय पाई और जिन[2] हो गये। जैनधर्म का इन्होंने खूब जोरों से फैलाना शुरू किया। इनकी मृत्यु के समय, इनके अनुसरण-कर्ता १४००० थे।

महावीर ने स्वयं भी पर्यटन किया। मगध, मिथिला,

---

१ कैवल्य = मोक्ष

२ जिन = विजेता

कौशल आदि में ग...
...युं
स्था में हुई (४७४ ई...

[i] हिंसा करना पाप...
[ii] असत्य बोलना पाप...
[iii] चोरी, छल, प्रपंच करना पाप है।
[iv] धन जमा करना पाप है।
[v] परिधान की कोई आवश्यकता नहीं। केवल आत्मा की पवित्रता चाहिये। महावीर स्वयं दिगम्बर[3] रूप में ही रहा करते थे।
[vi] यज्ञ, कर्मकाण्ड आदि से मनुष्यों को मुक्ति नहीं मिल सकती। मुक्ति के लिए त्रिरत्न[4] की शरण जाना होगा।
[vii] एक जन्म में मनुष्य जैसा करता है दूसरे जन्म मे वैसे ही पाता है। इसलिये चरित्र-भ्रष्ट मत बनो, ब्रह्मचर्य का पालन करो।

...खर देशाई ने लिखा है:—उपवासादि से शरीर और मन को निर्मल रखना और सर्वसृष्टि पर समान भाव से प्रेम रखना ही महावीर के उपदेशों का रहस्य था।

प्रश्न—२ बुद्ध कौन थे? कल्याण के लिये उन्होंने कौन २ उपदेश दिये?

---

३ दिगम्बर= नग्न
४ त्रिरत्न= सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन, सम्यक व्यवहार

बुद्ध का प्राथमिक नाम सिद्धार्थ था। इनका जन्म छठी शताब्दी ई० पू० में लुम्बनी बन में, माया के गर्भ से हुआ था। इनके पिता का नाम शुद्धोन था, जो कपिलवस्तु (Republic) के राष्ट्रपति थे। ये लोग शाक्यवंशी थे।

रोगी को देखा, मुर्दों को जलते हुए देखा, गरीबों को देखा, दुखियों को देखा —उसके मन मे एक प्रश्न उठा—क्या मैं भी वृद्ध हो जाऊंगा ? मर जाऊंगा ? क्या यही है जीवन ?

सिद्धार्थ सदा उपर्युक्त प्रश्नों को सुलझाने में लगे रहते थे। पिता ने जब सिद्धार्थ की इस प्रवृत्ति को देखा तो बहुत चिंतत हुए। उन्होंने सिद्धार्थ की शादी 'यशोधरा' नामक राजकुमारी से कर दी। कुछ दिनों के बाद इन्हें एक पुत्र की भी प्राप्ति हुई, जिसका नामकरण राहुल किया गया।

एक रात, सर्वं क्षणिकम्, सर्वं दुःखं, सर्वम् अनित्यम् समझ कर, सिद्धार्थ घर त्याग कर चल पड़े। इसे ही बुद्ध को 'महाभिनिष्क्रमण' कहते हैं।

अनेकों स्थान में भ्रमते हुए, सिद्धार्थ फल्गु नदी के किनारे गये। वहीं के एक वन में बैठकर घोर तपस्या करनी शुरू की, परन्तु शान्ति नहीं ली। अज्ञात किसी नारी की वाणी— "वीणा के तार को इतना न कसो कि टूट जाय और इतना न ढ़ीला करो कि बजे ही नहीं।" —ने इन्हें सचेत किया। इन्होंने तपस्या भंग कर दी। गया के वटवृक्ष के नीचे ये ध्यान मुद्रा में बैठे हुए थे, वहीं इन्होंने मार[५] पर विजय पाई— असत्य पर

---

५ मार = कामदेव

विजयी हुए, ज्ञान की किरणें मिली, बुद्धि प्राप्त हुआ. और 'बुद्ध' हो गये।

बुद्ध सारनाथ गये। वहाँ उन्होंने अपने ५ अनुगामियों को- कौण्डिन्य, विप्र, महानाम, अश्वजित- उपदेश दिया। यही बुद्ध का धर्मचक्रप्रवर्त्तन है। बुद्ध ने कहा:- "चरथ भिक्खवे बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय।" सभी शिष्य भिन्न-भिन्न भागों को चले गये। बुद्ध भी बुद्धि प्रचार्थ निकले।

बुद्धमगध आये। बिम्बिसार इस धर्म से बहुत प्रभावित हुआऔर बौद्ध हो गया। प्रसेनजित (कोशल नरेश), प्रधोत (अवन्ति नरेश) ने भी बुद्ध की शरण ली। बुद्ध कपिलवस्तु भी गये। राहुल, शुद्धोदन, भद्रक, आनंद, अनरुद्ध, उपालि भी त्रिरत्न[६] के शरण में आये। बुद्ध वैशाली गये और अम्बपाली के घर पर भोजन किया।

इनकी मृत्यु कुशीनगर में ५४५ ई० पू० में हो गई। इसे निर्वाण' कहते हैं।

उपदेश—

(i) बुद्ध ने बताया कि जीवन क्षणिक है, दुःखमय है। लोगों का यह कर्त्तव्य है कि जीवन पर अनुशासन रखे। —पाप न करे (सव्वपापस्य आकरणं), बोझ कार्यों को ही करे (कुसलस्य उसापदा), चित्त को चंचल नहीं होने देना—ये हीं बुध के शासन थे।

(ii) बुद्ध ने कहा— "जीव मात्र से प्रेम करो, प्रेम की विजय ही सबसे बड़ी विजय है।"

---

६ त्रिरत्न= बुद्ध धर्म संघ।

[iii] मनुष्य जन्म के अनुसार किसी जाति का नहीं होता बल्कि कर्त्तव्य के अनुसार होता हैं।

[iv] यज्ञ और आत्मा के सम्बन्ध में वे मूक थे। पं० नेहरू के शब्दों में—"न वे उससे (ब्रह्म से) इकरार करते है, न इनकार।"

[v] लोगों पर विजय पाने के पहले अपने पर विजय प्राप्त करो।

[vi] हिंसा करना पाप है। अतः यज्ञादि में पशुओं की हत्या करना मूर्खता है।

[vii] बुद्ध ने कहा—

[१] लालच न करो।

[२] हिंसा कभी न करो।

[३] असत्यवादी मत बनो।

[४] व्यभिचारी मत बनो।

[५] मदिरा आदि नशा को प्रयोग मत करो।

[viii] दुःख को अंत करने के लिये बुद्ध ने 'अष्टाङ्गिक' मार्ग (The noble eightfold path) का निर्देश किया।

[१] सभ्यक्वाक्य। [२] सभ्यक संकल्प।

[३] सभ्यक् आजीव [४] सभ्यक् व्यायाम।

[५] सभ्यक् दृष्टि। [६] सभ्यक् कर्मान्त।

[७] सभ्यक् स्मृति। [८] सभ्यक् समाधि।

प्रश्न–२ [अ] बौद्ध एवं जैनधर्मों की उन्नति क्यों हुई ?

[आ] बौद्धधर्म अपनी ही जन्मभूमि से नष्ट क्यों हो गया ?

बौद्ध और जैन धर्म के फैलने का प्रमुख निम्न कारण थे:—

[i] वैदिक धर्म का प्रांजल स्वरूप बहुत ही विशाक्त हो चला था। यज्ञों में हत्या की जाती थी, कर्मकाण्डों में बहुत सी जटिलता आ गई थी। इसलिये जनता इस धर्म को त्यागना चाहती थी। चूंकि बौद्ध और जैन धर्म में ये अवगुण नहीं थे, फलतः जनता इसी धर्म के तरफ झुकी।

(ii) वर्ण व्यवस्था एवं जाति व्यवस्था के बन्धन कस गये थे और कर्त्तव्य के आधार पर जाति एवं वर्णों का वर्गीकरण नहीं किया जाता था, बल्कि जन्म के आधार पर वर्गीकरण होता था नीच जातियों से पशुवत् व्यवहार किया जाता था। फलतः लोगों में वैदिक धर्म के प्रति असंतुष्टि थी।

(iii) वैदिक धर्म के अधिपति ब्राह्मण हो गये थे। जिस तरह मध्यकाल में यूरोप में पादरियों की सत्ता थी, उस तरह की सत्ता ब्राह्मणों ने भी प्राप्त करना चाहा। इनके इस प्रवृत्ति से अनेक राजे भी असंतुष्ट हो गये थे।

[iv] बहुत से ब्राह्मणों ने केवल दिखावटी पूजा, यज्ञ आदि करना शुरू किया, परन्तु वास्तव में उनकी यह विडम्बना थी, उन लोगों में ज्यादे तर चरित्रभ्रष्ट होते थे। फलतः जनता की आँखों से उनका स्थान बहुत ही नीचा हो गया था।

(v) संस्कृत भाषा में ही वैदिक धर्म के ग्रन्थ होते थे। संस्कृत जानने वालों की संख्या कम हो चली थी। जनता नहीं समझती थी कि उसके ग्रंथों में क्या है। बौद्धों और जैनों ने जनता की भाषा (पाली) में शिक्षा देना शुरू की, जिससे लोगों में इस नवीन धर्म के प्रति श्रद्धा जाग उठी।

(vi) वैदिक धर्म-प्रचारकों में वह लगन नहीं थी, जो बौद्ध और जैन धर्म के प्रचारकों में थी।

(vii) बुद्ध ने बौद्ध धर्म मण्डल का संगठन प्रजातंत्र संघ के रूप में किया था। फलतः उसका कोई डिक्टेटर नहीं हो सका। बुद्ध ने कहा—"अपनी ज्योति में चलो, धर्म की शरण जाओ।"

(viii) बौद्ध धर्म को राजाओं का संरक्षण प्राप्त हुआ। बिम्बसार, प्रसेनजित, प्रद्योत, अशोक, कनिष्क, हर्ष आदि इनमें मुख्य थे। जैनों को भी, बौद्धों के समान तो नहीं, फिर भी राज्य संरक्षण प्राप्त हुआ। चन्द्रगुप्त मौर्य्य जैन हीं था।

बुद्ध धर्म अपनी ही जन्मभूमि से नष्ट क्यों हो गया ?

कारण:—

(i) वैदिक धर्म की जटिलता से ऊब कर लोगों ने बौद्ध धर्म को ग्रहण किया था। पीछे चलकर जो जटिलता वैदिक धर्म में थी, वे सभी बौद्धों में भी आ गईं। बौद्धों ने भी पूजा, मूर्ति स्थापना के रिवाज शुरू हुए।

[ii] राजाओं और जनता द्वारा वैभव प्राप्त बौद्धधर्माधिकारी लोग अति विलासी हो गये थे। उनकी विलासिता पर जनता घृणा

करती थी।

(iii) संघ में बहुत सी स्त्रियाँ भी थी। बहुत तो चरित्र-भ्रष्टा हो गई थी। बुद्ध ने स्वयं कहा था—"यदि स्त्रियों को संघ में प्रवेश करने की आज्ञा नहीं मिलती तो बौद्ध धर्म दीर्घकाल तक टिकता सुधर्म हजारों वर्ष तक ठहरता; किन्तु चूँकि उन्हें यह आज्ञा मिल चुकी है, अब यह केवल ५०० वर्ष तक रहेगा।"[७]

(ix) बुद्ध के उपदेश पहले लिखित नहीं थे। फलतः भिक्षुओं ने जैसा रूप बनाना चाहा बना लिया।

(v) कुछ राजाओं को छोड़कर (जैसे—बिम्बसार, अशोक, कनिष्क, हर्ष आदि) जितने भी राजे हुए वे लोग इस धर्म को मानने वाले नहीं थे। इस धर्म को पीछे राजाश्रय न मिल सका। मुसलमानों के आगमन होने से बौद्ध धर्म का रहा-सहा मूल भी उखड़ गया।

(vi) ब्राह्मणों ने बौद्ध धर्म के सभी अच्छे २ सिद्धान्तों को अपने धर्म में ले लिया, फलतः बौद्ध धर्म खोखला पड़ गया। शंकर आदि विद्वानों ने शास्त्रार्थ में कई बार बौद्धों को हराया।

प्रश्न ४ भारत पर सिकन्दर की चढ़ाई एवं उसके प्रभाव का वर्णन कीजिये।

फिलिप्स का बेटा सिकन्दर यूनान देश के मेसिडन सूबे का राजा था। वह बड़ा महत्वाकांक्षी था। यह विश्व विजयी बनना चाहता था। इस भावना को पूर्ण करने के लिये ३३० ई० पू० में अपने देश से चला। इसने 'इरास' की लड़ाई में

---

७ विश्व इतिहास की भूमिका— लेखक पं० रामशरण शर्मा

डोरियस को और गागामेला की लड़ाई मे दारा को पराजित किया। ३२७ ई० पू० मे सिकन्दर हिन्दुकुश पार करता हुआ भारत आ पहुँचा सीमा प्रान्तीय जातियों ने सिकन्दर का खूब डटकर मुकाबला किया; परन्तु उन्हें सिकन्दर से पराजित होना पड़ा। सिकन्दर सिन्धु तक आ पहुँचा। राजा अम्भी ने सिकन्दर की अधीनता स्वीकार करली। सिकन्दर ने पुरु और अभिसार देश के राजे को पराजय स्वीकार करने को लिखा परन्तु वितस्ता का वीर राजा पुरु ने अधीनता स्वीकार नहीं की। एक रात मे सिकन्दर ने पुरु की फौज पर चढ़ाई करदी। झेलम नदी के तट पर घमासान युद्ध के बाद पुरु पराजित हुआ। सिकन्दर ने पुरु से पूछा—"तेरे साथ कैसा व्यवहार किया जाय?" पुरु ने स्वाभिमान भरे शब्दों मे उत्तर दिया—जैसा कि एक वीर राजा को दूसरे वीर राजा के साथ करना चाहिये।" सिकन्दर इस पर बहुत खुशहुआ और उसने पुरु को क्षत्रप पद प्रदान किया और उसकी राज्य लौटा दी।

अनेकों संघ राज्यों ने सिकन्दर की मुकाबलाखूब जम कर की। कई मर्तबे तो वह हारते हारते बचा। सिकन्दर की सेना बहुत थक चुकी थी। सैनिकों को जब यह मालूम हुआ कि भारत की केन्द्रीय शक्ति (नन्द वंश) से टक्कर लेना बाँकी ही है, तो वे बहुत डर गये और घर लौटने को तैयार हो गये। आखिर सिकन्दर को अपनी सैनिकों की बात माननी पड़ी। सिकन्दर भारतवर्ष में २६ फरवरी से २५ अक्टूबर तक रहा।

प्रभाव

(i) यूनान जाने के लिये भारत के उत्तर पश्चिम भाग में ३ स्थल पथ खुल गये। १ जल पथ भी चालू हो गया।

(ii) सिकन्दर के साथ अनेक यूनानी लेखकगण भी भारत आये थे जिन्होंने भारत वर्णन लिखा है। इन ग्रन्थों से उस समय की सभ्यता के बारे में जानने में बहुत मदत मिलती है।

(iii) अनेक भारतीय विद्वान यूनान गये और अनेक यूनानी भारत में रह गये। फलतः विचारों का आदान प्रदान खूब हुआ।

(iv) सिकन्दर के आक्रमण पथ में आने वाले ग्राम, नगर नष्ट प्राय हो गये। कृषि भी मारी गई।

(v) चन्द्रगुप्त ने सिकन्दर-शिविर में रहकर यूनानी सैन्य संचालन विद्या सीखी। इसका प्रयोग चन्द्र ने नंदवंश को नाश करने के लिये किया था।

प्रश्न—५ मौर्य्य वंश को स्थापित करने वाला कौन था? उसका वंश मौर्य्य वंश के नाम से क्यों प्रसिद्ध हुआ?

'मुद्राराक्षस' के आधार पर कहा जाता है कि महानन्द के ९ पुत्र थे जिनमे ८ तो विवाहिता पत्नी से उत्पन्न थे और अन्तिम मुरा नाम की एक नाइन दासी के गर्भ से, इसीलिये इसे मौर्य्य (या वृषल) कहते हैं। यह बहुत प्रतिभावान था। इसकी योग्यता देखकर इसके भाई बहुत बिगरे रहते थे। महानन्द भी चन्द्रगुप्त को प्यार नहीं करता था, फलतः चन्द्रगुप्त विद्रोही हो गया। इसे चाणक्य (जिसक पूरा नाम विष्णुगुप्त या विष्णुशर्मा)

एवं महानन्द द्वारा अपमानित मंत्री शकटर से सहायता मिली। शकटर तो थोड़े दिन के बाद मर गया, परन्तु चन्द्रगुप्त, चाणक्य के शिक्षण में रहने लगा। और चाणक्य चन्द्रगुप्त उत्तर-पश्चिम सीमाप्रान्त को चले गये।

कितने लोगों का मत है कि चन्द्रगुप्त क्षत्रिय था और नन्दों की सेना का प्रधान था। नन्दों से नहीं पटने के कारण वह विद्रोही बन गया।

इसी समय उत्तर पश्चिमी भारत पर सिकन्दर का आक्रमण हुआ। चन्द्रगुप्त ने सिकन्दर के पास नौकरी कर ली और यूनानी युद्ध कला सीखी। परन्तु इसे सिकन्दर से नहीं पट सका और वहां से भागना पड़ा। सिकन्दर के लौट जाने पर चन्द्रगुप्त और चाणक्य ने अनेक पहाड़ी राजे का सहयोग लिया और पांटलिपुत्र पर चढ़ाई कर दी। चाणक्य ने अपनी कूटनीतिज्ञता से नन्दों का नाश कर दिया। चन्द्रगुप्त मगध की गद्दी पर बैठा और वंश का नाम करण 'मौर्य्य' किया इस नाम करण के क्या कारण थे उसमें इतिहासज्ञों में मतभेद है।
प्रमुख विचार निम्न हैं:—

(i) चूकि उसकी माता 'मुरा' थी। उसे अमर करने के लिये निज वश का नाम करण मौर्य्य वंश किया।

(ii) चन्द्रगुप्त क्षत्रिय जाति का राजकुमार था जिसका प्राचीन वंश 'मौर्य्य' नाम से विख्यात था।

(iii) चन्द्रगुप्त का घर उस पहाड़ी इलाके में था जहां मोर

बहुत पाये जाते थे। चन्द्रगुप्त को भी मोर से बहुत प्रेम था। इसलिये उसने निज वंश का नामकरण 'मौर्य्य' किया।

इसी समय में सिकन्दर का प्रतिनिधि सेल्यूकस निकेटर का आक्रमण हुआ। वह भारत के उत्तरी पश्चिमी भाग को जीत लेना चाहता था, परन्तु लड़ाई में वह हार गया और उसने चन्द्र से संधि कर ली। सेल्यूकस ने अपनी बेटी समेत ये ४ प्रान्तों को चन्द्र के अधीन कर दिया— १ काबुल २ हरात ३ कन्दहार ४ मकरान एवं कलात। सेल्यूकस ने मेगास्थनीज नामक राजदूत को भी चन्द्र के पास भेज दिया। बदले में चन्द्र ने ५०० हाथी उपहार में दिये।

प्रश्न—६ अशोक कौन था ? कलिंग युद्ध के बारे में क्या जानते हैं ?

सम्राट बिन्दुसार की मृत्यु के बाद २७३ ई०पू० में पाटलिपुत्र की गद्दी पर अशोक बैठा। सम्राट का प्रेम तो इसे प्राप्त नहीं था, परन्तु सुस्वभाव के कारण प्रजा एवं राज्यकर्मचारियों का प्रेम प्राप्त था। यही कारण था कि तक्षशिला के विद्रोह को तो सुसीम शान्त नहीं कर सका परन्तु अशोक ने बिना युद्ध किये ही विद्रोह को शमन कर लिया। बिन्दुसार ने अशोक को तक्षशिला का शासक बना दिया।

बौद्धग्रन्थों (दीपवंश, महावंश) के आधार पर कहा जाता है कि अशोक ने ९९ भाई की हत्याकर गद्दी पाई। परन्तु अशोक के शिलालेखों से एवं नवीन ऐतिहासिक शोध से यह

विचार एकदम गलत साबित होता है। सुसीम (अशोक का बड़ा भाई) की हत्या का षडयंत्र राज्य कर्मचारियों ने ही रचा था।

अशोक बहुत बड़ा महत्वाकाँक्षी था। पूरबी घाट में कलिंग नामक स्वतंत्र और शक्तिशाली राज्य था, जिसकी हस्तिसेना बहुत ही सधी हुई थी। अपने राज्य के आठवें वर्ष में प्रिय दर्शी सम्राट ने कलिंग को जीता। घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध मे, अशोक के शिलालेखों के अनुसार १ लाख आदमी मरे और १½ लाख बंदी बनाये गये। यह विजय अशोक की प्रथम और अन्तिम विजय थी। इस जीते हुए प्रान्त को अशोक ने मौर्य्य साम्राज्य में मिला लिया और उसकी प्रादेशिक राजधानी तोषाली बनाई गई।

प्रश्न–७ भारतवर्ष में बौद्धधर्म को मानने वाला सबसे प्रसिद्ध सम्राट कौन हुआ? उसने बौद्धधर्म के प्रचारार्थ क्या २ किये।

कलिंग युद्ध की विभीषिका को देखकर अशोक का मन बहुत दुःखित हुआ। उन्होंने मोग्द्लिपुत्र तिष्य के प्रभाव में आकर बुद्धधर्म को स्वीकार किया और इस धर्म का सबसे बड़ा पोषक निकला।

अशोक ने बौद्धधर्म को राज्यधर्म का पद प्रदान किया और इसके प्रचारार्थ अनेक उद्योग किये।

(i) मोग्द्लिपुत्र तिष्य की सहायता से अशोक ने पाटलिपुत्र में बौद्धधर्म की तृतीय संगीति (सभा) बुलाई। यह सभा ९ महीने तक चली और एक हजार भिक्षु इसमें उपस्थित हुए।

इन्हें ९ मण्डलों में विभक्त कर चतुर्दिक भेजा गया।

(ii) अपनी बेटी संघमित्रा और पुत्र महेन्द्र को अशोक ने लङ्का भेजा, बौद्धधर्म के प्रचार के लिये। इनलोगों ने लङ्काधिपति देवनाम्प्रिय तिष्य को बौद्धधर्म कबूल करवाया।

(iii) अशोक स्वयं भी यात्रा करने चला। जगह-जगह शास्त्रार्थ करता, जिनमें स्वयं भी भाग लेता। अनेकों वैदिक धर्म के विद्वानों को उसने शास्त्रार्थ में परास्त किया, फलतः वे सभी बौद्ध धर्मानुआयी हो गये। अशोक ने लङ्काधिपति तिष्य को लिखाः—"मैं तो बुद्ध की शरण में आ गया हूँ, मैं धर्म की शरण में आ गया हूं, मैं संघ की शरण में आ गया हूं, मैं ने शाक्यपुत्र के अनुयायी बनने की प्रतिज्ञा करली है। ऐ मनुष्यों के शासक! तुम भी अपने मन को त्रिरत्न की शरण लेने के लिये तैयार करो।"[८]

(iv) अशोक ने बौद्धधर्म के 'पवित्र' सिद्धान्तो को शिला लेखों पर खुदवाकर अपने साम्राज्य (साम्राज्य के बाहर भी उसके शिलालेख एवं स्तंभ लेख पाये गये हैं।) में गरवा दिया।

(v) अशोक ने धर्म 'महामात्र' का नियुक्ति की, जिसका प्रमुख कार्य्य बौद्धधर्म प्रचार ही था।

---

८ From-The English translation of Mahavansha by tounour Page 46 वृहत्तर भारत ले० चन्द्रगुप्त वेदालंकार

अशोक द्वारा किये इस सकल प्रचार के फलस्वरूप बौद्ध-धर्म सिरिया (Syria), मिश्र (Egypt), साइरीन (Cyrene), मसेदुनियां (Macedonia), इपाइरस (Epirus) आदि में फैल गया।

प्रश्न—८ अशोक को महान क्यों कहा जाता है? उसने जनहित के लिए कौन-कौन से कार्य्य किये?

अशोक को देशी विदेशी विद्वानों ने 'महान' शब्द से सम्बोधित किया है—जो वास्तव में ठीक ही है। संसार के इतिहास में अशोक प्रथम व्यक्ति हुआ, जिसे विजय (युद्ध में) के बाद विजय से घृणा उत्पन्न हुई हो। पराजय के बाद युद्ध से प्रवज्या (सन्यास) लेने वाले तो अनेक मिलेंगे परन्तु विजय के बाद विजय से सन्यास लेने वाला अशोक ही हुआ।

'प्रभुता पाइ, काह मद नाहीं' के अपवाद में यदि कोई सम्राट हुआ तो अशोक। देखा जाता है कि जब कोई सम्राट किसी धर्म को स्वीकार कर लेता है तो अन्य धर्मों को घृणा की दृष्टि से देखना शुरू करता है। परन्तु अशोक में धर्मान्धता छू तक नहीं गई थी। वह कहा करता था कि 'सभी धर्म किसी न किसी कारण से प्रतिष्ठा प्राप्त करने योग्य हैं।'

विजय की जैसी परिभाषा अशोक ने दी वैसी परिभाषा देने वाला विश्व के इतिहास में कौन-सा सम्राट हुआ? "सच्ची विजय लोगों के हृदय पर होती है—दया, धर्म और कर्त्तव्य के

द्वारा सभी विजय प्राप्त होती है। सहिष्णुता की इससे ज्यादे पराकाष्ठा क्या हो सकती है—" उसके साथ (अशोक के साथ) यदि कोई बुराई करना चाहते हैं तो उसे भी प्रियदर्शी सम्राट जहाँ तक होगा सहन करेंगे।"

"राज्य के बन्धनों से बँधा रह कर भी बंधनों से दूर रहा।" —अर्थात यह नमूना सम्राट है जिसने सन्यास लेकर भी २९ वर्षों तक शासन का सुन्दर संचालन किया।

यही कारण है कि अशोक को महान कहा जाता है। एच० जी० वेल्स ने " आउट लाइन ऑफ हिस्ट्री " में लिखा है— विश्व इतिहास के पृष्ठ सम्राटों एवं शासकों के नाम से पूर्ण हैं परन्तु उनमें अशोक का नाम ज्योतित है। वोल्गा से जापान तक उसकी कृतियों को गौरव-युक्त स्थान प्राप्त है। ..... जितने लोग अशोक की स्मृति को बनाये रखे है उतने लोग केन्सटेन टाइन और शार्लमैन के नाम कभी न सुने होंगे।"

जनता कल्याण ही अशोक का मुख्य ध्येय था। उन्हों ने—

(i) व्यापार एवं आवागमन के लिए सड़कों का निर्माण कराया।

(ii) सड़कों के किनारे जलाशय, सराय, का निर्माण कराया। सड़क के किनारे वृक्ष लगवाये।

(iii) शिक्षण संस्थाओं का निर्माण कराया। अशोक ने नालंदा में 'संघाराम' बनवाया था।

(iv) जगह-जगह अस्पताल बनवाये गये। पशुओं के लिए भी अस्पताल बनवाये गये।

(v) सिचाई के लिए नगर, कुओं, पोखड़े का निर्माण किया गया।

(vi) व्यापार में भ्रष्टाचार नहीं हो, राज्य कर्मचारी जनता को दुःख न दे, जनहित ही राज्य का उद्देश्य हो—अशोक यही चाहता था।

अशोक ने कह था—"मैं सदा इस काम के लिए तैयार रहता हूँ, सब वक्तों में और सब तरह; चाहे मैं खाना खाता होऊँ, चाहे रनिवास में होऊँ, चाहे अपनेशयन गृह में रहूँ या स्नान में, सवारी पर रहूँ या महल में, सरकारी कर्मचारी जनता के कार्यों के बारे में मुझे बराबर सूचना देते रहें। ..... जिस समय भी हो और जहाँ भी हो मैं लोक हित के लिए काम करूंगा।[९]

प्रश्न—६ मौर्य शासन प्रणाली के बारे में क्या जानते हैं? किन-किन वस्तुओं से इस प्रणाली के बारे में जानने में, सहायता मिलती है?

हम नीचे लिखे वस्तुओं से ज्ञान प्राप्त करते हैं॥

(i) चाणक्य लिखित अर्थशास्त्र से।

(ii) मेगास्थनीज की पुस्तक इन्डिका से।

(iii) अशोक के लेखों से।

(iv) 'मुद्राराक्षस' नामक संस्कृत नाटक से।

(v) सिकन्दर के साथ आये यूनानी लेखकों के भारत-वर्णन से।

---

९ हिन्दुस्तान की कहानी में उद्धृत पं नेहरु

(vi)नवीन ऐतिहासिक शोध से (जैसे—स्यूनर का रिसर्च लेख आदि)

साम्राज्य का सर्वे-सर्वा सम्राट होता था। यद्यपि वह निरंकुश होता था फिर भी जन कल्यान ही उसका कर्तव्य होता था राज्याभिषेक के समय उसको प्रतिज्ञा करनी पड़ती थी–"मैं, जीवन और पुत्र से हीन होऊँ, यदि तुझे (जनताको) दुखदूँ।"

सम्राट—

(i) प्रधान सेनापति होता था।

(ii) न्याय का स्रोत और साम्राज्य का प्रधान न्यायाधीश था।

(iii) सम्राट सामाजिक कार्यों का निर्णायक और आर्थिक जीवन का संचालक होता था।

(iv) गरीबों, दीनों को मदत करना उसका कर्त्तव्य था।

(v) शिक्षण, कला-कौशल, व्यापार, कृषि क प्रोत्साहन देना उसका कर्त्तव्य था।

राज्य का स्वरूप नौकरशाही राज्यतंत्र था। राजधानी पाटलिपुत्र थी। शासन कई विभाग में विभक्त थे:—

(i) केन्द्रीय शासन (ii) प्रान्तीय शासन (iii) नगर शासन (iv) ग्राम शासन (v) पौरीय शासन (vi) साम्राज्यान्तर्गत स्वतंत्र राज्यों का शासन।

केन्द्रिय शासन

इसका प्रधान सम्राट होता था। राजा मंत्रियों की सहायता से शासन करता था। मंत्रिपरिषद का प्रधान प्रधानमन्त्री कहलाता था। यह सभा केवल विचार दातृ सभा थी। निर्णय का पूर्णाधिकार सम्राट को ही था।

प्रान्तीय शासन

सम्पूर्ण साम्राज्य ५ प्रान्तों में विभक्त था। जिन्हें 'चक्र' कहा जाता था।

प्रान्त	क्षेत्र	राजधानी
मध्यप्रदेश	बिहार, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश।	पाटलिपुत्र
प्राच्यप्रदेश	कलिङ्ग, बंगाल।	तोषाली
पश्चिमप्रदेश	सिन्ध, गुजरात, मारवाड़।	उज्जयनी
उत्तरप्रदेश	काबुल, कन्दहार, काश्मीर एवं पंजाब के कुछ भाग।	तक्षशिला
दक्षिणप्रदेश	दक्षिण भारत।	सुवर्णगिरि

इनका शासक राज्य कुल का या राजाज्ञा प्राप्त व्यक्ति हुआ करता था। इन चक्रीय शासकों की सहायता के लिए भी एक मन्त्रिसभा होती थी। चक्रीयशासक केन्द्र के देख रेख में कार्य करते थे। चक्र के अधीन कई जन पद होते थे,। जो आन्तरिक मामलों में स्वधीन होते थे।

नगर शासन

मेगास्थनीज ने अपनी पुस्तक 'इन्डिका' में नगर शासन का सुन्दर वर्णन किया है। पाटलिपुत्र नगर में ३० मेम्बरों की १ कमिटी थी, जिके ५ विभाग थे और एक-एक विभाग में ६-६ मेम्बर थे।

विभाग	कार्य्य
प्रथम	व्यवसायिक वस्तुओं से सम्बन्धित कार्य्य।
द्वितीय	विदेशियों की रक्षा करना। उनके मर जाने पर उसकी चीजों को उसके घर भेज देना।
तृतीय	जन्म और मृत्यु का हिसाब रखना।
चतुर्थ	सेर, तराजू की प्रमाणिकता पर ध्यान देना।
पंचम्	निर्मित वस्तुओं को बेचना या बेचवाना।
षष्ठम्	कर वसूलना और कर नहीं देने वाले को दंड देना।

ग्राम्य शासन

गांवों को देख भाल करने के लिये एक राजकीय पुरुष रहता था, जो ग्रामिक कहलाता था। ग्राम का प्रधान गोप होता था, जो ग्राम पंचायत का प्रधान होता था और उसकी सहायता से ग्राम में शासन कार्य्य चलाता था।

पौरीय शासन

किसी किसी नगर में यह सभा होती थी। वहां के प्रमुख प्रमुख व्यक्ति उसके सदस्य होते थे। इनलोगों का शासन पर पूर्ण प्रभाव होता था।

साम्राज्यान्तर्गत स्वतंत्र राज्यों का शासन

साम्राज्य में कई स्वतंत्र राज्य थे (जैसे गान्धार, यवन, काम्बोज, राष्ट्रीक, आन्ध्र,) जिनके शासक वहां का राजा या संघ था जो केन्द्रीय मामले में ये स्वतंत्र रहते थे।

सेना

सम्राट के पास एक चतुरंगिनी सेना थी। (i) हस्तिसेना —९०००, (ii) अश्वारोही —३००००, iii) रथारोही —८०००, (iv) पैदल - ६००००० थे। सेना संचालन के लिये भी एक कमीटी थी, जिसमें ३० मेम्बर होते थे। मुद्रा-राक्षस के अनुसार हस्तिसेना का प्रधान भद्रभट्ट था। और अश्व सेना के प्रधान पुरुषदत्त। प्रधान सेनापति भागुरायन था।

गुप्तचर

गुप्तचर समूचे राज्य में जाल के समान फैले हुए थे। स्त्री पुरुष दोनों इस विभाग में थे।

आमद खर्च

आय के जड़िये:—

(i) भूमिकर से (यह ५वां या छठा भाग होता था)

(ii) खरीद बिक्री पर चुंगी से।

(iii) जुर्माना, दंड, उपहारादि से।

(iv) मंडी, कारखानों, कसाईखानों, शराबखानों, वेश्याओं पर लगे कर से।

व्यय— राजा का वैयक्तिक खर्च, शासन कार्य्य में व्यय शिक्षण कार्य्य में व्यय, कृषिकार्य्य में लोकोपकार के कार्य्य में व्यय।

न्याय

साम्राज्य का प्रमुख न्यायाधीश सम्राट होता था। ग्रामों में न्याय व्यवस्था पंचायत के द्वारा संचालित होती थी। तरह २ के न्यायालय होते थे एक फौजदारी द्वितीय दिवानी (कंटकशोधन धर्मस्त) दोनो के अधिकार बटे हुए थे।

प्रश्न १० मौर्य्य कालीन सामाजिक एवं आर्थिक दशाओं का वर्णन कीजिए।

इस काल में जाति प्रथा का बंधन कस गया था। वैदिक धर्म का प्रवाह रुक सा गया था। "मौर्य्य कालीन समाज में ब्राह्मणों को प्रमुख स्थान प्राप्त नहीं था।"—कहना वस्तुतः

असत्य ही होगा। सच तो यह है कि इस काल में भी ब्राह्मणों को समाज में प्रमुखता प्राप्त थी। अन्तर जातीय विवाह होते थे।

समाज में प्रमुखतः ४ वर्ग थे —

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र प्रत्येक वर्ग एक एक मुखिया चुन कर राज दरबार में भेजते थे। मुद्राराक्षस[१०] के अनुसार क्षत्रियों का प्रधान विजयवर्मा था। इन के अलावे एक प्रमुख वर्ग विदेशियों का था। यूनानी स्त्रियाँ (पुरुष भी) भारतीय समाज में घुल मिल गई थी। राज दरबार में दासियों एवं परिचारिकाओं में इन्हीं का प्रधान्य रहता था।

विष कन्या प्रथा—मौर्य्य कालीन समाज में एक रोग के सामान थी। कुछ सुन्दरी बालिकाओं को राजा निज निरीक्षण में रखता था। इन लड़कियों को तनिक तनिक विष खिलाया जाता था। यौवन काल में उन्हें शत्रु-राजाओं के पास भेज दी

---

१० "मुद्राराक्षस" संस्कृत साहित्य के प्रधान नाटकों में एक है। इसके प्रणेता विशाखदत्त थे। नंद एवं मौर्य्य कालिन राजनीतिक छल छद्मो को ही इस नाटकार ने कथावस्तु बनाया है। चाणक्य ने किस तरह चन्द्रगुप्त को साथ लेकर नंदों के विरुद्ध षडयंत्र किया और सफलता पाई, किस तर राक्षस (नंदों का प्रधानामात्य) ने विरोध किया और चाणक्य ने किस तरह उसका प्रतिकार किया इस नाटक में विशदरुपेणवर्णित है। इस नाटक में प्रमुखतः वीर एव अदभुत रसों का ही सामजस्य है।

जाती थी। इन्द्रियलोलुपता के वसीभूत होकर जो कोई भी उससे सम्भोग करता उसकी मृत्यु हो जाती।

चाणक्य ने कहा था "आर्य्य गुलाम नहीं बनाया जा सकता।"[11] हाँ म्लेच्छ (अनार्य) गुलाम बनाए जा सकते है। जहाँ कहीं गुलाम रूप मे जो दृष्टान्त मिलते हैं वे अनार्य के हैं[12]।

स्त्रियों को तलाक दिया जा सकता था। स्त्रियाँ पुरुषों के कार्य्यों में पूरक थी। शराब का भी व्यवहार कभी कभी होता था। जन-मन-रंजन करने के साधन नाच, गाने सरकस आदि थे।

मेगास्थनिज ने समाजिक जातियों का उल्लेख किया है। सच तो यह है कि ये जाति नहीं वल्कि वर्ग थे।

(i) दार्शनिक (ii) किसान (iii) चरवाहे, शिकारी (iv) व्यापारी और कारीगर (v) सैनिक (vi) सरकारी कार्य्यकर्त्ता (vii) मन्त्री (आमात्यादि)।

लोग घरों में ताला नहीं लगाते थे, क्योंकि चोरी नहीं होती थी। लोग झूठ नहीं बोलते थे। न्याय नियम कठिन थे, फलतः समाज मे सुख और शान्ति थी।

---

११ न त्वेवाऽऽर्यस्य दास भावः।

१२ म्लेच्छानाम दोषः प्रजां विक्रेतुमाधातुं वा—कौटिल्य।

आर्थिक दशा

कृषि की दशा उन्नत थी। कृषकों का बहुत आदर था। इनसे जो कर ली जाती थी उसकी सरह भी बहुत कम होती थी। फसल को जंगली जानवरों से बचाने का कार्य्य शिकारियों पर होता था। अतिवृष्टि अनावृष्टि के समय कर मांफ कर दी जाती थी और राजकीय सहायता भी मिलती थी।

सिंचाई के लिए राजा की ओर से नहरों और बांधों का प्रबन्ध किया जाता था। चन्द्रगुप्त ने गिरनार (कठियावार प्रान्त में) में सिचन कार्य्य के लिए एक तालाब निर्माण कराया था।

विदेशी व्यापार भी खूब चलते थे; जिसका प्रमुख बन्दरगाह (port) भड़ौंच था। भारत में यूनानी शराब की खूब मांग थी। बिन्दुसार ने एन्टिओंकस से शराब, अंजीर, और एक दार्शनिक खरीद कर भेज देने को कहा था।

एन्टिओंकस ने जबाब दिया—"मैं आप को यूनानी शराब और अंजीर तो भेज सकता हूं, परन्तु यूनानी नियम के अनुसार यूनानी दार्शनिक नही बेचे जा सकते"।

भारत का व्यापार लंका, स्वर्णद्वीप, जावा सुमात्रा जापान, यूनान से भी होता था।

—:o:—

प्रश्न ११ :- मौर्य्य कालीन कला एवं साहित्य का वर्णन कीजिए।

मौर्य्य कालीन कला को हम निम्न भागों में विभक्त कर सकते हैं।

(i) चित्रकला।

(ii) स्थापत्य कला (भवन निर्माणकला)

(iii) मूर्तिकला।

मौर्य्य-चित्रकला का कोई ठीक उदाहरण हमें नहीं मिलता, परन्तु तात्कालिक साहित्य के अध्ययन से इतना तो अवश्य पता चलता है कि उस समय चित्रकला की भी अवस्था अच्छी थी। "राजा की तरफ से खास तौर पर तैयार किये गये मकानों अखाड़ों में नाटक, कुश्ती और आदमियों और पशुओं की प्रतियोगिताओं का, और दूसरे तमाशे और विचित्र चीजों की तस्वीरें को दिखाने का इन्तजाम है ......"[१३]

स्थापत्यकला को भी हम निम्न लिखित भेदों में बांट सकते हैं :—

(i) प्रासाद निर्माणकला (ii) गुफा निर्माण कला।
(iii) स्तंभ एवं शिलालेख निर्माण कला।

(i) प्रासाद, का हमें कोई उन्नत उदाहरण

१३ कौंब्रिज हिस्ट्री आफ इन्डिया (जिल्द १, पृ० ४८०) में एफ डब्लु० टामस उद्धृत हि० की क०=पं० नेहरु, अनु०, टन्डन

आज प्राप्त नहीं होता है। गंगा के तट पर सुगांग[१४] प्रासाद नामक राज्य प्रासाद था जिसका उल्लेख मुद्राराक्षस में आता है। मेगास्थनिज पालिब्रोथ (पटना) का वर्णन करते हुये लिखता है कि यह शहर गंगा और सोन के मिलन स्थल पर था। यह नगर ८० स्टेडिया (९ मील ३४० गज) लम्बा और १५ स्टेडिया (१ मील ११४८ गज २ फीट ३ इन्च) चौड़ा था। यह लकड़ी के किले से घिरा था, जिस में तीर चलाने के लिये स्थान बने हुये थे। इस दीवाल में ५७० बुर्ज और ६४ फाटकें थी और चारो ओर खाई थी।

चीनी यात्री फाहियान (Fa Hian) जो पाँचमी शदी के शुरु में भारत आया था मौयकालीन प्रासादों को देखकर चकित, और मुग्ध हो गया[१५]। वह यह न समझ सका कि देव निर्मित हैं या मनुष्य निर्मित। डा० स्यूनर ने लिखा हैं—'ऐसी सुरक्षित हालत में पाई गई हैं (मौर्य प्रासाद) कि विश्वास नहीं होता, इस में लगी हुई शहतीर वैसी ही चिकनी और ठीक हालत में है जैसी कि वह उस दिन रही होगी जब कि वह लगाई गई थी यानी २ हजार साल पहले।"[१५]

---

१४ यह प्रधान राज प्रासाद था। प्रायः राजाओं को इसी प्रासाद में आभिषिक्त किया जाता था।

१५ हिन्दुस्तान की कहानी पृ० १५५ अनु० टन्डन (पं० नेहरू लिखित)

(ii) गुहालेखों की संख्या ३ है, ये भरावल की पहाड़ी में हैं, जिनकी कलात्मकता अपरिमेय है। साँची, जलालाबाद, काफिरिस्तान में भी स्तूप बने थे जिन का यत्र तत्र भग्नावशेष प्राप्त होता है।

(iii अशोक के अभी तक १९ शिलालेख और ११ स्तंभ लेख पाये गये गये हैं। ये स्तंभ एक ही पथ्थल के बनते थे। अशोक का एक लाट ईलाहाबाद फोर्ट में हैं और एक फिरोजशाह के मकबरे पर भी हैं जिसे फिरोज ने अम्बाला से मंगवाया था।

अशोक की घोषनाएं, जो पथ्थल पर खुदी होती थी, को निम्न भागों में बाँटा गया है।

(i) Major rock edicts

(ii) Minor rock edicts.

(iii) Separate rock edicts.

(iv) Major pillar edicts.

(v) Minor pillar edicts.

(vi) Commemoratve Inscription.

(vii) Donative Inscription. 16

---

16 Form Budshist Shrines in India. page 106 Issud by The publication division Ministry of Information and Broadcasting Government of India.March 1951.

(iv) मूर्तिकला को भी अवस्था खूब उन्नत थी। अशोक के लाटों पर सिंहमूर्ति प्रधान है। सारनाथ का सिंहमूर्ति अशोक कालीन मूर्तिकला का सुन्दरतम उदाहरण है।

साहित्य

इस समय में भारतीय आर्यों की दो भाषाएं थी पहली संस्कृत और दूसरी प्राकृत। प्राकृत (पाली) भी संस्कृत की बेटी ही हैं। मौर्य्य काल प्राकृत भाषा का स्वर्ण युग था, यद्यपि संस्कृत साहित्य का भी सर्वांङ्गीन विकाश हुआ। इस समय भारत में प्रमुखतः ब्राह्मी और खरोष्टी लिपियों का ही प्राधान्य था।

ब्राह्मी लिपी बाई ओर से दांई और खरोष्ठी दाहिनी से बाई लीखी जाती थी।[१७]

साहित्य मे चाणक्य का अर्थशास्त्र[१८] प्रमुख ग्रन्थ है। इस की भाषा बहुत ही परिमार्जित और प्रांजल है। यह ग्रन्थ संस्कृत में है। पाली भाषा मे अनेको ग्रन्थ रचित हुए। तृतिय सभा

---

१७ इनमें से ब्राह्मी एकप्रकार से राष्ट्रिय लिपि थी. क्योंकि इसका प्रचार पश्चिमोत्तर प्रदेश को छोड़ कर शेष समस्त भारत में था। ..... पश्चिमोत्तर प्रदेश में खरोष्टी लिपि का प्रचार था..... । यह निश्चित है कि खरोष्ठी लिपि आर्य्य लिपि नहीं है, बल्कि इसका संबंध बिदेशी सेमिटिक अरमइक लिपि से है।" "हिन्दी भाषा ओर लिपि" श्री धीरेन्द्र बर्मा M. A. D. Litt (पेरिस)

१८ नोट में " अर्थ शास्त्र "

के समय त्रिपटिक[१९] संकलित हुआ। मोग्गिलपुत्र तिष्य ने कथा-वत्थु[२०] की रचना की। कहा जाता है कि रामायण और महाभारत के भी कुछ अंश इस युग मे भी रचित हुए परन्तु निश्चय पूर्वक यह नहीं कहा जा सकता है कि कौन सा भाग इस काल मे रचित हुआ था। इस के अलावे अनेकों ग्रन्थों का सुन्दर सम्पादन, भी हुआ।

—:o:—

प्रश्न १२ :–मौर्य्य साम्राज्य के पतन के क्या २ कारण थे ? बताइये।

(i) मौर्य्य सम्राटों ने कभी भो किसी ब्राह्मणों को अपमानित नहीं किया, परन्तु मौर्य्यों का धार्मिक प्रचार (बौद्ध धर्म सम्बन्धी) वैदिक धर्म के विरुद्ध था फलतः अनेक, कट्टर हिन्दू मौर्य्यों के शत्रु बनगये जो इस वंश का नाश चाहते थे।

(ii) अशोक ने लड़ाई लड़ना इसलिये बंद करा दिया, चूंकि उससे नर-हत्या होती थी। थोड़े दिनों के बाद सैनिक युद्ध विद्या में अप्रवीण हो गये और निर्बल हो गये।

(iii) अशोक के बाद आने वाले मौर्य्य सम्राटों के पास न प्रतिभा थी न बल। उन लोगों ने अशोक की नकल की। और बौद्ध धर्म की आड़ में अपनी निर्बलता को छिपाना चाहा, परन्तु ढोंगियों का ढोंग कब तक रह सकता था ?

---

१९ एक बौद्धग्रन्थ,

२० 'कथावस्तु, का पालीरूप।

(iv) अशोक के बाद होने वाले सम्राटों से राज्य कर्मचारी-गण भी प्रसन्न नहीं थे । राज्य षडयन्त्रों का अखाड़ा बन गया था । इन्ही उपर्युक्त कारणों से इस वंश का सूर्य्यास्त हो गया ।

=:o:=

प्रश्न १३ :– कनिष्क कौन था ? उसने बौद्धधर्म प्रचारार्थ क्या-२ प्रयास किए ।

बिम कप्स पुत्र कनिष्क कुषाण वंश का सबसे बड़ा सम्राट हुआ । यह बहुत बड़ा महत्वाकांक्षी था । इसलिये काश्मीर, यारकंद, काशगर, पर अधिकार कर लिया । फिर कनिष्क ने मध्य देश पर आक्रमण किया जिसे जीतकर अपने राज्य में मिला लिया । मध्य देश के ही एक बौद्ध आचार्य्य अश्वघोष को अपना गुरु बनाया और बौद्ध हो गया । उसकी राजधानी पुरुषपुर (पेशावर) बौद्ध आचार्य्यों का प्रधान स्थल बन गया । बौद्ध धर्म के प्रचार के लिये इन्होने चतुर्थ संगीति (सभा) कुन्डलवन (जो श्रीनगर के पास है) में की जिनका प्रधान वसुमित्र थे । यहाँ ५०० आचार्य्य आये । इनलोगों ने बौद्ध ग्रन्थों का संकलन किया और उसको मनन कर उस पर भाष्य तैयार किया । कहते हैं कि ये आचार्य्य प्रधानतः हीनयान सम्प्रदाय के थे । कनिष्क ने बौद्ध धर्म प्रचार के लिये विदेशों में भी प्रचार मन्डल भेजा जैसे तिब्बत, खतोन आदि में ।

इसने करीब ४५ वर्ष तक राज्य किया।

=:०:=

प्रश्न १४ :- गुप्तवंश का संस्थापक कौन था ? उसके विषय में क्या जानते है ?

गुप्त लोग क्षत्रिय थे। (यद्यपि श्रीजायसवाल का कहना है कि वे शूद्र थे।) गुप्तों का आदि राजा श्री गुप्त था,[२१] श्री गुप्त, भारशिव राजाओं द्वारा नियुक्त पाटलिपुत्रमन्डल के प्रधान थे और पीछे ये स्वतंत्र हो गये। श्री गुप्त के मरने पर घटोत्कच गद्दी पर बैठा और इस के मरने के बाद चन्द्रगुप्तप्रथम गद्दीपर बैठा। यथार्थ में गुप्तवंश का स्थापन कर्त्ता इसी को माना जाता है। बास्तव में इसने अपनी शक्ति बढ़ाने के लिये लिच्छवियों की कुमारी कुमरदेवीसे शादी करली। कितने इतिहासज्ञों का विचार है की चन्द्रगुप्त से हारकार लिच्छवियों ने अपनी कुमारी दी। चन्द्रगुप्त ने राज्याभिषेक कर महाराजाधिराज की उपाधि धारण किया इसी समय से इसने एक सम्बतभी चलाया जिसे गुप्तसम्वत कहा जाता है (३२० ई०) चन्द्रगुप्त प्रथम के बाद उसका सुपुत्र समुन्द्रगुप्त गद्दी पर बैठा।

=:०:=

प्रश्न १५ (अ) समुद्रगुप्त कौन था ? उसकी विजयों का वर्णन करो।

(आ) "समुद्रगुप्त बहुत बड़ा नीतिज्ञ था।" ऐसा क्यों कहा जाता है ?

---

२१ कितने इतिहासज्ञों का कहना है कि उसका नाम गुप्त है और 'श्री' आदर सूचक शब्द है।

सम्राट चन्द्रगुप्त प्रथम की मृत्यु के उपरान्त उसका प्रबल पराक्रमी पुत्र समुद्रगुप्त ३३० ई० में गद्दी पर बैठा। यह बहुत योग्य एवं लोकप्रिय था। यही कारण था कि चन्द्रगुप्त ने अपने अन्य पुत्रों को गद्दी न प्रदान कर इसे ही गद्दी दी थी।

वह सर्वशास्त्र का ज्ञाता एवं अप्रतिम प्रतिभा सम्पन्न था। हरिशेन (जो परराष्ट्रसचिव, सन्धि विग्रहिक था) ने उसे कविराज कहा है। जिस प्रकार साहित्य के सर्वाङ्ग का ज्ञाता ही आचार्य कहलाता है, उसी तरह काव्य-शास्त्र-ज्ञाता ही यह उपाधि पाता है।.....'इसने अपने लेखों पर भी संस्कृत में श्लोकबद्ध लेख खुदवाये।[२२]

हरिशेन ने इसे 'शास्त्रतत्त्वभर्त्ता' कहकर संबोधित किया है। संगीतशास्त्र में वह पारंगत था और उसे इस विद्या से बहुत ही प्रेम था। इसका लक्षण यह है कि उसके सिक्कों पर वीणावादक के रूप में उसका चित्र चित्रित है। उसमें महत्वाकांक्षा कूट कूट कर भरी हुई थी। उसका मानस जितना प्रबल था शक्ति संम्पन्न भी उसी तरह था।

उसकी दान प्रियता जगत प्रसिद्ध है। कहते हैं कि "उसने अश्वमेध यज्ञ के अन्त में दानार्थ सोने के सिक्के भी ढलवाये थे।[२३]

---

२२ एलन— गुप्त क्वान्स। पृ० २५। बनर्जी प्राचीन मुद्रा उद्धृत गुप्त साम्राज्य का इतिहास I पृ० ५० उपाध्याय।

२३ गु० सा० का इतिहास—डा० उपाध्याय।

उसने सैकड़ों युद्ध किए जिनमें इसके कृपाण के आगे शत्रुओं के राज्य मुकुट टूट गए।

समुद्रगुप्त ने बहुत से राज्यों को विजित किया। इसकी प्रवृत्ति पूर्णतः साम्राज्यवादी थी। इसकी विजयों को हम निम्न भागों में बाँट सकते हैं।

(i) उत्तर भारत विजय।

(ii) दक्षिण भारत विजय।

(iii) विदेशी राज्य विजय।

(iv) गणराज्य विजय।

(v) सीमाराज्य विजय।

I सबसे पहले समुद्रगुप्त ने उत्तर भारत को विजित किया। इन राज्यों को उन्मूलन कर दिया गया। इनकी संख्या ९ थी।

(i) रुद्रदेव (ii) चन्द्रवर्मन (iii) नागदत्त (iv) नागसेन (v) अच्युत (देव ?) (vi) नन्दि (vii) मातलि (viii) गणपति (ix) बलवर्मन।

II उत्तर भारत के राजाओं को पराजित कर समुद्रगुप्त दक्षिण भारत की ओर चला। दक्षिण में १२ राज्यों से इसकी लड़ाई हुई, जिनमें अतिप्रबल कैरल का मण्टराज और काँची का विष्णुगोप था। दक्षिण के बारह राज्य ये हैं:—

	राज्य	शासक के नाम
१	कोशल	महेन्द्र
२	महाकान्तर	व्याघ्रराज
३	कैरल	मण्टराज
४	पिष्टपुर	महेन्द्रगिरि
५	कोट्टूर	स्वामिदत्त
६	एरण्ड	पल्लक (दमन)
७	कांची	विष्णुगोप
८	अविमुक्तक	नीलराज
९	वेंगेय	हास्तिवर्मन
१०	पालक्क	उग्रसेन
११	देवराष्ट्र	कुवेर
१२	कुथलपुर	धनंजय

III विदेशी राज्यों के नाम थे हैं:—

(i) देवपुत्र शाहिशाहानुशहि (कुषाण) (ii) शक (iii) मुरण्ड (iv) सिंहल (लंका) (v) मलक्का (vi) अण्डमन (vii) निकोबावार आदि।

IV समुद्रगुप्त प्रजातंत्रों का हन्तक था। निम्नलिखित गणराज्यों को पराजित किया।

(i) मालव (ii) आर्जुनायन (iii) यौधेय (iv) मद्रक (v) अभीर (vi) प्रार्जुन (vii) सनकानीक (viii) काक (ix) खर्परिक।

V सीमांत राज्यों में ये राज्य थे। जिसे समुद्र ने पराजित किया था। (i) समतट (ii) डवाक (iii) कामरुप (iv) नेपाल।

अपनी सार्वभौम प्रभुता का परिचय देकर समुद्र ने अश्वमेध यज्ञ किया ।

समुद्रगुप्त बहुत बड़ा राजनीतिज्ञ प्रतीत होता है। इसने साम, दाम, दण्ड, भेद, निग्रह, अनुग्रह के द्वारा राजनीति संचालन किया। उत्तरापथ के राजाओं केसाथ उसने कटु व्यवहार किया और उनकी लक्ष्मी एवं भूमि का हरण किया। दक्षिणापथ के राजाओं को उसने राज्य लौटा दिया और मित्रता करली। क्योंकि वह समझता था कि पाटलिपुत्र से इतने दूरस्थ राज्य को संचालित करना टेढ़ी खीर है। सीमान्त राजाओं के साथ उदारता दिखलाये।

वह (समुद्रगुप्त) चाहता था कि ये सीमान्त राजे बने रहे। क्योंकि वह समझता था कि कोई भी विदेशी हमले का प्रथम धक्के इन्हें ही सहना पड़ेगा। इससे सिद्ध होता है कि वह बहुत बड़ा कूटनीतिज्ञ भी था।

प्रश्न १६ समुद्रगुप्त की तुलना नेपोलियन से करना कहाँ तक उपर्युक्त है ?

नेपोलिन [२४] के साथ समुद्रगुप्त की तुलना की गई है (जैसे- ड० स्मिथ) [२५] और कितने इतिहास विज्ञों ने समुद्रगुप्त को नेपोलियन से उपमा दी है। यह नियम है कि तुलना साम्य में

---

२४ यह कोर्सका टापू के गरीब गृहस्थ का पुत्र था। फ्रान्स की क्रान्ति के बीच इसकी उन्नति हुई थी।

२५ अरली हिस्ट्री आफ इन्डिया ।

होती है और उपमा उत्कर्ष में। —इसी उपर्युक्त कसौटी पर कसने के बाद हम बता सकेंगे कि समुद्रगुप्त के साथ नेपोलियन की उपमा या तुलना करना कहाँ तक युक्तिसंगत है।

तुलना तो तुल्य में ही होती है न? माना कि नेपोलियन वीर और महत्वाकांक्षी था। एक गरीब होकर भी अपने अविरल प्रयत्न एवं अप्रतिम प्रतिभा के बल पर फ्रान्स का (Consul) कान्सल बना (१७९९ ई०) फिर सम्राट भी (१८०४ ई०)। उसके हृदय में विजय की लालसा थी कि वह विश्व विजयी बनना चाहता था। उसकी अन्तःपटी में जगत विजेता बनने की प्रभिलाभिलाषा थी और इस कथन में भी कोई अतिशयोक्ति व्याप्त नही है कि वह एक महान सेनापति था। इतना होते हुए भी, उसमें आत्मिक ज्योति का अभाव था। वह कला प्रेमी नही था जिसमें काल एवं परिस्थिति भी भागी हैं। शास्त्र-तत्त्व-चिंतन का न उसे अवकाश ही था न इच्छा ही। अपने सम्राटत्व की महत्ता के आगे सम्पूर्ण संसार को वह नत समझता था। संसार में वह अपने को अजेय समझता था और अन्यों को हेय। एक शब्द में यदि कहूं तो वह या तो प्रमादी था या घमण्डी।

और यह उसका प्रमाद उसके पतन का महत्कारण हुआ। उस अजेय शक्ति का पराजय १८१२ ई० के बाद शुरु हो गया। क्रमशः रुस में (१८१२ ई०) लिपजिग में (१८१३ इ०) वाटरलू (१८१५ ई०) उसमें राजनीतिज्ञता की पूर्णतया कमी थी। उसका अंत Tragdy हैं।

समुन्द्रगुप्त—वीर, महत्वाकाँक्षी, था और इसमें भी विश्व विजयी बनने की अभिलाषा थी। " वह छोटे राज्य का राज्य-कुमार होकर पैदा हुआ तथा एक दिन सम्राट होकर मरा।"[२६]

समुन्द्रगुप्त युद्ध विद्या विशारद एवं अप्रतिम प्रतिभा सम्पन्न सेनापति था। वह कोरा सेनापति ही नहीं बल्कि एक दूरदर्शी राजनीतज्ञ भी था, जिसमें कूट नीतिज्ञता भी थी। यही कारण हुआ कि उसकी विजय पताका कभी झुकी नहीं। उत्तरापथ से लेकर दक्षिणापथ तक, प्राची से लेकर उदीची तक, के प्रत्येक देशी विदेशी राज्यों को नत मस्तक करता हुआ स्वयं उन्नत मस्तक रहा।

इसकी कला प्रियता, तो विश्वविख्यात है। जो रणनीति-विज्ञ होता हुआ भी काव्य में कविराज हो, सम्राट होते हुये भी दीन प्रतिपालक हो, शक्तिशाली होते हुये भी न्यायी हो, निरंकुश होते हुये भी ज्ञानी हो, युद्ध शिविर के वासी होने पर भी जो संगीत वाद्य रूपी मन्डल का प्रबल स्तंभ हो—उसको कैसे नेपोलियन से समता की जा सकती है।

यही कारण है भारतीय संस्कृतिक के कई प्रतिनिधियों ने नेपोलियन से समुन्द्रगुप्त की तुलना अयोग्य समझा है।[२७]

जहाँ तक यह प्रश्न है कि समुद्रगुप्त को नेपोलियन से उपमा

---

२६ गु० सा० का० इति० उपाध्याय पृष्ट. ५४

२७ ,, ,,

दी जा सकती है या नही —विचारनीय है। सामान्य वस्तु को विशिष्ट वस्तु से समता ही उपमा है। उपर्युक्त कथन में नेपोलियन उपमान है और समुन्द्रगुप्त उपमेय। यह ज्ञातव्य है कि उपमेय सदा निम्नगुण प्रधान होता है तो कहने का तात्पर्य्य यह हुआ कि इस उपमा के आधार पर समुद्र का स्थान नेपोलियन से नीचा होगा। जो किसी भी तरह विज्ञ-न्याय-संगत नहीं माना जा सकता है। हाँ, नेपोलियन को समुन्द्रगुप्त से उपमा दी जा सकती है।

प्रश्न १७ चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने 'शकारि' की पदवी क्यों ली ? उसके बारे में क्या जानते हैं ?

समुद्रगुप्त के बाद शकों का प्राबल्य भारत के पश्चिमी भाग में बहुत बढ़ गया था। चन्द्रगुप्त में पिता के समान प्रतिभा और वीरता थी और राजनीतिज्ञता भी।

उसकी राजन तिज्ञता को हम उसके विवाह सम्बंध में पाते हैं। इसने अपनी शादी दक्षिण के प्रबल राज्य नागवंशीय कन्या कुवेरनागा के साथ करली। कुवेरनागा को प्रभावती गुप्ता नामक लड़की हुई, जिसकी शादी चन्द्रगुप्त ने वकाटक राजा रुद्रसेन के साथ करदी। इस तरह से उसने अपनी राजनीतिक शक्ति बहुत ही बढ़ाली।

चन्द्रगुप्त द्वितीय ने शकों को छील छाल कर भारत भूमि से बाहर कर दिया। ये शक, पहले कुषाणों के क्षत्रप (सुबेदार) थे और पीछे स्वतंत्र हो गए। शकों में नाहपान, चष्टन, रुद्रदमन

बहुत प्रबल राजा हुआ।

चन्द्रगुप्त द्वितीय एवं शकों में प्रबल लड़ाई ३९० ई० के करीब हुई। चन्द्रगुप्त द्वितीय की सेना का सेनापति वीरसेन था। घमासान युद्ध के बाद शकों को इसने पराजित किया।

पाटलिपुत्र अब साम्राज्य के केन्द्र स्थान में न रहा, इसलिए इसने उज्जैन (जो साम्राज्य के केन्द्र में पाता था) को राजधानी बनाई।

चन्द्रगुप्त ने बैक्ट्रिया तक अपने साम्राज्य को बढ़ाया। दक्षिण भारत के राज्यों से मैत्री संबन्ध बनाये रखा।

राज्यों को पराजित कर अपनी प्रभुता की सूचना देते हुए चन्द्रगुप्त ने अश्वमेध यज्ञ किया। वह 'वैष्णवधर्म' को मानने वाला था। वह 'परम भागवत' 'भट्टारक' आदि पदवी से भूषित था। उसमें धार्मिक कट्टरता तनिक भी नहीं थी। सभी धर्मों से उसे प्रेम था। उसका सेनापति शैव था। अनेक बौद्ध विद्वान ऊँचे २ पद पर थे।

यह बहुत बड़ा विद्याप्रेमी व्यक्ति था। इसका दर्बार कलाकारों कवियों से भरा हुआ रहता था। इसने 'विक्रमादित्य' की उपाधि ली थी। ई० पू० ५६ या ५७ में उज्जयनी में कोई सम्राट हुआ था, उसने भी यही पदवी धारण की थी। उसने शकों को पराजित किया था और विक्रम संवत चलाई थी। चन्द्रगुप्त ने भी शकों को परास्त कर "विक्रमादित्य और शकारि की पदवी धारण की।"

इसके दरबार में ये नवरत्न थे। नवरत्न के नाम ये दिये जाते हैं:—

(i) धन्वन्तरि (ii) क्षपणनक (iii) शंकु (iv) वैतालभट्ट (v) अमर सिंह (vi) घटखप्पर (vii) कालिदास (viii) वररुचि (ix) वराहमिहिर। परन्तु इन नवों विद्वानों का एक समय होना असंभव है। इन लोगों के ग्रन्थों से भी प्रमाणित होता है कि ये एक काल के नहीं थे हाँ, इतना तो अवश्य है कि कालिदास और वराहमिहिर चन्द्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' के दरबार में ही थे।

प्रश्न १८ गुप्तकाल को स्वर्णयुग क्यों कहा जाता है?

गुप्तकाल को स्वर्ण युग (Golden age) कहा जाता है। कहा भी क्यों न जाय? जिस काल में समुद्र सा प्रबल पराक्रमी सम्राट हो, जिसके उदीयमान शक्ति सूर्य्य को पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिन के राजे प्रणाम करें। विक्रमादित्य ने शकों को परास्त कर सचमुच विक्रम का रूप लिया था। जिस स्कंदगुप्त ने गुप्तों की विचलित कुल लक्ष्मी को स्तंभन (रोका) किया एवं जिसके साम्राज्य में शान्ति और सुख स्रोत बहती थी, उसके काल के यदि स्वर्णयुग न कहा जाय तो कहा क्या जाय? शासन उच्चता और साम्राज्य शान्ति के वर्णन करते हुये कालिदास ने लिखा है यस्मिन् महीं शासति वर्णिनीनां निन्द्रा विहाराधिपये गतानाम्। वतोऽपि नास्तंसयशुकानि को लम्बयेदाहरणाय हस्तम्॥[२८]

गुप्तों की प्रवृत्ति साम्राज्यवादी थी। एक महान एकराट के

---

२८ जिसके शासन काल में विहार के लिए जाती हुई मुग्धा ललना यदि वटवृक्ष तले भी शयन करे तो क्या मजाल कि वायु उससे स्पर्श करे, फिर मानव कर की क्या विशात।

छत्रछाया के अन्तर जब अनेकों छत्र (राजा) पलते हैं तो साम्राज्य कहा जाता है। गुप्तों ने सबल साम्राज्य को स्थापित कर एवं समुन्द्र, विक्रम कुमार, स्कंद, ने अश्वमेध यज्ञ कर भारत की प्राचीन गौरव गरिमा को पुनः प्रतिष्ठापित किया।

गुप्तों की महत्ता इससे भी स्पष्ट है कि इस साम्राज्य के छिन्न भिन्न हो जाने पर कोई भी ऐसा सम्राट नहीं हुआ जो सम्पूर्ण आर्यावर्त को एक छत्र के अधीन ला सके।

गुप्तों को यदि भारतीय संस्कृत (Cultur) का प्रतिनिधि कहें तो कुछ भी अतिशयोक्ति नहीं होगी। संस्कृत भाषा राज्य भाषा के पद पर आसीन थी। साहित्य की उन्नति जितनी इस काल में हुई उतनी उन्नति (Rennaissance)[२९] रिनासेन्स के समय

२९ (Rennaissanes)--Adams. (अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में Civilization During the Middle Ages. में) ने कहा कि मध्यमयुग (Middle age) में बौद्धिक न्यूनता यूरोप में व्याप्त थीं। इसी न्यूनता को हटाने के लिए, कला, साहित्य, विज्ञान, की उन्नति हुई (१४ वीं से १६ वीं शदी)— उसे ही पुनर्जागरण कहा जाता है। इस काल में चित्रकार माइकेलएंगलो लिनार्डो दविन्ची, राफैल प्रसिद्ध हुआ। भाषा विज्ञान में पेट्रार्क, साहित्यकर मौन्ते, नाटककार शेक्सपीयर, कल्पनिक सर टामसमूर, राजनीतिज्ञ फ्रांसिस वेकन एवं मेकियावेली, भौगोलिक कौपरनिकस, गणितज्ञ केपलर, वैज्ञानिक गेलोलियो भौगोलिक अन्वेषक वार्थलम्यू, डि-आज (Cape of good hope) को पता लगाने वाला, वास्को डे गामा (हिन्दुस्तान को पता लगाने वाला) कोलम्बस अमेरिका को पता लगाने वाला—(यद्यपि यह असत्य है।)— इसी युग में हुआ।

पाश्चात्य साहित्य की भी नहीं हुई थी। कालिदास की काकली मयी कमनीय (बहुत सुन्दर) कविता एवं शकुन्तला तो विश्व साहित्य का गौरव स्वरुप ही है। प्रशस्तिकारों की कलात्मकता का जो उच्च स्वरुप हमे शिलालेखों पर मिलता है वैसी कलाकारिता (Iliad and odayssey)[३०] इलिड और ओडीसी में कहाँ? विशाखदत्त रचित मुद्राराक्षस नाटक में राजनीतिज्ञता तो उच्चता को प्राप्त कर गई है। इसमें कहीं भी स्त्री पात्र नहीं है (केवल विषकन्या को छोड़कर) और जिसमें शृङ्गार रस नहीं पिल सका! भागवत, विष्णु आदि पुराणों की रचना एवं धार्मिक ग्रन्थों का अन्तिम सम्पादन भी इसी काल में हुआ। किरातार्जुनीयम् की रचना कर भारवि ने इस काल की महत्ता को और बढ़ाई, तो सांख्यकारिका की रचना कर ईश्वर कृष्ण ने सांख्यदर्शन को प्रगति पथ पर चढ़ाया।

---

३० इलियड और ओडेसी प्रसिद्ध यूनानी महाकाव्य है। यह पाश्चात्य जगत (Occidental world) का प्राचीनतम महान ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ का प्रणेता होमर (९ वी शदी ई० पू०) था। उपर्युक्त ग्रन्थों की तुलना रामायण और महाभारत से की जाती है। महाभारत और रामायण इलियड और ओडेसी से पुराचीन ग्रन्थ हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि होमर ने कभी रामायण और महाभारत जरूर पढ़ा होगा। इलियड= (कथावस्तु) ललित ललना हेलन को पेरिस के द्वारा ट्राय में ले जाना, यूनानी सरदारों को ट्राय पर चढ़ाई। ओडेसी=यूलीसज का यात्राश्रमण (Travelling) है।

वैष्णव धर्म राज्यधर्म था, परन्तु गुप्तों ने कभी भी धार्मिक कट्टरता नहीं दिखलाई। गुप्तकाल में सभी धर्मों की प्रगति हुई। गुप्तों ने कई शिव मंदिर निर्मित करवाये और अनेक बौद्धों और जैनों को राज्याश्रय प्रदान किया।

वृहत्तर भारत का जितना विस्तृत रूप हमें गुप्तकाल में मिलता है, उतना विस्तृत रूप किसी भी काल में नहीं। रोम, मेडागास्कर, सुमात्रा, जापान आदि सभ्य देशों से व्यापार चलता था। देश में वैभव की सरिता प्रवाहित थी।

गुप्तकालीन कला की तुलना करते हुए कई अङ्गरेज विद्वों ने कहा है कि साइना (Siena) जो इटली में है, कला की भूमि पर वही महत्ता है जो महत्ता अजन्ता को प्राप्त है। निश्चय ही यह The high water mark of Indian painting. है। वाघ कलात्मकता पर प्रत्येक प्राच्य और पाश्चात्य विद्व मुग्ध है। वास्तव में Gupta School of art. कलाकारिता की क्षितिज को प्राप्त किये हुए थे।

भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित विज्ञान इसी काल में खूब फला फूला। अङ्कगणित, रेखागणित, शरीर शास्त्र, बीज गणित के भी अनेक आचार्य्य इस युग में हुए।

कहने का तात्पर्य्य यह है कि इस काल में भारतवर्ष की उन्नति प्रत्येक क्षेत्र में हुई, इसीलिये इस काल को स्वर्णयुग (Golden age) कहा जाता है। मौर्यों की प्रवृति राज्यतंत्री (यद्यपि उन्हें किसी अंश में साम्राज्यवादी भी कहा जा सकता

है) थी और गुप्तों की प्रवृत्ति साम्राज्यवादी, फिर भी गुप्तकाल को अमिश्रित आदर्श (Unmixed good) नहीं कहा जा सकता। सामाजिक दशा में छूत छात का रोग था, जो किसी तरह आदर्श नहीं कहा जा सकता।

प्रश्न १६. गुप्त कालीन शासन प्रणाली पर संक्षेप में प्रकाश डालिये।

गुप्तों का शासन साम्राज्यवादी राजतंत्र था। सम्राट सभी शक्तियों का समुच्चय समझा जाता था। साम्राज्य का महा सेनापति तथा प्रधान न्यायाधीश वही था।

सम्पूर्ण साम्राज्य का शासन ४ भागों में बटा हुआ था (i) केन्द्रीय शासन (ii) प्रान्तीय शासन (iii) विषय शासन (iv) ग्राम शासन. केन्द्रीय शासन का प्रधान राजा (सम्राट) होता था और आमात्यों (मन्त्रियों) की सहायता से शासन संचालन करता था। मन्त्रियों की यह समिति केवल परामर्शदात्री ही थी। एक मन्त्री एक से अधिक पद पर भी रहता था। हरिशेन[३१] पद पर था। सम्राट स्वयं शासन के प्रत्येक प्रमुख विभाग का जांच किया करता था।

भिन्न भिन्न राज्यों में दूत भी भेजा जाता था। चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य ने कालिदास को कुन्तल नरेश के पास निज दूत बनाकर भेजा।[३२]

---

३१ हरिशेण समुद्रगुप्त के समय में परराष्ट्रसचिव और सन्धि विग्रहिक के पद पर था। इसने समुद्रगुप्त का गुणवर्णन एवं युद्ध विजय को बहुत ही ललित भाषा में प्रशस्ति लिखा है। यह प्रशस्ति अभी भी इलाहाबाद दुर्ग (Fort) में है।

३२ देखें नोट में 'कालिदास।'

गुप्तों के पास एक प्रबल सेना थी। सेना का प्रधान 'प्रधान-सेनापति" कहलाता था। रणभण्डगारिक नामक एक सैनिक विभाग था।

राज्य में कई प्रकार के न्यायालय थे परन्तु प्रमुख न्यायालय राज्यसभा होती थी। सम्राट-कृत न्याय अन्तिम निर्णय समझा जाता था।

साम्राज्य में पुलिस का सुन्दर इन्तजाम था: यही कारण है कि फाहियान [३३] ने लिखा है कि उसकी यात्रा में उसे कहीं चोर, डकैत से भेंट नहीं हुई।

प्रान्तीय शासन—सम्राज्य कई प्रान्तों या मुक्तियों में बटा था, ये प्रान्तीय शासक सम्राट के द्वारा चुने जाते थे। इन्हें भी शासन कार्य्य में मदद देने के लिये एक मन्त्रिमण्डल होता था।

विषय शासन—[३४] प्रान्त कई विषयों में विभक्त थे, जिसके शासक विषयपति होते थे, जो प्रान्तीय शासक द्वारा नियुक्त होते थे।

ग्राम्य शासन—ग्राम का मुखिया ग्रामपति कहलाता था, जो पंचायत के द्वारा ग्राम में शान्ति बनाये रहता था।

प्रश्न २०—गुप्तकालीन आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं साहित्यिक स्वरूप का वर्णन कीजिये।

आर्थिक दशा—भारत सदा से कृषिप्रधान देश रहा है। गुप्तों

---

३३ देखें नोट में 'फाहियान।'

३४ विषय आजकल के जिला (District) के समान होता था।

के काल में भी प्रायः ९० प्रतिशत लोग कृषिकार्य्य ही करते थे। सिचाई के लिये नहर खोदी जाती। पोखड़े बनवाए जाते थे। सम्राट कृषिकार्य्य में बहुत मदद देता था।

व्यापार की भी बहुत उन्नति थी। प्रधान मण्डियों में पाटलिपुत्र, उज्जयनी, दशपुर और बन्दरगाहों में प्रमुख भड़ौंच था। व्यापार के लिये बड़े बड़े सड़कों का निर्माण किया जाता था। व्यापार, स्थल और जल—उभय मार्ग—से होते थे। उस समय बड़े बड़े जलयान बनते थे। डा० कुमारस्वामी के अनुसार वह युग पोत कला का स्वर्णिम युग था। गुप्तों का व्यापार चीन, अरब, फारस, रोम, मिश्र और मेडागास्कर तक होता था। जावा, कम्बोडिया, बोर्नियो, सुमात्रा, स्याम में भी भारतीय वस्तुओं की खपत थी। भारत का आयात घोड़ा, सोना, मुंगा, एवं निर्यात, मिर्च, रेशम, हाथीदाँत, हीरा, मसाला मोती था।

लौह व्यापार उन्नत था। मेहरौली का लौह स्तंभ इस उच्चता का प्रमाण है। साधारणतया देश सुखी और धन धान्य से पूर्ण था।

सामाजिक दशा—समाज प्रमुखतः ४ वर्गों में विभक्त था—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।

ब्राह्मणों का समाज में पूर्ण आदर था और वे लोग गुरु कहलाते थे। ब्राह्मणों पर "कर" नहीं लगाया जाता था। हत्यारे होने पर भी इन्हें मृत्युदण्ड नहीं दिया जाता था परन्तु देश या राज्य से निर्वासन दिया जाता था।

ब्राह्मणों के बाद समाज में क्षत्रियों का प्रमुख स्थान था। वे रक्षक वर्ग कहलाते थे। वैश्यों का कर्त्तव्य व्यापार करना था। इनका यह भी कर्त्तव्य था कि जगह जगह अस्पताल, विद्यालय, सराय खुलवाये। शूद्रों का कर्त्तव्य सेवा करना था। परन्तु उपर्युक्त वर्ण विभाजन के कार्यों में कहीं कहीं अपवाद भी मिलता है।

विवाह किसी भी वर्ण के साथ किया जा सकता था, परन्तु शूद्र के साथ नहीं। शूद्र पत्नी एवं ब्राह्मण से उत्पन्न पुत्र को चाण्डाल कहा गया है। फाहियान ने लिखा है कि जब चाण्डाल (Chen-chhalo) नगर में प्रवेश करते 'काष्ठध्वनि' (लकड़ी बजाना) करते चलते थे, जिससे लोगों को यह सूचित हो जाय कि ये चण्डाल हैं और उससे अलग होकर चलें। समाज में चण्डाल वर्ग का स्थान बहुत ही निम्न था।

धार्मिक अवस्था गुप्तसम्राटों ने भागवत धर्म को ही अंगीकार किया था, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि उन्होंने कभी अन्य धर्मों के प्रति उपेक्षा पूर्ण भाव दिखलाये। इस काल में जैन, बौद्ध ब्राह्मण धर्मों की खूब उन्नति हुई।

वैष्णव धर्म में विष्णु एवं उनके अनेक अवतारों की, यथा—मत्स्य, कूर्म, बराह, नृसिंह, वामन—पूजा होती थी। उदयगिरि पर्वत पर नागशायी विष्णु की मूर्ति मिली है। शिव, कृष्ण, प्रभाकर की तो पूजा होती ही थी। शक्तिरूप में चण्डिका, माहेश्वरी आदि देवियों की भी पूजा होती थी।

जैनधर्म की भी प्रगति इस काल में खूब हुई। इसी काल में वल्लभी में एक जैन सभा हुई थी, जिसका प्रधान 'गणि' नामक जैनाचार्य्य था। सुप्रसिद्ध बौद्ध दार्शनिक दिगनांग ने 'प्रमानसमुच्चय' की रचना की। बुद्ध की मूर्तियाँ बहुत बड़ी संख्या में बनी। बुद्धमित्र ने बुद्ध मूर्त्ति को स्थापित किया था। साधारणतया धार्मिक कट्टरता का अभाव था।

साहित्यिक दशा:— संस्कृत साहित्य का जो अपूर्व स्रोत (Pre. historical age) प्रागैतिहासिक काल से प्रवाहित होता आ रहा था और जिसका जल मौर्य्यकाल में धूमिल हो गया था एवं जिसका परिष्करण शुंग और कण्व ने किया— गुप्तों के काल में अति प्राञ्जल एवं वृहद्रूप में अवतरित हुआ। साहित्य के प्रत्येक अंगों पर इस समय रचना की गई।

काव्य एवं नाटक में कालिदास का नाम स्मरणीय है। इनकी सुप्रसिद्ध रचना 'अभिज्ञान शकुन्तलम्' पर प्रत्येक देशी और विदेशी विज्ञ मुहयमान हैं। जर्मन महाकवि गोटे ने इसकी भूरि भूरि प्रशंसा की है।

कुमारसंभव और रघुवंश महाकाव्य है। ऋतुसंहार एवं मेघदूत खंडकाव्य है और नाटकों में प्रसिद्ध है अभिज्ञान शकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोवर्शी। प्रयागस्थ प्रशस्ति हरिशेन की कलाकारिता का मापदण्ड है।

वीरसेन, रविशान्ति, मातृगुप्त वार्य, शूद्रक (मृच्छकटिक के प्रणेता) भतृमेण्ठ, विशाखदत्त, जिन्होंने मुद्राराक्षस नामक ७ अङ्कों

का कूटनीतिक नाटक का प्रणयन किया, इसी युग में उत्पन्न हुए थे। भामह एवं अमर सिंह भी इसी युग में हुए थे और इसी काल में पंचतंत्र का संग्रह पूर्ण हुआ।

विन्ध्य एवं ईश्वर कृष्ण ने सांख्य दर्शन में, वात्स्यान, उद्योतकर न्यायदर्शन में, प्रशस्तपाद वैशेषिक दर्शन के प्रमुख आचार्य हुए। ज्योतिष में आर्य्यभट्ट, जिसने 'आर्य्यभट्टीय' नामक ग्रन्थ का प्रणयन किया; और वराहमिहिर जिसने लघुजातक, बृहतजातक, योगमाया, पंचसिद्धान्तिका, विवाहपटल, बृहत्संहित, की रचना की—इसी युग के रत्न थे। इस काल में रसायन और भौतिक विज्ञान की भी खूब प्रगति हुई।

अनेक पुराणों एवं स्मृतिग्रन्थों का प्रणयन और सम्पादन हुआ। यथा—याज्ञवल्क्य पुराण, नारदस्मृति, वृहस्पतिस्मृति।

कला:— इस काल में कला की अभूतपूर्व प्रगति हुई। गुप्तकालीन प्रत्येक सम्राट कला प्रिय थे फलतः सम्राटों के आश्रय में कला का सुन्दर विकाश हुआ।

वास्तुकला की उन्नति सबसे अधिक हुई। प्रासादों का स्वरुप चित्रण हमें अजन्ता की भित्तिचित्र (फ्रेस्कोपेंटिग) पर मिलता हैं। गुप्त सम्राटों ने अनेक कीर्तिस्तंभ बनवाये थे।

गुप्तसम्राट वैष्णव थे। वैष्णव देवों की मूर्त्तियां बनाई जाती थी। सम्राटों की धार्मिक सहिष्णुता के कारण बौद्ध और जैन मूर्त्तियों का भी निर्माण होता था। शेषशायी विष्णु की मूर्त्ति मन-मुग्धकारी है।

गुप्तकालीन चित्रकला उस उच्चता को प्राप्त कर गया था जिस उच्चता को विश्व का कोई school of art प्राप्त नहीं कर सका है। अजन्ता गुप्तकालीन चित्रकला का आदर्श उदाहरण हैं। यद्यपि प्रत्येक अंश गुप्त काल के नहीं है, तथापि इतिहासज्ञों का विचार है कि गुफा १७ और १६ गुप्तकालीन ही है। Grabo-ska ने अजन्ता को the highwater mark of Indian painting कहा है और बाघ की चित्रकारी पर मुग्ध होकर Howel ने इसे the highest achievement of its class बतलाया है। भूमरा, भीतर गांव के मन्दिर भी गुप्तकला के आदर्श उदाहरण है।

प्रश्न २१—हर्षवर्द्धन कौन था ? उसके बारे में क्या जानते हो ?

राज्यवर्द्धन को शाशांक [Karnasuvarna (पूर्वी बंगाल) का राजा] के द्वारा मारे जाने पर हर्षवर्द्धन, थानेश्वर और कन्नौज का अधिपति हो गया (थानेश्वर हर्ष को पितृ-प्रदत्त था। कन्नौज का अधिपति ग्रहवर्मन के, जो हर्ष का बहनोई था, मारे-जाने पर कन्नौज राज्य भी हर्ष के ही अधीन हो गया।) हर्षवर्द्धन ने महाराजा की पदवी नहीं लेकर शीलादित्य (Siladitya) की पदवी ली।

हर्ष बड़ा महत्वाकांक्षी था। उसकी सेना सदा सजी रहती थी। सबसे पहले हर्ष ने उत्तरी भारतवर्ष के बहुत से राजाओं को परास्त किया। वल्लभी, गुजरात, काटियावाड़ के राजाओं को

हर्ष ने परास्त कर अपनी सेना को प्रबल बनाया। उसके पास ६०००० हस्ति सेना और १००००० अश्वारोही सेना थी।

दक्षिण भारत में चालुक्यवंशी पुलकेशिन बहुत प्रबल था। हर्ष, पुलकेशिन के साथ लड़ा, परन्तु उसे परास्त नहीं कर सका। हर्ष की अन्तिम चढ़ाई गंजाम पर हुई (६४३) ई०।

हर्ष का साम्राज्य पूरब में गौड़ (बंगाल) से पश्चिम में सतजल और वल्लभी तक था और उत्तर में कुशीनगर से दक्षिण में नर्मदा तक फैला हुआ था।

हर्षवर्द्धन बहुत बड़ा साहित्य प्रेमी था। वह संस्कृत साहित्य का प्रकाण्ड विद्वान था। उन्होंने प्रियदर्शिका [३५]

---

३५ प्रियदर्शिका:- कलिंगाधिपति ने प्रियदर्शिका नामक सुन्दरी जो दृढ़वर्म्मा नामक राजा की बेटी थी, से विवाह करना चाहा। परन्तु दृढ़वर्म्मा ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और उदयन से प्रियदर्शिका की शादी करनी चाही। दृढ़वर्म्मा और कलिंगाधिपति में युद्ध-दृढ़वर्म्मा का हारना—प्रियदर्शिका का इस गड़बड़ में भुला जाना—अंत में उदयन की पहली रानी वासवदत्ता के पास प्रियदर्शिका का पहुँचना और उसका नाम अरण्यका पड़ना-उदयन का उस पर मुग्ध होना—अंत में एक कंचुकी के द्वारा उदयन और वासवदत्ता को प्रियदर्शिका का परिचय प्राप्त होना-और प्रियदर्शिका के कर को उदयन के द्वारा पकड़ा जाना एवं प्रसन्न होना।

इस नाटक में ४ अंक हैं। करुण और शृंगार रस की प्रधानता है।

नागानंद [३६] एवं रत्नावली [३७] की रचना की।

"कुछ लोगों का मत है कि ये तीनों नाटक स्वयं हर्षदेव के बनाये हुए नहीं हैं, बल्कि उनके राजकवि बाण अथवा किसी और पन्डित के बनाये हुए हैं। पर अनेकों प्रमाणों से यही सिद्ध होता है कि यह मत भ्रमपूर्ण है और ये तीन हर्षदेव की ही रचनाएँ

---

३६ नागानन्दः— विद्याधर राज जीमूतकेतु का सन्यास ग्रहण कराना—पितृभक्त पुत्र जीमूतवाहन का भी उन्हीं के साथ जंगल जाना—जीमूतकेतु के द्वारा जीमूतवाहन को मलय 'पर्वत पर पर्णकुटी बनाने के लिए आज्ञा देना— मलय पर्वत की शोभा से जीमूतवाहन का मुग्ध होना — वहीं पर गौरीमन्दिर से आती हुई गान ध्वनि सुनाई पड़ना। जीमूतवाहन का हृदय चंचल होना—गायिका मलयवती थी जो पतिप्राप्त हेतु देवी आराधना कर रही थी—जीमूतवाहन और मलयवती का विवाह—जीमूतवाहन के द्वारा समुद्र तटी में सर्पास्थि पर्वत देखा जाना—जीमूतवाहन के द्वारा गरुड़ को निज प्राण देकर शंखचूड़ नामक नाग को बचाया जाना—गरुड़ का अनुनय प्रकट करना—उसी स्थल पर जीमूतकेतु एवं मलयवती का आना- अंत में गौरी के द्वारा जीमूतवाहन को पुनः प्राण दान।

३७ रत्नावली:— इस नाटक का कथावस्तु 'स्वप्न वासवदत्ता' (जो महाकवि भासकृत नाटक है) से बहुत कुछ मिलती जुलती है यह नाटक इतनी प्रसिद्ध है कि इसके बारे में कुछ ज्यादे वर्णन करना व्यर्थ है।

हैं" [३८] बाण ने इसी राजा के दर्बार में रहकर कादम्बरी की रचना की थी।

हर्ष, राज्य कार्य्य का संचालन बहुत सुन्दर रूप में करता था। दण्ड विधान कठोर था। हुएनसांग के अनुसार राजा का दिन ३ भागों में विभक्त था। एक भाग में वह शासन कार्य्यों को देखता था और और अन्य २ भागों में वह धार्मिक कार्य्यों को करता था।

हर्ष बहुत बड़ा दानी था। प्रयाग में प्रति वर्ष सभा करता था, जिसमें सम्पूर्ण देश के भिक्षुक-गण उपस्थित होते थे। सम्राट ने एक बार तो निज राज-परिधान भी दान स्वरुप दे दिया था।

हर्ष बौद्ध धर्म को मानने वाला था। अनेक विहारों का उसने निर्माण कराया। बौद्ध भिक्षुकों का वह सबसे बड़ा संरक्षक निकला, परन्तु हर्ष में तनिक भी धार्मिक कट्टरता नहीं थी।

प्रश्न २२—चीनी यात्री कृत भारत वर्णन पर संक्षिप्त प्रकाश डालें।

देखें—नोट में फाहियान हुएनत्सांग एवं इत्सिंग।

प्रश्न २३—राजपूत कौन थे? उनकी उत्पत्ति के विषय में क्या विचार है?

यह बहुत ही विवादास्पद विषय है। अनेकों इतिहासज्ञों के मत अनेक प्रकार के है। कुछ राजपूत अपने को सूर्य्यवंशी और कुछ अपने को चन्द्रवंशी मानते है। चौहान, प्रतिहार अपने को

---

३८ सं० रुपक रत्नावली - पृ० १६६ ले० रामचन्द्र वर्म्मा

अग्निवंशी मानते हैं। इन बातों में कितना अंश सत्य है निश्चत पूर्वक नहीं बतलाया जा सकता। चन्दवरदाई लिखित "पृथ्वी राज रासो" में भी आबू के यज्ञकुन्ड से निकले ४ क्षत्रियवंशों का उल्लेख है। एक अंग्रेज विज्ञ (क्रुट) का कहना है कि राजपूतों की उपत्ति अग्नि कुन्ड से नहीं हुई, बल्कि वे विदेशी थे जिन्हों ने अग्निकुन्ड के समक्ष (या में !) अपने को शुद्ध कियाथा। डा० स्मिथ ने अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक में लिखा है कि ये राजपूत प्राचीन शक, सीथियन हूण, गुर्जर के ही परिवर्तित रुप है।

टॉड का विचार सर्वथा अप्रमाणिक है। वे तो कहते कि राजपूतों की उपत्ति सिथियनों से हीं है। एक विचार यह भी है कि राजपूत "राज्य पुत्र" का अपभ्रंस है। प्राचीन काल में चाहे किसी जाति के राजे हो उन्हें राज्य पुत्र (राजपूत) कहा जाता था।

यह ज्ञातव्य है कि क्षत्रिय लोग हीं राजपूत कहेजाते है। वर्ण विभाजन के समय इन्हें देशरक्षक एवं प्रजा पालन का कार्य्य मिला था जैसा कि साक्षात् ब्रह्म कृष्ण ने कहा---

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यप लायनम्। दान मीश्वरभावश्च क्षात्रा कर्म स्वभावजम् ॥ ४३ ॥

(गीता अध्याय १८)

कहने का तात्पर्य्य यही हुआ कि ये राज्यपूत प्राचीन क्षत्रियों के ही संतान है। हाँ, यह सम्भव है कि राजपूतों में अनेक विदेशी जातियाँ भी मिल गई है।

परन्तु यह ज्ञातव्य है कि संसार की कोई भी जाति यह दावा नहीं करसकती की उन में किसी अन्य देशो का विदेशी जाति का रक्त न हो। ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य, शूद्र एवं अन्य भारतीय या अभारतीय जातियों का परस्पर रक्त कुछ न कुछ अंश में मिला हुआ अवश्य है।

—:o:—

प्रश्न २४:— भारत पर अरबी आक्रमण के बारे में क्या जानते हैं? इस आक्रमण का भारत पर क्या प्रभाव पड़ा?

अरबों ने भारत पर खलीफा उमर के समय से ही आक्रमण करना शुरु किया। पहले तो असफल रहे परन्तु ६४३ई० में सिन्ध राज सहर्षराय को अरबों ने परास्त किया और युद्ध में सहर्षराय मारा गया। पीछे यह राज्य (सिन्धु) 'चच' के अधिकार में आया। अरबलोग सिंन्ध विजय करना चाहते थे। कारण भी एक मिल गया। लंका अधिपति ने एक जहाज को भेट के सामान से भर अरब भेजा। परन्तु लुटेरों के द्वारा यह जहाज सिन्ध में (देवल में) लुट गया। खलीफा ने सिन्धराज चचपुत्र दाहिर को क्षति पूर्ति करने को कहा जिसे दाहिर ने अस्वीकार किया क्योंकि देवल पर उसका अधिकार नहीं था। इस पर रुष्ट होकर अलहज्जाज ने इब्नकासिम के नायकत्व में सिन्ध विजय के लिये एक सेना भेजी मुहम्मद इब्नकासीम सिन्ध आया और दाहिर से लड़ा। २ युद्ध के बाद सिन्ध पर इब्न कासिम ने

कब्जा कर लिया। फिर भी दाहिर का छोटा बेटा अलोराधिपति ने युद्ध किया परन्तु परास्त हुआ।

स्त्रियों ने भी इस युद्ध में भाग लिया था। दाहिर की स्त्री ने अपनी सखियों के साथ खूब युद्ध किया और अंत में सब के सब सती (जोहर) हो गईं।

इब्न कासिम ने दाहिर की दो मुग्धा पुत्री को खलीफा के पास भेजा जिसने इब्न-कासिम से प्रतिशोध लेना चाहा और नमक मिर्च लगा कर खलीफा से कहा कि आप के पास भेजने के पहले मुहम्मद इब्न कासिम ने मेरे साथ रसरंग किया है। इस पर क्रुद्ध होकर खलीफा ने यह हुक्म निकाला कि इब्न कासिम को चर्मपेटी में बंद कर दमिश्क भेजा जाय। ऐसा ही किया गया। जिस में रास्ते में ही कासिम की मृत्यु हो गई।[३९]

३९" आधुनिक ऐतिहासिक अनुसन्धानों ने यह प्रमाणित करने का प्रयत्न किया है कि मुहम्मद इब्न कासिम की मृत्यु का उपर्युक्त विवरण बाद का जोड़ा हुआ है। इस में ऐतिहासिक तथ्य नहीं। असल कारण उसकी मृत्यु का यह बताया जाता है कि ७१५ ई० में खलिफा वलीद मर गया। उसका उत्तराधिकारी खलिफा सुलेमान अलहज्जाज का कट्टर शत्रु था। अतः उसने हाज्जाज तथा उसके सम्बन्धियों मुहम्मद को कड़ी कड़ी सजाएँ

इब्न कासिम ने सिन्ध में उनलोगो को स्वतन्त्रता दी जो इस्लामी हो गए और उन लोगों पर जजिया लगाया जिन्हों ने इस्लाम न माना। हिन्दुओं को भी उच्च पद दिया गया।

यह अरब आक्रमण एक बयार मात्र था भारत पर कोई अमिट छाप इसका न बन पड़ा। खलिफाओं ने भी कुछ दिनों तक इधर ध्यान न दिया। इसका कारण उस समय भारत में बड़े-बड़े हिन्दूराज्य थे, फिर भी आक्रमणकारियों ने भारतीय दर्शन, ज्योतिष आदि का अध्ययन किया जिसका उनपर पूर्ण प्रभाव पड़ा

-:o:-

प्रश्न २५:— मुहम्मद गजनवी कौन था ? किस भावना से प्रभावित होकर उसने भारत पर आक्रमण किया ? इस आक्रमण के क्या २ फल हुए ?

अफगानिस्तान में गजनी नामक एक स्थान है। गजनवी सुबुक्तगीन का लड़का था। वह वही का सुलतान बना। वह बहुत बड़ा प्रतिभाशाली महत्वाकांक्षी एवं नीति विद्या विशारद था। वह संसार के महान सेनापतियों और योद्धाओं में

दी। मुहम्मद इब्नकासिम बरखास्त कर दिया गया और मेसोपोटामियाँ में उसको बुलवाकर नये खलीफा ने उसे मृत्यु दण्ड प्रदान किया।"

--उमापतिराय चन्देल।

(सम्पादकी टिप्पनी :- भा० वर्षा का ईति०-- मुकर्जी)

गिनाजाता है। १००० ई० मे महमूद ने भारत पर आक्रमण किया। सब से प्रसिद्ध चढ़ाई सोमनाथ,[४०] की चढ़ाई है। जो १०२४ में हुई। इसमें महमूद की जीत हुई। इसकी अन्तिम चढ़ाई १०२७ ई० में हुई।

महमूद मूर्ति पूजक नही था। वह मूर्ति पूजकों को, काफिर समझता था। भारत मूर्तिपूजकों का देश है। वह काफिरों को दण्ड देना चाहता था। दूसरी बात यह थी कि भारत वैभव पूर्ण देश था। धन की तृष्णा महमूद के मानस में बहुत था। इन्हीं भावनाओं से प्रभावित होकर इसने भारत पर आक्रमण किया था।

महमूद के आक्रमण से निम्नलिखित प्रभाव हुए :—

(i) देश की आर्थिक क्षति हुई।

(ii) अनेक देवमन्दिर और मूर्त्तियों का विनाश हुआ।

(iii) बहुत से मुसलमान भारत में बसगए।

(iv) भारतीयों की संगठन हीनता ने दिखला दिया कि भारत भीतर से जर्जर हो चला था।

---

४० सोमनाथ का मन्दिर समुद्र तट पर है। इस मन्दिर को धाराधिपति भोज परमार ने बनवाया था। कहते है कि इस मन्दिर के शिवलिंग में हीरे जवाहर भरे थे परन्तु अब यह सत्य नहीं माना जाता है।

प्रश्न २६:— मुहम्मद गोरी कौन था ? भारत पर उसके आक्रमण के क्या प्रभाव पड़े ?

वह गोर प्रदेश के सुलतान अल्लाउद्दीन का भ्रातृ पुत्र था। यह वीर और महत्वाकांक्षी था इसने मुलतान एवं सिन्ध पर आक्रमण कर उसे जीत लिया और भारत की ओर मुड़ा। ११७८ में गोरी ने गुजरात पर आक्रमण किया और कद्रदां गाँव के नजदीक राजा मूलराज से परास्त हुआ। गोरी पंजाब की ओर मुड़ा और खोखरों को को परास्त कर पंजाब जीत लिया।

इस समय भारत वर्ष में प्रमुख २ शक्तियाँ थी एक चौहानों की और द्वितीत कन्नौज की। इनके प्रधान क्रमशः पृथ्वीराज और जयचंद था। गोरी एवं पृथ्वीराज में तराइन की मैदान में लड़ाई हुई जिस में परास्त होकर गोरी भाग गया (११९१)। परन्तु गोरी विमूढ़ न हुआ और उसने १२९२ में पृथ्वीराज पर फिर चढ़ाइ की और पृथ्वीराज को परास्त किया।

कहते हैं कि जयचंद एवं पृथ्वीराज में नहीं पटती थी इसलिए जयचंद ने गोरी को मदद की। उपर्युक्तकथन का आधार चन्दवरदाई रचित "पृथ्वीराज रासो" है जो स्वयं काल्पित भावनाओं से पूर्ण दीखता है इसलिये उपर्युक्त बातों को एकदम सत्य नहीं माना जा सकता।

गोरी निज देश गया और भारत का गवर्नर कुतं

बुद्दीन को बना दिया परन्तु फिर ११९४ में वह लौटा और कन्नौज पर चढ़ाई की; इस युद्ध मे जयचंद परास्त हुआ। गोरी गजनी लौट गया। इसी समय पंजाब मे खोखरो ने विद्रोह किया। गोरी स्वयं आया और इस विद्रोह को दमन किया परन्तु लौटते समय छल से मारा गया।

इसके आक्रमण का भारत पर पूर्ण स्थायी प्रभाव पड़ा। यहाँ गुलामवंश की स्थापना हुई। अनेक धार्मिक केन्द्र नष्ट हुए।

-:o:-

प्रश्न २७:-गुलाम वंश में सब से बड़ा सुलतान कौन हुआ? उसका संक्षिप्त वर्णन करें।

कुतबुद्दीन पुत्र आराम शाह को पदच्युत कर कुतबुद्दीन का गुलाम एवं दामाद अल्तमश १२१० ई० में दिल्ली की गद्दी पर बैठा। यह गुलाम वंश का सबसे बड़ा सुलतान हुआ। प्रारम्भ में इसे अनेक भयंकर विद्रोह दमन करने पड़े।

इस समय में गजनी का सुलतान ताजुद्दिनएल्दोज था। जिसने जबरदस्ती लाहौर पर कब्जा कर लिया। सिन्ध प्रान्त का तत्कालीन शासक नासिरउद्दीनकुबाचा भी लाहौर पर कब्जा करना चाहता था। अन्तर्वेद में 'वर्तु' नामक राजपूत ने विद्रोह कर दिया।

इसी समय में चाँगेज खाँ का आक्रमण सिन्ध में हुआ। चाँगेज भारत पर आक्रमण नहीं करना चाहता था

वह तो खीवा के शाह जलालुद्दीन को कैद करना चाहता था, जो सिन्ध में घुस आया था। जब चांगेज लौटा तो नासिरउद्दीन कबाचा और एलदोज दोनों की शक्ति चांगेज के आक्रमण से टूट चुकी थी। बस, अल्तमस ने एक छोटी सी फौज से ही उन दोनो पर कब्जा कर लिया फिर बंगाली विद्रोहियों को भी परास्त किया। अब अल्तमस ने अन्तर्वेद के तरफ देखा और प्रबल युद्ध के बाद 'बर्तु' को परास्त किया।

अल्तमस ने फिर ग्वालियर पर कब्जा किया और मालवा के परमारों को परास्त किया। फिर उज्जैन जाकर उसने 'महाकाल मन्दिर' को भग्न किया।

लोगों के मन में ऐसी भावना थी कि गुलाम सुलतान तो गुलाम ही है उनकी आज्ञा क्या? —

इसलिए अल्तमस ने बगदाद के खलीफा से यह कहा कि वह उसे दिल्ली की गद्दी का "न्याय पूर्ण उत्तराधिकारी घोषित कर दे।" खलीफा ने ऐसा ही किया जिससे अल्तमस की शक्ति और भी प्रबल होगई।

जहाँ वह प्रबल पराक्रमी और विजेता था वहीं वह एक कला प्रेमी भी था। उसने चाँदी का टंक (सिक्का) बनवाया जो प्रमाणिक कहा जा सकता है।

टंक पर लिखा था।

"सुरिताण स्त समसदिण"[४१]

---

४१ हि० भा० और सा० का इति० = आचार्य चतुर सेन पृ० = २६।

प्रश्न २८: बलबन कौन था? उसके बारे में क्या जानते हो? संक्षेप में लिखो।

१२६६ ई० नासीरुद्दीन मर गया। मरते समय उसने बलबन को, जो उसका गुलाम था, उत्तराधिकारी नियुक्त किया। जब बलबन गद्दी पर बैठा, तब तक वह बूढ़ा हो चला था। परन्तु यह वीर था, इसने अनेकों विद्रोह दमन किए।

इसी समय मेवों ने विद्रोह किया (ये मेव हिन्दू राजपूत थे)। ये मेव बड़े वीर थे। इन लोगों ने तो कई बार शाही फौज के दाँत खट्टे कर दिए। परन्तु अन्त में इन्हें परास्त होना पड़ा। अब बलबन चित्तौर पर चढ़ दौड़ा। वहाँ का राजा समर सिंह वीर, नीतिज्ञ, युद्ध विद्या प्रवीन स्वतंत्रताभिमानी था। बलबन को वहाँ मुह की खानी पड़ी।

इसी समय तुगरिल ने, जो एक प्रदेशका सूबेदार था, विद्रोह कर दिया। जिसपर क्रुद्ध होकर सुलतान ने बड़ी बड़ी शाही फौजें भेजी।

परन्तु दिल्ली की शाही सेना तुगरिल से परास्त हो गई परन्तु अन्तिम बार जब स्वयं सुलतान ही सेना नायक बना तो तुगरिल परास्त हुआ और बंगाल का विद्रोह दबा दिया गया। वहाँ का शासक बुगरा खाँ (बलबन के बेटे) को बनाया गया। (१२८२)

बलबन मंगोलो से बहुत भयभीत रहा करता था जिसका कारण यह था कि मंगोल, वीर और खुंखार होते थे। इन्हें

यदि हूण कहा जाय तो कुछ भी अतिशयोक्ति नहीं होगा। बलबन ने निज पुत्र मुहमद को मंगोलों के प्रवाह को रोकने का भार दिया और मुलतान प्रान्त का शासक बनाया। मंगोलों को रोकने में इसने बहुत सफलता पाई परन्तु अंत में उन्हीं के हाथों मारा गया।

बलबन के उपर्युक्त कार्योंपर दृष्टिपात करने के बाद यह पता चलता है कि वह निरंकुश सुलतान एवं स्वार्थी था। स्वार्थ के लिए वह सब कुछ कर सकता था। वह निर्दय था। "चालीस गुलामों" की हत्या करा उसने अपनी निर्दयता का स्पष्ट परिचय दिया। उसे अजेय नहीं कहा जा सकता है क्योंकि उसे १३०२ ई० में चित्तौराधिपति समर सिंह से परास्त होना पड़ा था।

इतना होते हुए भी वह, वीर था, साहसी था, कूटनीतिज्ञ, एवं युद्ध-विद्या विशारद था।

अमीर खुसरो का वह बहुत बड़ा मित्र था,

—:o:—

प्रश्न २६:— अल्लाउद्दीन कौन था? उसके शासन सम्बन्धी सुधारों का वर्णन कीजिए।

अल्लाउद्दीन दिल्ली सम्राट जलालुद्दीन (१२९०ई०—१२९५ ई०) का भतीजा था और कड़ा (इलाहाबाद के नजदीक का एक स्थान) का सूबेदार था। वह बहुत बड़ा महत्वकांक्षी और वीर था। "वह स्वभाव से क्रूर, छली और अत्याचारी था।"[४२]

४२ शालोपयोगी भारत—सर देशाई।

१२९४ ई० में उसने देवगिरि के अधिपति रामदेव राय और शंकर को छल से हरा कर अपनी कूटनीतिज्ञता का परिचय दिया। चाचा से गले मिलते समय उसकी हत्या कर (१२९५ ई०) दिल्ली की गद्दी पर बैठा।

अलाउद्दीन ने गुजराती चालुक्यों को परास्त कर (१२९७ ई०), रणथम्भोर (१२९९ ई०) चित्तौड़ (१३०३ ई०) एवं मालवा को परास्त किया। दक्षिण विजय का भार उसने अपने गुलाम मलिक काफूर को दिया था जिसने दक्खिन पर ४ बार आक्रमण किया।

अलाउद्दीन के समय में मंगोलों के कई आक्रमण हुए। १२९६ ई० में मंगोलों का प्रथम आक्रमण हुआ, पर वे अलाउद्दीन की सेना के द्वारा भगा दिए गए। १२९९ ई० में अलाउद्दीन ने नौमुसलिमों को कत्ल करवाया। १२९८ ई० और १३०४ ई० में भी मंगोलों के विफल आक्रमण हुए।

अलाउद्दीन ने सुलतान की वैयक्तिक सत्ता को बढ़ाने के लिए खूब प्रयत्न किया। वहबहुतबड़ा राजनीतिज्ञ एवं कूटनीतिज्ञ था। वह किसी का नियंत्रण (अपने ऊपर) नहीं चाहता था। मुल्ला मौलवियों का भी उसके ऊपर प्रभाव नहीं था।

उसकी विजय तलवार की विजय थी, वह जनता को पस्त कर देना चाहता था, और उसके स्वाभिमान एवं अधिकार को

मिट्टीपलीद कर देना चाहता था, मंगोलों के आक्रमणों को विफल कर देना चाहता था और राजकीय खजानों को धन से भरना चाहता था, जिससे उसे युद्ध और शान्ति के समय मदत मिलती। इन उपर्युक्त विचारों को कार्य्यान्वित करने के लिए उसने निम्न लिखित सुधार किये।

(i) अलाउद्दीन ने अपनी सैनिक शक्ति खूब बढ़ाई। सैनिकों को राज खजाने से ही पारिश्रमिक (वेतन) प्रदान किया जाता था।

फलतः सैनिक सरदारों के प्रति प्रेम नहीं रखकर सुलतान के प्रति प्रेम रखते थे।

(ii) घोड़ों पर दाग लगाने की प्रथा शुरु की, जिससे युद्ध के समय अयोग्य घोड़े देकर सरदार, सुलतान को छल न सकें।

(iii) अपने राज्य भर में गुप्तचरों का जाल बिछा दिया। जिससे कहीं भी यदि राज्यविरोधी बातों का प्रचार होता हों, तो उससे सुलतान अवगत हो जाय।

(iv) षडयंत्र से उसे इतना डर होता था कि उसने राजकीय फर्मान द्वारा सभा एवं गोष्ठियों को बन्द करवा दिया था।

(v) जागीरदारी प्रथा का इसने अंत कर दिया और सभी कर्मचारियों को वेतन भोगी बना दिया।

(vi) आर्थिक कन्ट्रोल शुरु कर दिया गया। सुलतान

ही चीजों का मूल्य निर्धारित करता था। राज्य की तरफ से गल्ले की अनेक दूकाने खोली गई। इससे सुलतान को अच्छी आमदनी हुई, जिससे उसने अपनी सेना को संगठित किया।

(vii) हिन्दू राय और राजाओ पर बड़े-बड़े कर लगा दिये गये। दोआब के जमिन्दारों के प्रति तो इसने अन्याय किया। कहते हैं कि उन लोगो की आर्थिक दशा इतनी गिर गई कि नतो वे घोड़े पर चढ़ सकते थे न अच्छे कपड़े पहन सकते थे।

(viii) अल्लाउद्दीन ने स्वयं शराब पीना त्याग दिया और अन्य लोगों को भी पीने नही देता था।

-:o:-

प्रश्न ३०:- मुहम्मद तुगलक की विरोधी भावनाओं का समिश्रण क्यों कहा जाता है ? "वह शासन कार्य्यों में सदा असफल रहा।"—क्यों ?

मुहम्मद बिन तुगलक (१३२५-१३५१ ई०) को इतिहास कारों ने विरोधी भावनाओं का समिश्रण कहा हैं-जो वास्तव में ठीक है। जहाँ वह दिमागी क्षेत्र में सबसे ऊंचा सिद्ध हुआ तो कर्त्तव्य (शासन) के क्षेत्र में उसने सदा असफलता पाई।

वह इतिहास, दर्शन, गणित, एवं काव्य का पारंगत विज्ञ था। पाश्चात्य दर्शन का भी उसे पूर्ण ज्ञान था। जहाँ वह विगर

कर अनेक निर्दोष व्यक्तियो को दण्ड देता था तो कई अभियुक्तों को क्षमा भी करदेता था। जहाँ उसे अपनी शक्ति पर इतना घमण्ड था कि उसने ३७०००० घुड़सवारो को (Khorasan) और १००,००० घोड़ो को हिमाचल प्रदेश में विजय हेतु भेजा और अपने को वीर समझता था; तो वहीं, लड़ाई में तौरमुसरीन खाँ (ToormooshreenKhan) के आगे झुक गया और उपहार देकर उसे अपने देश को लौटा दिया। विद्या विशारद होते हुए भी अमीरों के लम्बी चप्पो की बातों में फस जाता था, और यही कारण था कि उसे शासन कार्य में कभी सफलता नहीं मिली।

(i) राजधानी बदलना साम्राज्य की विशालता के कारण दिल्ली साम्राज्य के मध्य में नहीं पड़ी, और यह ज्ञातव्य है कि केन्द्रिय शक्ति का संचालन मध्य से ही होना चाहिए। साम्राज्य मध्य में देवगढ़ (Deogarh) या देव गिरी पड़ता था। सुलतान ने हुक्म दिया कि दिल्ली के सभी लोग देवगीरी चलें। इब्नबतूता के अनुसार कुछ लोग दिल्ली में भी छिप गये और बहुतों को दौलतबाद (देव-गिरि) जाना पड़ा। रास्ते में धन-जन की बहुत क्षति हुई। सुलतान ने दौलताबाद जाकर फिर दिल्ली लौटने का हुक्म दिया इस मूर्खता पूर्ण योजना से बहुत हानि हुई।

(ii) सुलतान ने चीनी सरकार की नकल कर ताम्बे के सिक्के चलाये। जिसका मूल्य चाँदी के सिक्के के समान होना

था। कोई प्रतिबन्ध नहीं रहने के कारण जो जहाँ चाहते थे, उन सिक्कों को नकल करते थे फलतः व्यापार एवं देश की आर्थिक अवस्था पर बहुत चोट पहुंचती थी। फिर भी तुगलक का रुपया सम्बन्धी यह सुधार अच्छा था। डा० ब्राउन ने तो उसे "प्रिंसआंफमोनिसं" कहा है।

(iii) दोआब पर इतने कड़े 'कर' लगा दिये गये कि लोग भूखों मरने लगे।

(iv) इसी समय अकाल पड़ा, देश की आर्थिक अवस्था और भी रद्दी हो गई।

(v) विजय की जितनी भी योजना इसने बनाई, वे सफल नहीं हुई।

हिमांचल विजय के लिए अपने भगिने Kharsow MaliK को १००,००० घुड़सवारों के साथ भेजा। परन्तु सफलता नहीं मिली।

(vi) साम्राज्य भी छिन्न भिन्न हो गया। दक्षिण भारत में "विजयनगर" और "बहमनी" साम्राज्य की नींव पड़ी।

(vii) इसी समय गुजरात, सिन्ध, बंगाल में भयंकर विद्रोह हुए। इन्हीं उपर्युक्त कारणों से मुहम्मद तुगलक को कभी सफलता नहीं मिली।

=:o:=

प्रश्न ३१:— फिरोज तुगलक कृत शासन का वर्णन करें। और बतलायें कि तुगलक साम्राज्य के पतन में इसका कहाँ तक हाथ है ?

मुहम्मद बिन तुगलक के मरने पर फिरोज तुगलक, जो उसका चचेरा भाई था, १३५१ ई० में गद्दी पर बैठा। वह शान्त, न्यायप्रिय एवं संस्कृत होते हुए भी राजनीति एवं प्रत्युत्पन्नमतित्व हीन था।

फिरोज कट्टर था अपने धर्म का, उसपर मुल्ला मौलवियों का प्रभाव रहता था। फलतः उसके शासन में मौलवियों का ही प्राधान्य रहा करता था।

मुहम्मद बिन तुगलक के शासन काल में जो प्रजा को तबाही हुई थी, धन व्यय हुए थे, उससे प्रजा की हालत बेहालत हो गई थी। इसे सुधारने के लिए उसने प्रजाओं की क्षति पूर्ति कर दी। कृषि कार्य्य के लिए ऋण दिए, लगान कम कर दी गई।

मासिक वेतन बन्द करा कर फिरोज ने जागीरदारी प्रथा शुरु की।

फिरोज ने व्यापार के उत्थान के लिए सड़क और कृषि-उन्नति के लिए नहरें बनवायी उसने फिरोजाबाद, हिसार फिरोजा, जौनपुर इत्यादि नये नगर बसाए।

ब्राह्मणों पर जजिया लगाई गई, जिसकी सरह कुरान के मुताबिक रखी गई। न्याय पद्धति कठोर थी। सुलतान ने

सार्वजनिक रुप से यह घोषणा कर दी थी की जनता (कृषक) सताए न जांय।

उसने गुलामों की एक सेना इकट्ठी की। इन गुलामों में प्रधानतः युद्ध क्षेत्र से लाए गए लोग ही होते थे।

इतना होने पर भी फिरोज तुगलक के कार्य्य ने इस वंश को पतन के पथ पर पहुंचाया।

(i) सुलतान का मौलवियों के प्रभाव मे रहना इससे जनता में, खास कर हिन्दू जनता में, बहुत क्षोभ था क्योंकि हिन्दू पण्डितो एवं विद्वानों को नीचा दिखाने वाले मौलवियों को सुलतान कुछ नहीं दण्ड देता था। इस एक पक्षीय न्याय से जनता असंतुष्ट थी।

(ii) जागीर प्रथा के फलःस्वरुप बड़े-बड़े जागीरदार खूब प्रबल हो गए और स्वामिभक्ति उनके मानस से जाती रही।

(iii) सुलतान ने गुलामों की सेना बनाई जो उन गुलामों की सेना थी जो विजित थे। इन लोगों पर विश्वास करके सुलतान ने अच्छा नहीं किया।

(iv) इसकी धर्मान्धता से हिन्दू बहुत कुपित हुए। इसने " जाजनगर पर आक्रमणकर जगन्नाथ मन्दिर को तोड़ा फिर ज्वालामुखी मन्दिर को नष्ट किया।" अशोक की एक लाट को उसने अपने मकबरे पर रखवाया था। उसके इन कार्य्यों से हिन्दुओं का कुपित होना स्वाभाविक था।

(४) उसकी अराजनीतिज्ञता उसकी चढ़ाईयों से व्यक्त होता है। बिना सोचे समझे उसने बंगाल पर आक्रमण किया जिसका फल पराजय हुआ (१३६०)।

१३५१ ई० में सिन्ध के राजपूतों ने जो अब मुसलमान हो गए थे, विद्रोह किया। फिरोज इस विद्रोह को दबाने तो चला परन्तु बिना सोचे समझे कि हमारा शत्रु कितना बलशाली है और उससे कितनी सेना लेकर लड़ना चाहिए। फलतः उस युद्धमें फिरोज परास्त हुआ। फिर फिरोज ने सिंध पर चढ़ाई की, और उसे जीता तो जरुर परन्तु, मूर्खता की कि फिर उन्ही जाम को सिन्ध का राज्य दे दिया। स्वामिभक्ति हीन इन जामों ने कुछ ही दिनों में अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया।

इस तरह हम देखते हैं कि इस साम्राज्य के अंत होने में फिरोज का भी पूर्ण हाथ था।

प्रश्न ३२:- भारतीय सभ्यता और संस्कृति, एवं इस्लामी सभ्यता और संस्कृति के मेल से क्या क्या परिवर्तित रुप प्रकाश में आए ?

जिस तरह २ रंगों के मेल से तृतीय रंग की उत्पत्ति होती है, उसी तरह दो सभ्यताओं के मेल से सभ्यता बदल जाती है। मुसलमानों की भी अपनी सभ्यता और संस्कृति थी, उनके हृदय में भी कला प्रियता धार्मिकता, सामाजिकता की भावना थी। इस्लामीप्रतिनिधि लोगों के सम्पर्क से, अर्थात इस्लामी सभ्यता के सम्पर्क से भारतीय सभ्यता का बाह्य रूप परिवर्तित हो गया।

(i) धर्म पर प्रभाव।

इस्लाम विजेताओं का धर्म था फलतः उनको राज्य संरक्षण भी प्राप्त था। मुहम्मद साहब ने जिस धार्मिक जोश को मुसलमानों में भरा था वह अभी पूर्ण रूप में था। 'जीवन एवं धर्म के प्रति उनका नवीन दृष्टिकोण था'। इस युग में हिन्दू धर्म (भारतीय धर्म कहना ही अधिक उपयुक्त होगा) की कड़ियाँ शिथिलित होगई थी, फलतः उसमें अब वह प्रवाह नहीं रह गया था, जो प्रवाह पहले था। यही कारण था कि भारतीय धर्म, इस्लामी धर्म को अपने में मिला न सका। हाँ, यदा कदा कुछ उदाहरण अवश्य मिलते हैं—यथा—मुहम्मद गोरी को परास्त कर (पहली बार) बनाये हुए कैदियों को हिन्दू धर्म में मिला लिया गया।

इस्लाम के सम्पर्क से हिन्दू धर्म का प्रवाह द्विमुखी हो गया। कुछ लोगों ने इस्लाम को नीचा बताया। ये कट्टरवादी बनगए।

कुछ लोग, यथा रामानुज एवं रामानंद आदि विज्ञों ने जाति प्रथा को ढोंग बतलाया और सर्वधर्म समन्वय की भावना फैलाई। कबीर ने कहा :—

पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजौं पहार।
ताते वह चक्की भली, पीस खाय संसार॥

कबीर ने इस्लामियों से कहा :—

कंकर पथ्थर जोरि के, मसजिद लई चुनाई।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय ॥

इसी समय में बहुत से सूफी प्रचारक, यथा जलालुदीन रूमी, फरीउद्दीन अत्तार, किस्ती, औलिया, अब्दुल कादिर जिलानी आदि प्रेम मार्गी ज्ञानी आये। ये लोग निर्गुण वादी थे। परन्तु रामानुज, रामानंद, चैतन्य (१४८६-१५३४ ई०) सगुण-वादी थे। इन लोगों ने नीचों को ऊपर उठाना चाहा।

(ii) भाषा पर प्रभाव।

हिन्दू, हिन्दी या संस्कृत भाषा बोलते थे। यही कारण था कि हिन्दुओं की बोली को मुसलमान नहीं समझ पाते थे। इसलिए पारस्परिक सम्पर्क से लस्कर की जबान की उत्पत्ति हुई। यही भाषा पीछे चल कर उर्दू के नाम से प्रसिद्ध हुई।

(iii) साहित्य क्षेत्र में।

मुसलमानों ने अनेक ग्रन्थों का सम्पादन, अनुवादन और प्रणयन किया। मालिकखुसरों खड़ी बोली के आदि कवियों में से हैं। मराठी की उन्नति यूसुफआदिल शाह के दरबार में हुई तो बंगाली साहित्य की उन्नति बंगाली नवाबों के दरबार में। साहित्य क्षेत्र में सब से बड़ा प्रभाव तो यह पड़ा कि मुसलमान साहित्यकारों ने हिन्दू पात्रों को लेकर तो रचना की, परन्तु उसमें प्रधानता सदा मुसलमनी दर्शन को दीदी गई।

(iv) पर्दा प्रथा—मुसलमानों के आगमन के पूर्व पर्दा प्रथा का प्रचलन नहीं था। मुसलमानों के आगमन से इस प्रथा का प्रचलन हुआ। इसके प्रधारणतः २ कारण थे—

(a) शासकों के रिवाजों को अपनाने में अपनी महत्ता समझना।

(b) मुसलमानों से अपनी इज्जत बचाने के लिए।

(v) अनेक हिन्दुओं का मुसलमान बनना—

मुसलमानों के हाथों में ताकत थी। उनलोगों ने हिन्दुओं को डराया और कहा "तुझे इस्लाम स्वीकार करना पड़ेगा।" प्रलोभन दिया "यदि तुम इस्लाम स्वीकार करोगें तो जजिया से तुम मुक्त हो जाओगें तुझे अच्छी-अच्छी नौकरियाँ मिलेगी।" फलतः अनेक हिन्दू मुसलमान बन गये।

(vi) भारतीय कला एवं इस्लामी कला— के मिलने पर कला का रूप बदल गया। उस काल के स्थापत्य कला को देखने से पता चलता है कि इच्छा मुसलमानों की थी और कलाकारिता हिन्दुओं की। मुसलमानों ने अपने साथ कुली कारीगर और कलाकारों को प्रचुर मात्रा में नहीं लाया था, फलतः उन्हें हिन्दू कुली, कारीगर एवं कलाकारों का आश्रय लेना पड़ा।

(vii) बौद्ध केन्द्रों का नाश होना— बिहार और बंगाल उस समय बौद्ध धर्म के केन्द्र थे। मुसलमानों के आक्रमण के कारणः इन केन्द्रों का भी विनाश हो गया। मुहमद बिनबख्तियार की चढ़ाई तो प्रमुख है ही।

(viii) मुसलमानों का भारतीय बनने का प्रयत्न।

मुसलमान भी यहीं बस गये और उनके हृदय में भारतीयों से घुल-मिल जाने की अकाँक्षाएं थीं। बहुत से मुसलमानों ने हिन्दू स्त्रियों से शादी कर ली। फिरोजशाह और गयासुद्दीन तुगलक की मां हिन्दू थी। विजयनगर की कुमारी से गुलबर्गा के सुलतान ने अपनी शादी की थी। मुसलमानों के रक्त में हिन्दू खून मिल गया था। इस्लाम भी भारतीय इस्लाम और मुसलमान भी भारतीय मुसलमान बन गये थे।

प्रश्न३३ तुर्क अफगान कालीन शासन सामाजिक अवस्था एवं आर्थिक अवस्था का वर्णन करें।

(i) शासन दिल्ली सुलतानों की प्रवृत्ति राज्यवादी एवं निरंकुश था। उत्तराधिकार का कोई सवाल नहीं था। गद्दी पाने के २ रास्ते थे-पहला अपना व्यक्तित्व, द्वितीय सरदारों का प्रेम। चुनाव का नाटक करके अमीर जिसे चाहते गद्दी प्रदान कर देते थे। सुलतानों में कुछ ऐसे थे जो खलीफा के अधीन थे, परन्तु सुदृढ व्यक्तित्व सम्पन्न सुलतान स्वतन्त्र थे। अलाउद्दीन ने सुलतान को शक्ति का स्रोत बना दिया। शासन, न्याय आदि का स्रोत सुलतान होता था। राज्यधर्म इस्लाम था, फलतः शासन-कार्य्य में मौलवियों का प्राधान्य रहता था।

सुलतान को सहायता देने के लिए कोई खास मन्त्रिमण्डल नहीं था। हाँ, दरबारेखास के सरदार समय-समय पर सुलतान को विचार देते थे। इन्हीं सरदारों में से किसी को

प्रधान बना दिया जाता था, जिसका पद प्रधानमन्त्री के समान होता था ।

साम्राज्य कई प्रान्तों में बटा था। जिसका शासक सुलतान द्वारा नियुक्त होता था । ये सूबेदार "नायब सुल्तान" कहलाते थे । ये सूबेदार प्रान्त के आन्तरिक शासन में स्वतंत्र थे । नायबसुल्तानों का यह कर्त्तव्य था कि सुल्तान को समय पड़ने पर सैनिक सहायता और ठीक समय पर 'कर' दें ।

पुलिस विभाग का भी प्रबन्ध था। गुप्तचर विभाग भी थे। न्याय काजियों की देख रेख में होता था । न्याय ग्रन्थ कुरान था । काजी लोग इस्लामियां-नीति के अनुसार न्याय करते थे । ये काजी सुलतान द्वारा नियुक्त होते थे ।

सुलतान के पास मजबूत सेना रहती थी जो ३ भाग में बटी होती थी– हाथी, घुड़सवार, पैदल । आमदनी के जरिये खिराज, चुंगी और जजिया था ।

समाजिक अवस्था

समाज में प्रधानतया ३ वर्ग थे । पहला वर्ग राजा, सरदारों एवं सुखी व्यापारियों का था ; दूसरा वर्ग साधारण जनता का । तीसरा वर्ग गुलामों का था । इस युग में गुलाम प्रथा की भी खूब चलती थी ।

पहले वर्ग में ज्यादेतर ऊँचे वर्ग के लोग रहते थे । ये लोग धनी थे । इन्हे किसी चीज की कमी नहीं थी। ये

अय्याशी जीवन बिताते और मौज से जिंदगी काटते थे। इन लोगों में बहुत से राजपूत तथा हिन्दू सरदार थे जिन्हों ने अपने शक्ति-सूर्य को अस्त होता देख मुसलमानों के उदीयमान सूर्य को नमस्कार किया था, उनके सामने झुक गये थे।

द्वितीय वर्ग के लोगों में साधारण कृषक, व्यापारी एवं अन्य पेशे के लोग थे। भारतीय समाज का जो कुछ भी अंश और उसकी रुपरेखा बच रही थी वह इसी वर्ग में देखी जा सकती थी।

तीसरा वर्ग गुलामों का था। ये हराए हुए प्रदेश से लाए जाते थे। अलाउद्दीन के समय में गुलामों की संख्या करीब ५०००० थी। मलिक काफूर भी गुजरात से लाया गया गुलाम ही था। फिरोज तुगलक के समय में गुलामों की संख्या बढ़ कर करीब दो लाख हो गयी।

इस के अलावे भी समाज में २ वर्ग थे। एक तो वे, जिन्हों ने इस्लाम मान लिया था, दूसरा स्वाभिमानी हिन्दुओं का दल जिन्होंने इस्लाम नहीं माना था। जिन्हों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया था उन्हें जजिया नहीं लगती थी।

मुसलमानों के आगमन के पूर्व परदे की प्रथा नहीं पायी जाती थी। मुसलमानों ने इसे अपने साथ लाया जिसका अनुकरण उत्तर भारत में ही ज्यादेतर हुआ। पर्दा प्रथा को हिन्दुओं ने ज्यादेतर मुसलमानों के क्रूर नजर से बचने के लिए अपनाया।

परदा प्रथा का प्रभाव उत्तर भारत में ही पड़ा, दक्षिन भारत

में पर्दे की प्रथा नहीं थी या थी भी तो बहुत कम। इसका कारण यह था कि ये मुसलमान पश्चिमोत्तर से आए हुए थे। इन के चपेट में सबसे पहले उत्तर हिन्दुस्तान ही पड़ा। दक्षिण भारत के सुदृढ़ समाज से टक्कर लेने में विन्ध्या पर्वत लांघने की कठिनाई, पहाड़ी राजाओं की दुर्जेयता एवं हिन्दुओं की कट्टरता ने उनकी दाल न गलने दी।

बाल विवाह की प्रथा की शुरुआत होचली थी। इसका भी कारण मुसलमानों के क्रूर नजरों से अपनी इज्जत को बचाना ही था।

स्त्रियों का समाज में आदर था। जैसा कि सदा से भारतीय समाज में आदरणीय स्थान स्त्रियों का रहा है। साधारण स्त्रियों में शिक्षा का प्रचार रुक सा गया था, क्योंकि प्रत्येक हिन्दू अपनी लड़की को बाहर (पाठशाला) जाने देना नहीं चाहते थे। इसका भी मूल कारण मुसलमानों के क्रूर नजरों से बचना ही था। फिर भी उच्च वर्गीय ललनाएँ शिक्षिता हुआ करती थीं।

समाज में सती प्रथा जोड़ों से चली थी। कुछ सुलतानों ने इसे रोकने के लिए कोशिश भी की थी जैसे फिरोज तुगलक ने। फिर भी यह प्रथा बन्द नहीं हुई।

हिन्दुओं ने मुसलमानों को म्लेच्छ एवं बर्बर समझा। हिन्दुओं ने अपने देश और धर्म द्रोही के साथ रोटी बेटी का सम्बन्ध करना अच्छा नहीं समझा। कुछ राजपूतों ने अपनी

लड़की दी तो जरूर परन्तु उन्होंने मुसलमानों से बेटी लेना स्वीकार नहीं किया।

मुसलमानों ने भी भारतीय समाज में घुलने की चेष्टा की परन्तु घुल न सके। इसका एक मात्र कारण यह था कि उन लोगों ने भारतीय समाज के बंधनों से लोहा लेना, और उसका रूप—विकृत करना चाहा।

मुसलमानों ने भी कई अंशों में भारतीय समाज का अनुकरण किया। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय समाज का प्रभाव इस्लामी समाज पर, और इस्लामी समाज का प्रभाव भारतीय समाज पर पड़ा।

आर्थिक अवस्था।

भारतवर्ष सदा से कृषि प्रधान देश रहा है। उपज खूब होती थी। कुछ मुसलमान सुलतानों की बेवकूफी वा असावधानी से कृषि को बहुत धक्का लगा। जैसे मुहम्मद तुगलक के 'कर' से दब कर मध्य प्रदेश के किसानों ने खेती करना छोड़ दिया था।

प्राकृतिक विघ्नों के कारण भी कभी २ कृषि को धक्का लगती थी फिर भी देश धन धान्य पूर्ण और स्वस्थ था।

मार्को पोलो ने इस देश के नगरों और देहातों (समूचे देश) के धन धान्य का अपूर्व वर्णन किया है। उस समय जितना धन भारत के पास था उतना धन उस समय के किसी भी देश

देश में न था। बाबर उस समय आया था जिस समय देश अकाल और तैमूर की चढ़ाई से जीर्ण शीर्ण हो गया था—फिर भी बाबर अपने संस्मरण में लिखता है कि—"भारत की सब से बड़ी खूबी यह है कि, यह बहुत बड़ा देश है और यहाँ सोना और चाँदी भरपूर्ण है।"

व्यापार भी खूब होता था। देशी व्यपार और विदेशी व्यपार दोनों उन्नति के शिखर पर था। उस समय चीज बहुत सस्ती मिलती थी। अलाउद्दीन खिलजी का हाल लिखते हुए राजा शिव प्रसाद 'सितारे हिन्द' लिखते हैं:—

"'तवारीख फरिश्ता' में लिखता है कि उस वक्त दिल्ली में अब के हिसाब से एक रुपैए का २ मन गेहूँ बिकता था और पौने चार मन जव, साढ़े तीन सेर की मिसरी थी और तीन सेर का घी।"[४३]

कालीकट और भरौच विदेशी व्यापार का अड्डा था। भारतीय उद्योग धन्धे में निम्नलिखित कार्य प्रमुख थे:—

(१) सूती, ऊनी, रेशमी कपड़े बनाना।

(२) कपड़ों पर जड़ी चढ़ाना।

(३) कागज बनाना।

(४) बर्त्तन बनाना।

४३—इतिहास तिमिर नाशक, खण्ड-१ पृष्ठ—२६। उद्धृत: भारत भारती।

(५) बर्त्तन पर नक्काशी करना ।

(६) चीनी उत्पादन करना ।

(७) खान से खनिज पदार्थ निकालना ।

जैसे—सोना, लोहा, चाँदी,

(८) और भी चीजें जैसे हीरा, मोती, मानिक पन्ना, सुगन्धित द्रव्य का व्यापार होता था ।

प्रत्येक पेशे में लोग लगे रहते थे । बाबर ने भी अपने संस्मरण में लिखा है कि—" ..... भारत में एक सुविधा यह भी है कि यहाँ हर पेशे और व्यापार के काम करने वालों की संख्या इतनी ज्यादे है कि उसकी कोई अन्त ही नहीं । किसी काम या धन्धे के लिए जब चाहो तब एक समूह तैय्यार है । इन के यहाँ वही काम धंधा युगों से, पीढ़ी दर पीढ़ी चला आरहा है । " ४४

अर्थ के विचार से भी समाज के २ भेद होगए थे । पहला धनी वर्ग और दूसरा गरीब वर्ग । धनी वर्ग को किसी चीज की कमी नहीं थी उनके दिन रात सुख से कटते थे । वे वैभव कृत विपुल अट्टालिका में निवास करते । परन्तु

४४—विश्व इतिहास की झलक (हिन्दी अनुवाद) अनुवादक चन्द्रगुप्त वार्ष्णेय पृष्ठ—२५७ ।

गरीबों का भी एक वर्ग था जो मामूली जिन्दगी बसर करता था। खुसरो ने कहा था—

"सुलतान के मुकुट का प्रत्येक मोती, गरीब किसान की आँसू भरी आँखों से गिर कर जमा हुआ रक्त बूंद मात्र है।"

फिर भी देश सामान्यतः सुखी और समृद्ध था।

प्रश्न ३४:—तुर्क अफगान कालीन स्थापत्य कला एवं मूर्तिकला पर संक्षिप्त प्रकाश डालिए।

स्थापत्य कला।

कुतुबुद्दीन एबक ने यमुना के किनारे "कुतुब मीनार" बनवाया यह कहना ठीक नहीं होगा। कुतुब मीनार का वास्तविक नाम यमुना स्तंभ है। यह महाराज पृथ्वीराज का बनवाया हुआ है। कुतुबुद्दीन का बनाया हुआ नहीं है। इनका सबसे बड़ा प्रमाण तो यह है, कि मुसलमानों की स्थापत्य शैली और यमुनास्तंभ की शैली में बहुत अंतर है? दूसरा कारण यह हैं कि कुतुबुद्दीन सा कट्टर मुसलमान कभी भी अपने मीनार पर हिंदुओं के पूजन घाट इत्यादि को अङ्कित करने की अनुमति नहीं देता। इसलिए यह सिद्ध है कि यमुनास्तंभ कुबुतुद्दीन का बनाया हुआ नहीं है। यद्यपि कुतुबुद्दीन ने ऊपर के कुछ भागों को तोड़ कर मुसलमानी ढंग से बनवाया और कुतुबमीनार के नाम से उसे पुकारा जरूर।

सरसैयद अहमद खाँ ने भी एक पत्र में यही दिखलाया कि यमुनास्तंभ हिन्दूकृत ही है।

इसकाल मे अनेकानेक इमारतें दिल्ली, जौनपुर, गुजरात, बंगाल, बीजापुर, विजय नगर, पाण्डुआ में बनी। ये इमारतें ज्यादेतर हिंदुओं के द्वारा ही बनाये गये है इसलिए इस पर हिंदू स्थापत्य शैली की आमिट छाप पड़ी दिखलाई देती है।

अलाउद्दीन ने निजामुद्दीन औलिया के मजार पर मस्जिद बनवाई। इसने कुतुब मीनार (यमुनास्तंभ) के नजदीक अलाई दर्वाजा बनवाया।

दिल्ली का सबसे प्रसिद्ध इमारत फिरोज का मकबरा है। इसकी मजबूती और रचना कला की उतकर्षता निश्चय सराहनीय है। यह उस युग का प्रमुख स्थापत्य है इसकी सुन्दरता और मजबूती प्रसिद्ध है।

पाण्डुआ में भी एक सुन्दर मस्जिद बनवाए गए। इसे छोटा-सोना मस्जिद कहते है। इसकी रचना कौशल भी लोगों को मुग्ध करती है।

इस काल की एक और प्रमुख और सुन्दर इमारत, जो हिंदू मुस्लिम स्थापत्य का नमूना है वहहै जामा मस्जिद।

सुन्दरता में उसकाल के सभी मस्जिदो से उत्तम है।

दक्षिण भारत में विजय नगर और बहमनी राज्यों को मकान बनवाने की बहुत शौक थी। वहाँ भी कई सुन्दर सुन्दर स्थापत्य बने। गुलबर्ग में आज भी कई इमारते देखो जा सकती है। फिरोजशाह बहमनी का मकबरा प्रसिद्ध है।

इसके अलावे और भी बहुत से स्थापत्य बनवाए गए।

मूर्ति कला

मूर्तिकला के दृष्टिकोण से यह युग अच्छा नहीं था। मुसलमानी दरबार में तो इसका आदर था ही नहीं क्योंकि वे लोग मूर्ति काला के प्रति उपेक्षा रखते थे। फिर भी इसका यह अर्थ नहीं समझ लिया जा सकता है कि उस युग में मूर्ति कला की उन्नति हुई ही नहीं।

चित्तौर का कीर्तिस्तंभ की मूर्तियां बहुत भद्दी अवस्था में पाई जाती है। इसका कारण यह भी हो सकता है कि निरंतर के प्रकृति चोट से उसका रूप बिगर गया हो। इस कीर्ति स्तंभ पर बहुत से देवी देवताओं की मूर्तियाँ हैं—इतना ही नही इसमें राग रागनियों को भी मूर्त रूप दिया गया है।

इस युग के सबसे उत्कर्ष पाए मूर्तियों मे नटराज और परामिता मूर्तियां है। परामिता राजा भुवंभूव के रानी की मूर्ति मानी जाती है। इसका समय करीब १२२५ ई० में मना जाता है इसको शैली बौद्ध मूर्तिकला से बहुत मिलती जुलती है। इनकी रचना कला अपूर्व तथा सुन्दर है। इस युग की एक अद्वितीय रचना कला का प्राञ्जल रुप नटराज की मूर्ति में मिलती है। इस मूर्ति मे नटराज के ताण्डव नृत्य का मूर्त रूप है।

उस युग की स्थापत्य काल। पठानों की स्थापत्य कला नहीं बल्कि हिंदुओं की स्थापत्य कला थी। इस युग के जितने भी

मस्जिद बनवाए गए सभी पर हिंदू स्थापत्य कला का पूर्ण प्रभाव है। हिंदुओं की कला कारिता एवं मुसलमानों के सहाय्य से स्थापत्य का निर्माण हुआ। प्रसिद्ध इतिहासज्ञ एल० मुकर्जी ने लिखा है कि-

इस युग के कला का नाम पाठान स्थापत्य न रख कर हिंदू मुस्लिम स्थापत्य रखना अधिक समी चीन है [४५]

—:o:—

प्रश्न ३५ —:तुर्क अफगान कालीन धार्मिक अवस्था पर, संक्षिप्त प्रकाश डालें।

(i) धार्मिक अवस्था:—

इस्लाम की होड़ से बचने के लिए हिन्दुओं ने जात-पाँत का बंधन कस दिया। वास्तव में इस्लामी धर्म में कोई नवीनता नहीं थी। 'एकेश्वर एवं निर्गुणवाद तो भारतीय उपनिषदों की ही उपज है।'

एक तरफ सूफियों ने सर्वधर्म समन्वय वाद को चलाया तो हिन्दुओं के सुधारक रामानन्द ने विशिष्टाद्वैत का प्रवर्तन किया। निम्बार्क ने 'वाममार्ग' की पूजा प्रचलित की। मध्वाचार्य्य, जो द्वैत वादी थे, मध्वसम्प्रदाय की स्थापना की। चैतन्य ने ऊँच-नीच का भेद नहीं माना। इनलोगों ने उन नीच लोगों को अपने धर्म में लिया, जो इस्लाम की ओर झुके जा रहे थे।

---

४५ भारत का इतिहास II मुकर्जी
अनु० चन्देल पृ० ६४

तुर्क अफगान कालीन सुलतानों में धार्मिक कट्टरता की ही प्रधानता रही-शुरू से अंत तक। जनताओं में तो यदा कदा धार्मिक सहिष्णुता भी मिली है पर सुलतानों में धार्मिक कट्टरता की ही प्रधानता रही है।

नीचे ७१२ ई० से १५२६ ई० तक के सुलतानों की धार्मिक कट्टरता का परिचय दिया जाता है।

७१२ ई० हिंदू धर्म पर सर्वप्रथम प्रभाव ७१२ ई० में पड़ा। मु० इब्न कासिम ने सिंध विजय करके जनता के सामने २ शर्तें दीं।

(१) इस्लाम स्वीकार करो।
या (२) कर दो (जजिया)।

जो कोई इस्लाम स्वीकार कर लेता उसे वह खूब मानता था। उसने हिंदू पुरोहित एवं महन्थों पर भी कर लगा दिया और इस्लाम विरोधी हिंदुओं पर जजिया।

९९७—१०२९ ई० सुलतान महमूद ने तीर्थस्थान जैसे सोमनाथ (१०२३ ई०) को तोड़ा—क्यों? इसलिए कि उसमें धन बहुत था। परन्तु एक और कारण था, वह यह कि महमूद मूर्ति पूजा का कट्टर विरोधी था। "उसने हिन्दुस्तान के 'काफिरों' के

खिलाफ 'जेहाद' बोलने और उनको दंड देने के लिए हर साल एक हमला करने की प्रतिज्ञा की।" ४६ इसने जबरदस्ती बुलंद शहर के राजा को इस्लाम स्वीकार करवा डाला। (१०१८ ई०) इसने अफगानिस्तान के बहुत से हिंदुओं को मुसलमान बना लिया।

११७६ ई० महमूद गोरी के आक्रमण के समय उसका एक सेनापति मुहम्मदबिन बख्तियार ने अवध पर आक्रमण करते समय रास्ते में पहाड़ी पर के बौद्ध विहार को दुर्ग समझकर उसे तहस नहस कर डाला। यह विहार उस समय बौद्ध धर्म का प्रधान केन्द्र था।

१२०६—१२१० ई० कुतुबुद्दीन भले ही मुसलमानों के लिए 'दरियादिल' हो परन्तु हिंदुओं के प्रति उसका अच्छा ख्याल न था 'तबाकत-ए-नासीरी' में इसकी उपमा उस व्यक्ति से दी गई है "जिसके दान से हजारो व्यक्ति प्रसन्न हो जाते हैं तो उसके मृत्युदण्डों से सैकड़ो हजारो व्यक्ति प्राणो से हाथ भी धो बैठते हैं।" ४७ निस्सन्देह प्राणदण्ड का उपहार हिन्दूओं को ही मिलता था।

---

४६ भारत का इतिहास लेखक—एल० मुकर्जी अनुवादक चंदेल पृष्ठ-१०

४७ वही

१२१०—१२३६ ई० शमशुद्दीन अल्तमस ने कई मन्दिर को तोड़ा जैसे उज्जैन के महाकाल के मन्दिर को। हिन्दू धर्म के प्रति इसे भी सदा घृणा रही।

१२३६—१२४०

जलालुद्दीन रजिया का समय संघर्ष का युग रहा है। इसके जीवन की अस्त व्यस्तता ने न इस्लाम को बढ़ावा दिया, और न हिन्दू धर्म या भारतीय धर्म को गर्त्त में गिराया।

१२४५—१२६६

नासिरुद्दीन एवं बलबन के काल में भी भारतीय धर्मों की अवनति होती रही और उसपर अत्याचार होते रहे।

१२९६—१३१६ ई०

अलाउद्दीन, भारतीयों एवं उनके धर्म के प्रति क्रूर ही रहा। इसने ऐसे नियम बनाए जिससे हिन्दू कुचले जा सकें। धर्मान्धता के फेर में पर कर इसने कितने ही अन्याय किए। अतः इस योग्य सुल्तान को भी हम धर्मान्ध कह सकते हैं।

१३२५—१३८८ ई०

मुहम्मद तुगलक, समय के पार्श्व परिवर्तन के कारण या निज कार्य के कारण, बराबर भटकता रहा। परन्तु फिरोजशाह ने कई मन्दिरों को तोड़ा। १३५९-६० ई० में जाजनगर पर आक्रमण कर जगन्नाथजी का मन्दिर और नागरकोट पर आक्रमण कर के ज्वालामुखी को भ्रष्ट किया। मूर्ति पूजा बन्द करा दी गई। ब्राह्मणों पर जजिया लगा दिया गया था।

१४५१—१५२६ ई०

बहलोल लोदी के बाद सिकन्दर लोदी धर्मान्ध निकला। इसने भारतीय धर्म को नष्ट करने के लिए कुछ भी उठा न

रखा। इसने मथुरा के मन्दिरों को नष्ट भ्रष्ट किया और मस्जिद कार्य में मन्दिरों को लगाया। इसके बाद तैमूर ने इस शासन की कब्र खोद दी और उसी वंश के बाबर ने इस दिल्ली सल्तनत की उस खुदे हुए कब्र में गाड़ दिया।

अतः हमने क्या देखा? यही कि इस काल में भारतीय धर्म पर सहानुभूति रखनेवाला सुल्तान एक भी न हुआ। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं समझाना चाहिए कि इस युग में भारतीय धर्म को प्रोत्साहन देनेवाला कोई हुआ ही नहीं। इस समय भी देश के भिन्न २ भागों के राजाओं महाराजाओं एवं साधारण व्यक्तियों एवं सुधारकों ने इसका प्रचार करने में कुछ उठा न रक्खा।

प्रश्न—३६ तुर्क अफगान साम्राज्य के पतन के क्या क्या कारण थे?

(१) तलवार की ताकत से विजित राज्य पर शासन करने के लिए बाजू में शक्ति और हृदय में विवेक एवं मानस में ज्ञान नीति होना आवश्यक है। अलाउद्दीन के बाद के राजाओं की अदूर दर्शिता एवं कमजोरी ने इस साम्राज्य को नष्ट होने में लिए एक धक्का मारा।

(२) जब जब मुसलमानों ने हिन्दुओं के धार्मिक, सामाजिक या अन्य प्रकार के जीवन में बाधाएँ पहुँचायी, तब तब हिन्दुओं में एक प्रकार की क्रान्ति

सी मचती रही। जहाँ तहाँ विद्रोह भी हुआ करता था, जिसे शासक ताकत से कुचला करते थे। यह कबतक ? तब तक, जब तक, ताकत हो। अलाउद्दीन के बाद के सुलतान इस दृष्टिकोण से बहुत ही अयोग्य थे।

(३) मुसलमान शासकों ने हिन्दुओं के सहयोग के बिना और उनकी उपेक्षा करके शासन करने लगे। फल: स्वरूप हिन्दुओं की वीरता पूर्ण तलवार उनके पक्ष में कभी नहीं उठी।

(४) चाँगेज के आक्रमण ने अल्तमस को कभी भी सुख की नींद नहीं सोने दी। अलाउद्दीन ने मंगोलों को रोकने के लिये अपनी सारी ताकत लगा दी। मंगोलों ने भी सुलतानों की शक्ति का क्षय किया।

(५) भारी से भारी उलझन मुहम्मद बिन तुगलक के समय में प्रगट हुई। उसे किसी भी कार्य में सफलता नहीं मिली। न जाने उसके भाग्य में क्या लिखा था ? इसने अनेक सुधार किए परन्तु सभी बेकार साबित हुए। प्रान्तों में विद्रोह हुए कई प्रान्त स्वतंत्र हो गये। यों एक बार ही दिल्ली सलतनत की नीव हिल गई। फिर फिरोज की धर्मान्धता ने भी एक चोट पहुंचाई।

(६) तैमूर के आक्रमण ने थोड़े दिन के लिये सुलतानों की सल्तनत के अस्तित्व तक मिटा दिया।

(७) इब्राहिम लोदी की धर्मान्धता ने पतन को और नजदीक आने के लिए बहुत बड़ी सहायता दी। हिन्दुओं के दिल का व्रण अभी तक भरा न था। उस पर इब्राहिम लोदी के कार्यों ने जले पर नमक का कार्य किया।

(८) इब्राहिम लोदी, सरदारों के साथ कराई रुखाई से पेश आया। फलतः सरदारों ने विद्रोह करना शुरू किया—जैसा कि प्रत्येक स्वाभिमानी पुरुष कर सकता था।

(९) जागीरदारी प्रथा के कारण अनेक जागीरदार शक्तिशाली हो गए थे, और स्वतंत्र होना चाहते थे। स्वतंत्र होने की भावना दिन दिन प्रगट होती गई।

(१०) इब्राहिम लोदी के धमण्डत्व के कारण पंजाब का गवर्नर अभिमानी दौलत खां लोदी ने बाबर को बुलाया जिसके कारण इस सल्तनत की अंत हुई।

(११) राजपूतों की शक्ति सो नहीं गई थी। इस समय उत्तर भारत की राजपूत-सेना के नेता राणा संगा के फौलादी करों में प्रबल ताकत थी। अपङ्ग और व्रणी होने पर भी वह दिल्ली सुल्तान से युद्ध करने में बाज न आया और कई स्थानों को जीत कर विद्रोह की पताका को फहराता रहा।

(१२) जिस कबीले के सुल्तानों ने अविराम युद्ध कर, उन्नति के प्राङ्गण मे बढ़ते रहे; पराक्रम के साथ जीवन बिताते रहे, उसी कबीले में अलाउद्दीन के बाद अय्याशीपन आगया था। तलवार में बीफ लग चुकी थी और मधु प्याला प्रगति कर रही थी।

(१३) सैनिक संगठन भी विकृत होता जारहा था। जिस सेना में इतनी क्षमता थी कि वह महाप्रतापी राजा पृथ्वीराज से टक्कर ले सकी उसी सेना में अलाउद्दीन के बाद अय्याशी और विलासिता के कारण सैनिक योग्यता क्षीण हो गई।

(१५) अंतिम बार तो बाबर का आक्रमण था। जिस ने इब्राहिम लोदी की अपार सेना को ७०० फिरंगी तोप और योग्य संगठन से विजय पाई। दिल्ली सल्तनत का राज्य इसी कारण से नष्ट हो गया।

प्रश्न—३७ विजय नगर साम्राज्य का इतिहास संक्षेप में लिखो।

इसकाल में भारतीय संस्कृति और सभ्यता का केन्द्र दक्षिण भारत ही हो गया था। परन्तु मुसलमानों ने जब दक्षिण पर चढ़ाई कर के (जैसे मलिक काफूर) उसे नष्ट करना शुरु किया तो वहाँ एक अपूर्व क्रान्ति सी मच गई। हिन्दुओं का नेतृत्व कर के

हरिहर और बुक्का नामक व्यक्ति ने, जो काकतीय वंशी थे, विजय नगर राज्य की स्थापना १३३६ ई० में की। थोड़े ही दिनों में वह इतना प्रबल हो गया कि दक्षिण का चोल राज्य इसी में मिल गया।

विजय नगर साम्राज्य का पहला राज्य वंश 'संगम' है। हरिहर ने, जो पहले होयशल वंशीय वीर बल्लाल के पास नौकर था, अंतिम होयशल राजा विरुपाक्ष की हत्या कर इस साम्राज्य की स्थापना की और अंग, कलिंग, प्रदेश जीते। इसकी मृत्यु, १३५५ ई० में हुई।

हरिहर के बाद बुक गद्दी पर बैठा (१३५५ ई०)। इसने तेलगू प्रान्त के विद्रोह को दमन किया। इसे मुहम्मदशाह बहमनी से लड़ाई हुई। सेनापति मल्लनाथ के घायल होने के कारण विजय नगर हार गया और मुहम्मद शाह के सन्धि कर ली गई।

बुक पुत्र हरिहर द्वितीय ने महाराजाधिराज की पदवी ली। बहमनी राज्य से इसे लड़ना परा जिस में पराजित हुआ और बहुत बड़ा हर्जाना देना पड़ा। इस ने अपने राज्य को ७ भागों में बाँटा। यह बहुत बड़ा दानी था। इसकी मृत्यु १४०४ ई० में हुई।

उत्तराधिकारी युद्ध के बाद देवराय प्रथम गद्दी पर

वैठा। इसने वहमनी फिरोज से हार कर उसे अपनी वेटी दी।

देवराय प्रथम के वाद देवराय द्वितीय गद्दी पर वैठा (१४२१-१४४८)। यह वहुत शक्तिशाली था। इसी समय विदेशी यात्री कोन्टीने और अब्दुर्रज्जाक आया था, जिसने उस कालीन अवस्थाओं का सुन्दर चित्र उपस्थित किया है। देवराय द्वितीय का जीवन वहमनियों से युद्ध करने में वीत चला जिसका फल यह हुआ कि धन, जन की वहुत हानि हुई। यादव वंशीय नरसिंह सालुव ने, जो चन्द्रगिरि का शासक था, इस साम्राज्य को अपने अधिकार में लेलिया। (१४८६ ई०)।

सालुव वंश का नरसिंह, जो शासक के दृष्टिकोण से अच्छा था, पहला शासक हुआ। इसने मुहम्मद शाह द्वितीय से युद्ध किया जिसमें हार गया और कर देने का वादा किया। इसका सेनापति ईश्वर था। नरसिंह का पुत्र इम्मादी नरसिंह की हत्या कर ईश्वर के पुत्र नरेश ने तुलव राजवंश की नींव डाली।

तुलव वंश का द्वितीय राजा वीर नरसिंह हुआ जिस के समय में वीजापुर ने विजय नगर पर आक्रमण किया था। इसका भाई कृष्णदेव राय इस वंश का सव से प्रसिद्ध राजा हुआ (१६०६—१५२६ ई०)। यह कवि एवं साहित्यिक व्यक्ति था। इस वैष्णव

धर्मानुआई राजा के दरबार में 'अष्टदिग्गज' नामक ८ प्रवीण, कवि थे। इसने प्रताप पुत्र वीरभद्र (उड़ीसा शासक) को परास्त किया फिर तैलांगना पर आक्रमण किया। फिर बीजापुर पर चढ़ाई कर रायपुर, आदि प्रदेश छीन लिए। अलबुर्क (पुर्तगाली गवर्नर) ने इसके दर्बार में एक दूत भेजा था। पेज नामक यात्री ने यहाँ की खूब प्रशंसा की है। इस के बाद इसका भाई अच्युत राजा हुआ (१५२९-१५४२ ई०)। इसी समय से विजय नगर का पतन शुरु हुआ। बीजापुर वालों ने रायचुर मुद्गल को लौटा लिया। प्रान्तीय शासकों ने अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया। फिर अच्युत का भ्रातृ पुत्र नाबालिग सदाशिव राजा हुआ परन्तु वह निज मंत्री रामराय का खिलौना मात्र था।

सदाशिव के बाद रामराय ने अरविन्द बंश की स्थापना की। जिस का प्रबल शासक रामराय ही हुआ। इसने बीजापुर से मित्रता कर अहमद नगर पर आक्रमण किया (१५५८ ई०)। जिसे देख दक्षिण भारत के सभी मुसलमानों ने विजय नगर पर आक्रमन कर दिया और ताल्लीकोटा नामक मैदान में लड़ाई हुई जिस में पराजित रामराय की हत्या की गई। विजय नगर छिन्न भिन्न हो

गया। परन्तु अरविन्द वंश कुछ दिनों तक चला जिसमें तिरुमल, श्रीरंग प्रथम वेंकट एवं श्रीरंग द्वितीय हुआ।

प्रश्न—३८ बहमनी साम्राज्य का संक्षिप्त इतिहास लिखिए।

मुहम्मद तुगलक के कार्य्यों का सब से बुरा प्रभाव दक्षिण पर ही पड़ा। जनता क्रान्तिकारी हो गयी। हसन गंगू जो एक अफगान था और कभी मु० तुगलक के पास नौकर था, इसका नेता बना और १३४७ ई० में तुगलकी फौज को शिकस्त देकर दक्षिण को स्वतंत्र घोषित कर दिया। जनता की राय से इसे गद्दी मिली और वह बहमन शाह के नाम से प्रसिद्ध हुआ और अपने वंश का नामकरण बहमनी किया। क्योंकि उसका सम्बन्ध फारसी, बहमनी, खानदान से था। इसने अपनी राजधानी गुलबर्गा को बनाया। इस की मृत्यु के बाद मुहम्मद शाह प्रथम गद्दी पर बैठा (१३५८-७३) इस ने तेलाँगना पर चढ़ाई कर गोलकुण्डा को मिला लिया। फिर १३६५ ई० में इसने विजय नगर पर चढ़ाई की और बुक्का को परास्त किया। इसकी मृत्यु के बाद मुजाहिद गद्दी पर बैठा। इसने विजय नगर पर चढ़ाई की परन्तु असफल रहा। इसके बाद उल्लेखनीय सुलतान फिरोज (१३९७-१४२२ ई०) हुआ। इस समय महाराष्ट्र में बहुत बड़ा अकाल पड़ा। इस ने विजय नगर को परास्त किया और उसकी एक राजकुमारी से शादी की। इसने दोबारा विजय नगर पर चढ़ाई की। जिस में इसे परास्त होना पड़

यह कला और संगीत का प्रेमी था। इस ने गुलबर्गा को खूब सजाया था। इस समय सैनिकों ने विद्रोह कर दिया जिसका नायक अहमद शाह था जो फिरोज का भाई ही था। फिरोज को मार कर अहमद शाह सुलतान बना (१४२२ ई०) इस ने विजय नगर पर चढ़ाई कर दी। घमासान युद्ध के बाद विजय नगर को सन्धि करने के लिए बाध्य होना पड़ा। फिर वारंगल एवं मालवा को जीता। इसने अपनी राजधानी 'बिदर' को बनाया। इस सुलतान में धर्मान्धता कूट कूट कर भड़ी थी। इस के मरने के बाद 'अलाउद्दीन' द्वितीय सुलतान बना (१४३५ ई०)। इस के समय में भी विजय नगर से युद्ध चलता रहा। इसने विद्यालय, रुग्नालय आदि जन हित के कार्य्यों को करवाया। इस के दरबार में शिया सुन्नी मत लेकर बहुत विरोध रहता था। इसकी मृत्यु के बाद इसका पुत्र हिमायुं गद्दी बैठा (१४५७ ई०) इसका शासन अन्धकार मय रहा। यह निर्दयी कठोर एवं दुराचारी था। परन्तु महमूद गावां, जो इसका मंत्री था, एक योग्य और अनुभवी व्यक्ति था। इस के बाद निजाम शाह गद्दी पर बैठा। शासन मखदुमा जहान एवं सुविख्यात महमूद गवाँ के हाथों में रहा। कुछ ही दिनों में वह मर गया और मुहम्मद शाह तीसरा सुलतान बना (१४६३-८२)। यह स्वं भी योग्य था और इसका मंत्री महमूद गवां भी योग्य था। इस ने पश्चिमी घाट, गोआ

एवं बेलगाँव को जीत लिया। फिर उड़ीसा पर चढ़ाई कर राज मुन्दरिम छीन लिया। मुहम्मद शाह तृतिय में यही एक बड़ा अवगुन था कि वह बहुत शक्की था। किसी ने उसे महमूद गवां के विरोध में नमक मिर्च लगा कर कह दिया कि उस ने महमूद गवां को कत्ल करवा दिया। इसके बाद महमूद शाह आदि अनुल्लोखनीय अयोज्ञ सुलतान हुए। जहाँ तहाँ अराजकता हो रही थी। अंत में मंत्री बरीद ने इस साम्राज्य का अंत करदिया। इसी साम्राज्य के कत्र पर बरार, अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुन्डा, एवं बीदर के राज्य स्थापित हुए।

प्रश्न ३६– शेरशाह की जीवनी लिखिए और संक्षेप में बतलाइये कि इसने हिन्दुस्तान की कौन कौन सी सेवा की है ?

शेर शाह के पिता का नाम हसन था। हसन अफगान जागीरदारों के पास नौकर था। शेरशाह ने १४७२ में बजोर नामक स्थान में जन्म लिया था। हसन के मालिक ने खुश होकर हसन को बिहार में सहसराम की जागीर दे दी। शेरशाह को घर में नहीं पटती थी। इसका कारण यह था कि हसन को ४ शादियां थीं, और उस उन मातओं से पटती ही नहीं थी। वह घर से भाग कर जौनपुर के सुलतान जमाल खां के पास चला गया। शेर खां की प्रतिभा पर सुलतान बहुत मुग्ध हुआ, वही पर शेरशाह ने अनेक विद्याएं पढ़ी। इतिहास इसका प्रिय विषय था। शेरखां फिर अपनी जागीर को लौट गया और बहुत से शासन

सुधार किये। विद्रोहियो को इस ने कुचल दिया और जनहित को प्रमुखता दी। परन्तु फिर वह पारिवारिक झंझटों से ऊब कर घर से भाग गया और बाबर की सेना में नौकरी कर ली वहां उसने विद्या पूर्ण रूप से सीखा।

इसी बीच में हसन की मृत्यु हो गयी और शेरशाह निज जागीर को लौट आया। शेरखां ने बिहार सुलतान बहार खां के यहां नौकरी करली। कहते हैं कि इसने तलवार से एक वार एक शेर को मार डाला था, जिस पर खुश हो कर सुल्तान ने इसे शेरखां की उपाधि दी। इसका वास्तविक नाम फरीद खां था। बहार खां की मृत्यु के बाद जलाल खां गद्दी पर बैठा। परन्तु वह नाबालिग था। शेरखां इसका अभिभावक नियुक्त हुआ। शेरखां ने चुनार दुर्ग की मलिका से शादी कर, उस दुर्ग पर अधिकार कर लिया। इसतरह बिहार का वास्तविक शासक शेरखां हो गया। इसके अनुशासन से क्रुद्ध होकर दरबारियों ने जलाल खां के कानों को भरना शुरु किया जलाल खाँ डर कर बंगाल के सूबेदार महमूद शाह के पास चला गया। महमूद शाह को शेर खाँ से पहले से ही दुश्मनी थी। महमूद शाह और जलाल की सम्मिलित सेना का शेर खाँ ने १५३४ ई० में कीयूल नदी पर परास्त कर दिया और शेरखाँ बिहार का बेताज सरताज हो गया। इसके बाद शेरखाँ ने अपनी सेना को खूब संगठित कर लिया।

महमूद बंगाली फिर षंडयंत्र रच रहा था, इस से क्रुद्ध होकर शेर खां ने बंगाल पर चढ़ाई कर दी और गौड़ के दुर्ग पर घेड़ा डाल दिया। हिमायूं ने जब शेर खां की करतूत देखी तो वह शेर को परास्त करने चला। हिमायूं ने चुनार पर कब्जा कर लिया परन्तु उसी समय शेर ने गौड़ के किले पर दखल कर लिया (१५३८)। अब हिमायूं गौड़ के तरफ चला। शेर खाँ ने छल प्रवंच कर के 'रोहितास गढ़' पर कब्जा कर लिया। हिमायूं जब गौड़ पहुँचा तो उसके पहले ही शेर रोहतास चला गया। शेर ने जौनपुर पर भी कब्जा कर लिया। शेर खाँ ने हिमायूं और बंगाल के संबन्ध को काट दिया। शेर और हिमायूं के बीच चौसा के नजदीक एक लड़ाई हुई (१५३९ ई०) जिस में हिमायूं हार कर भाग गया। दूसरी लड़ाई कन्नौज में १५४० में हुई परन्तु उस में भी हिमायूं को हार खानी पड़ी। हिमायूं डर कर भाग गया और शेर खां भारत का सम्राट बन बैठा।

शेर शाह ने रायसीन पर चढ़ाई कर दी (१५४३)। पूरणमल चौहान बहुत बहादुरी से लड़ा। एल० मुकर्जी का कहना है कि शेर खां ने रायसिन के किले में बन्द सेना को कत्ल करा दिया।' परन्तु यह विचार नवीन ऐतिहासिक शोध से ठीक नहीं मालूम पड़ता। १५४२ ई० में शेर खाँ ने मालवा रणथंभोर एवं सिन्ध को जीता। इस समय जोधपुर का मालदेव बहुत प्रबल हो गया था।

वीरता में मालदेव शेर से प्रबल था परन्तु शेर ने छल से मालदेव को हराया (१५४४)। अंतिम विजय कलिंजर के दुर्ग पर विजय प्राप्त करना था। सुरंग फट जाने के कारण शेर की मृत्यु १५४५ ई० को हो गई।

शेर शाह का शासन आदर्श समझा जाता है। शेर खां ने कई सुधार किये उनके प्रमुख सुधार ये हैं :—

(i) शासन में सुविधा के वास्ते उसने अपने राज्य को ४७ भागों में बाँट दिया। जो 'सरकार' कहलाते थे। फिर सरकार कई परगनों में बंटे हुए होते थे। परगने में २ प्रधान अफसर रहते थे, जो अमीन और शिकदार कहलाते थे। शिकदारों का कर्त्तव्य शासन संचालन और शान्ति स्थापन करना था, अमीनों का काम 'कर' लेना था।

(ii) शेर ने संम्पूर्ण राज्य की पैमाइश कराई और किसानों के हाथ बन्दोबस्त कर दिया। उस ने पट्टा कबूलियत की प्रथा चलाई। सरकार पट्टा लिख कर देती और किसानों को कबूलियत लिखना पड़ता। पैदावार के ⅓ मालगुजारी निश्चित किया गया।

(iii) किसी जगह यदि कोई अपराध होता उसका उत्तर-दायित्व उस स्थान के लोगों पर ही होता था। फलतः अपराध नहीं या बहुत कम होते थे।

(iv) कृषि कार्य पर बहुत ध्यान दिया जाता था। कृषि की

बुराई करने वालों को राजा बहुत दण्ड देता था एवं सिंचाई का भी प्रबन्ध राजा ही करता था।

(v) व्यापार को प्रोत्साहन देने के लिए जगह २ मण्डियां बनवाई गई थी। सड़कें बनवाई गईं। जिन सड़कों में ये ५ मुख्य हैं :—

(a) सोनार गाँव—से—अटक तक।

(b) आगरा—से—सहारनपुर तक।

(c) आगरा—से—मालबार तक।

(d) आगरे—से—चित्तौड़ तक।

(e) लाहौर—से—मुलतान तक।

(vi) टकसाल स्थापित किये गये और उनमें सोने चाँदी के स्टैनडर्ड सिक्के बने जिस से विनमय में सहायता मिलती थी। राज्य के भीतर चुंगी नहीं ली जाती थी।

(vii) डाक भेजने का इन्तिजाम किया। डाकिया पैदल एवं घुड़सवार दोनों होता था।

(viii) शाही घोड़े पर उस ने दाग लगानी शुरु की जिस से सामन्त उसे ठग न सके।

(ix) यत्र तत्र पोखरे, सराय, बनवाये। सड़कों के किनारे वृक्ष लगवाये। स्पताल मवेशियों एवं आदमियों—दोनों के लिए होता था।

(x) उस ने कहा—"न्याय के समय राजा, रंत, फकीर सब एक हैं।" उस ने न्याय करने के लिए अनेक न्याया-

धीश की नियुक्ति की।

(xi) राज्य में शान्ति स्थापन हेतु पुलिस रहती थी। विद्रोहों को पता लगाने के लिए समूचे साम्राज्य में गुप्तचरों का जाल फैला हुआ था।

(xii) हिन्दुओं को शेर ने निज सेना में उच्च २ पद दिया। इस तरह उसने हिन्दुओं का प्रेम भी प्राप्त किया।

(xiii) सेना नियुक्ति वह स्वयं करता था—वेतन देता था। जागीर प्रथा उसने बन्द कर दी थी।

(xiv) राजनीति में धर्म को फटकने देना मूर्खता है।—यही उसके सिद्धान्त थे।

(३) शेर शाह ने कठिनाइयों की पाठशाला में शिक्षा पाई थी। उस में अपूर्व प्रतिभा और कर्त्तव्यनिष्ठता थी, यही कारण था कि वह एक जागीदार से सम्राट बन गया। वह एक महान राजनीतिज्ञ एवं युद्ध विद्या विशारद था। यही कारण था कि उसने मुगल के ऊदीयमान सूर्य्य को कुछ दिनों के लिए धूमिल कर दिया। हिन्दुओं को भी शासन में स्थान देकर उसने अपनी नीतिज्ञता दिखलाई। वह जितना बड़ा लड़ाकू था उस से भी बढ़कर शासन कर्त्ता। अकबर के सुधारों का मूल स्तंभ शेर शाह के सुधार ही थी। शेर में कला प्रियता भी थी वह स्वयं कवि भी था। उसने अपने सिक्के पर अपना नाम देवनागरी में लिखवाया था। धार्मिक कट्टरता इसमें नहीं थी। जनहित ही इसका लक्ष्य

था। इसकी कला प्रियता प्रसिद्ध है। यह स्वयं भी कवि था। इसने कई नगरों का निर्माण एवं उद्धार करवाया।

इतना होने पर भी शेर शाह में कुछ बुराइयाँ भी थीं। मालदेव से छल प्रपंच करना उसकी कूट नीतिज्ञता के उदाहरण है।

भारतीय इतिहास में शेर खाँ को बहुत ही उन्नत स्थान प्राप्त है। शासन नीति में वह अकबर का गुरु कहा जा सकता है।

प्रश्न ४०:—अकबर की धार्मिक नीति कैसी थी ?

अकबर सुन्नी मुसलमान था। इस्लाम के भी अनेक रूप थे यथा सिया, सुन्नी। अकबर की मां हमीदा बानू बेगम थी जो सूफी थी। बाल्यावस्था से ही अकबर सूफियों के साथ रहा। फैजी और अबुल फजल उसके अतरंग मित्र थे फलतः अकबर का धार्मिक दृष्टिकोण बहुत विराट हो चला। उसने समझा कि दुनियां के प्रत्येक धर्म में कुछ न कुछ आदर्श सिद्धान्त हैं। इस्लाम के अनेक फिरकों से वह ऊब गया था। अतः अकबर ने फतहपुर सिकरी में एक इबादत खाना बनवाया। इस इबादत खाने में प्रत्येक धर्मवालों को आने की आज्ञा दे दी गई। हिन्दू, मुसलिम, जैन, इसाई सभी उस इबादत खाना में जाते थे और सम्राट को निज धर्म से प्रभावित करने की कोशिश करते थे।

सभी धर्मों के सिद्धान्तों को समझ लेने के बाद अकबर ने समझा कि सभी धर्मों का मूल एक है। उसने सभी धर्मों के

पवित्र सिद्धान्तों का चयन किया। इन्हीं सैद्धान्तिक समुच्चय को 'दीन-ए-इलाही' कहा जाता है।

अकबर ने १५७५ ई० में अपने को 'इमाम-ए-आदिल' घोषित किया। उसने कहा कि "धार्मिक मार्ग का अधिकारी भी मैं ही हूँ।' यह सुनकर अनेकों मौलवी विद्रोही बन गए, परन्तु उन लोगों का विद्रोह असफल हुआ।

अकबर में जितनी धार्मिक सुधारवादी प्रवृत्ति थी, उससे कहीं ज्यादे राजनैतिक प्रवृत्ति थी। वह पहले राजनीतिज्ञ था तब धार्मिक सुधारक। वह समझता था कि धार्मिक विभिन्नता किसी भी राष्ट्र (खासकर जो राष्ट्र साम्राज्यवादी हो) के लिए अच्छी नहीं। दीन-ए-इलाही के प्रवर्त्तन का मुख्य ध्येय यही था। टेनीसन आदि पाश्चात्य विज्ञों ने इस धर्म की बहुत प्रशंसा की है, परन्तु स्मिथ ने इस धर्म को बहुत नीच दृष्टिकोण से देखा है।

परन्तु, यथार्थतः यह धर्म आदर्श था, क्योंकि इस धर्म में प्रत्येक धर्म के सुन्दर-सुन्दर सिद्धान्त सम्मिलित थे।

डा० स्मिथ ने लिखा है कि अकबर इस्लाम धर्म से भ्रष्ट हो गया था। क्योंकि उसने नवाज पर पाबंदी लगा दी थी। रोजा रखना बंद करा दिया था, परन्तु नवीन इतिहासिक शोध (खोज) से उपर्युक्त विचार भ्रम मूलक और असत्य सिद्ध होते हैं।

प्रश्न ४१–"अकबर राजपूतों को अपना मित्र बनाकर ही मुगल साम्राज्य की नीव को भारत में मजबूत कर सका" उपर्युक्त विचार को प्रतिपादन करें।

अकबर में राजनीतिक योग्यता बहुत थी। उसने समझा कि भारतवर्ष में राजपूत के सहयोग प्राप्त किये बिना भारत पर सुख से शासन करना असंभव है। राजपूत जन्म जात योद्धा थे। स्वतंत्रता एवं वीरता, उनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी। भारत के वृहद भूखण्ड के अधिपति भी वही थे।

जो राजपूत लड़ाई में परास्त होते थे और अकबर की शरण में आते थे, उन्हें अकबर शरण देता और उनके साथ बहुत अच्छा व्यवहार करता। इतना ही नहीं बल्कि वह इन्हें ऊँचे २ पद भी प्रदान करता।

उसने (अकबर ने) अपनी शादी जयपुर के राजा बिहारीमल की लड़की के साथ कर ली। बिहारीमल, भगवानदास, मानसिंह को अकबर ने बहुत ऊँचा पद दिया। कहा भी है:-

"झाला माना मुगल-दीप का मतवाला परवाना है।"

अकबर ने अपनी दूसरी शादी बीकानेर की राजकुमारी के साथ की और अपने लड़के सलीम (बाद में जहाँगीर) की शादी अम्बेर की कुमारी से कर दी। इस तरह अकबर ने वैवाहिक सम्बन्ध द्वारा राजपूतों का प्रेम प्राप्त किया। राजपूतों (जो मुगल खानदान से सम्बन्ध कर लेते थे) का आदर शाही लोगों में होता

था। यही कारण था कि राजपूतों से अकबर को बहुत मदत मिली।

परन्तु कुछ ऐसे भी राजपूत थे जिन्होंने अपनी इज्जत-बेटी —को मुगलों को देना या अधीनता स्वीकार करना—कबूल नहीं था, जिनमें महाराणा प्रताप सिंह का नाम प्रमुखतम है, जिन्होंने घास की रोटी खाई, जंगल में दिन बिताये पर यवनों की अधीनता कभी स्वीकार नहीं की। हल्दी घाटी की लड़ाई में परास्त होकर भी उसने अपनी हिम्मत न छोडी और अंत में वीर राजपूत राणा प्रताप विजयी हुआ।

इस तरह अकबर ने राजपूतों से मित्रता करके अपनी राजनीतिज्ञता का परिचय दिया। राजपूतों के रक्त से ही मुगल साम्राज्य सुदृढ़ हुआ।

प्रश्न ४२:—अकबर कृत सुधारों का संक्षेप में वर्णन कीजिये।

अकबर बहुत बड़ा सुधारक भी था। उसने बहुत कुछ शेरशाह के सुधारों का अनुकरण किया। अकबर कृत सुधारों को हम निम्न भागों में विभक्त कर सकते हैं।

(i) सामाजिक सुधार।
(ii) शासन सम्बन्धी सुधार।
(iii) आर्थिक सुधार।
(iv) सेना सम्बन्धी सुधार।
(v) धार्मिक सुधार।

(क) सामाजिक सुधार:—

(१) सती प्रथा पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

(२) शाही फर्मान निकाल कर गुलाम बनाना या गुलाम बेचना रोक दिया गया।

(३) बाल विवाह नाजायज कर दिया गया।

(४) "शारीरिक योग्यता सम्पन्न व्यक्ति को कर्त्तव्य करके उपार्जन करना चाहिए।" भिक्षाटन रोकने में यद्यपि वह सफल नहीं हो सका, तथापि बहुत कुछ रुक सा गया।

(ख) शासन सम्बन्धी सुधार:—

(१) अकबर-साम्राज्य बहुत बृहद् था। इसलिए इसने निज साम्राज्य को १५ सूबों में बांट दिया था, जिनका प्रधान सूबेदार होता था। काबुल, लाहौर, मुलतान, दिल्ली, आगरा, अवध, इलाहाबाद, मालवा, गुजरात, बरार, अहमदनगर, अजमेर, बिहार, बंगाल, खानदेश।

(२) जागिरदारों की साम्राज्य-विरोधी भावना को देखकर अकबर ने जागीरदारी प्रथा बंद कर दी। कर्मचारियों को वेतन दिया जाता था।

(३) फतहपुर में उसने एक कार्यालय खोला जहाँ राज्य के विभिन्न विभागों का लेखा-जोखा रखा जाता था।

(४) अकबर ने मनसबदारी पद्धति चलाई। १०००० से लेकर १० तक का मनसबदार होता था। परन्तु १००००

का मनसब केवल शाही घराने के लोगों को ही प्रदान किया जाता है।

(ग) आर्थिक सुधार:—

(१) मालगुजारी बन्दोबस्त करने में अकबर ने शेरशाह से प्रेरणा और टोडरमल से सहायता ली। वह प्रत्येक जमीन के बारे में यह जानकर कि—

(a) जमीन बंजर, पड़ती या उपजाऊ है ?

(b) यदि उपजाऊ है तो कौन-कौन फसल कब, और कितना उत्पन्न होता है।

(c) प्राकृतिक प्रकोप का डर कम है या अधिक।

——मालगुजारी ठीक कर दिया जाता था।

(२) जगह-जगह टकसाल बनवाये गये जहाँ स्टेन्डर्ड सिक्के बनाये गए।

(३) कृषिकार्य्य के लिए सिचाई का इन्तजाम किया गया।

(४) समय-समय पर शाही बैंकों से कृषिकों को ऋण भी प्राप्त हो सकता था।

(घ) सेना सम्बन्धी सुधार:—

(१) अकबर ने एक स्थायी सेना रख ली जो सदा सम्राट के प्रति वफादार रहती थी। अन्य सेनाएं मनसबदारों, सरदारों के अधीन रहती थी।

(२) सैनिकों के घोड़ों पर मुहर लगाई जाती थी। जिससे सरदार अयोग्य घोड़े को रण क्षेत्र में न उतार सकें।

(ङ) धार्मिक सुधार:—

(१) जजिया उठा दिया गया।

(२) "किसी धर्म के माननेवाले को यह अधिकार है कि वह अन्य धर्म को कबूल करे या नहीं।"

(३) 'राज्य कार्य्य एवं शासन में धर्म के आधार पर कार्य्य नहीं किया जायगा।

प्रश्न ४३:-अकबर को 'महान' क्यों कहा जाता है ?

अकबर को महान कहा जाता है। सैनिक के रूप में:—

युद्ध विद्या में वह विशारद था। घोड़ों पर चढ़ना, शिकार करना उसे बहुत प्रिय लगता था। आगरा से अहमदाबाग की यात्रा को ९ दिनों में पूरा कर और वहाँ के विद्रोहियों को दबाकर उसने अपनी सैनिकत्व की पटुता प्रकट की। उसका शारीरिक गठन भी सुन्दर और शक्तिशाली था।

शासन कर्त्ता के रूप में:—

हिमाऊँ ने जिस काँटों के ताज को अकबर को दिया था, उसे अकबर ने अच्छी तरह सभाल लिया। हेमू को परास्त कर १५५६ ई०), मालवा (१५६२ ई०), चित्तौर (१५६८ ई०), गुजरात (१५७३ ई०), काश्मीर (१५८६ ई०) एवं १५७६ में हल्दी घाटी में राणा प्रताप को परास्त कर इसने अपनी सार्वभौम प्रभुता की सूचना दी। देसाई के शब्दों में "अकबर का सम्पूर्ण शासन काल इतना समुज्वल है कि उसके समय का पृथ्वी पर इतना सुधरा हुआ सुखी और बलवान राज्य दूसरा कोई न था।

नीतिज्ञ के रूप में:—

राजपूतों से—हिन्दुओं से—मदत लेकर, शादी कर, एवं राजपूतों का सम्मान और उच्च पद प्रदान कर उसने अपनी राजनीतिज्ञता का परिचय दिया। राजपूत जब तक मुगलों के सहायक रहे तब तक मुगलों का सितारा चमकता रहा।

अकबर की धार्मिक नीति में सुधार से ज्यादे राजनीतिक रूप ही प्रधान है।

धार्मिक एवं सामाजिक सुधारक के रूप में:—

हिन्दुओं पर से जजिया हटा कर एवं सती प्रथा पर प्रतिबन्ध लगा कर अकबर ने हिन्दुओं का प्रेम प्राप्त किया। सुन्नी कट्टरता को त्याग कर उदार एकेश्वरवादी 'दीन इलाही' का प्रवर्तन किया जो सभी धर्मों के सुन्दर सिद्धान्तों का संग्रहित रूप था।

कलाप्रिय एवं साहित्य प्रिय के रूप में:—

स्वयं पढ़े लिखे नहीं होने पर भी कलाकारों एवं लेखकों का जितना सम्मान वह करता था वह आश्चर्य जनक है। विद्वानों के सम्पर्क में रहकर स्वयं भी बहुत चीजों का ज्ञाता हो चला था। वैज्ञानिक अनुसंधानों एवं ऐतिहासिक विषयों में वह ज्यादे भाग लेता था।

कहा भी है—"शस्त्रेण रक्षिते राज्ये, शास्त्र चिन्ता प्रवर्तते।" रामचरितमानस के प्रणेता तुलसी इसी काल के रत्न थे। अबुफजल ने अकबर नामा लिखा। फैजी सा विज्ञ सूफी इसी दरबार था। तानसेन सा संगीत विद्या विशारद और दशवन्त, बसावन, अब्दुसमीद सा चित्रकार अकबर के पास था।

सेसुइट लोगों ने उसकी महत्ता को दर्शाते हुए लिखा है: –

"होशियार और तेज दिमागवाला था; फैसले करने में बड़ा सच्चा, मामलों में बहुत समझदार और इन सब के अलावा रहम-दिल, मिलनसार और उदार था। इन गुणों के साथ उसने ऐसे लोगों की हिम्मत भी थी जो बड़े-बड़े जोखिम के कामों को उठाते हैं और पूरा करते हैं। ·····उसने सिर्फ फौजी और राजनैतिक बातों का ही बल्कि कला कौशल का भी काफी इल्म था·····। जो लोग इसके व्यक्तित्व पर हमला करते थे उन पर भी इस राजा की दया और नम्रता की राशनी फैलती रहती थी·····।[४८]

इन्हीं उपर्युक्त विचारों को मनन करने से पता चलता है कि अकबर सचमुच 'महान' था।

प्रश्न ४४—जहांगीर कौन था ? उसके समय की प्रधान-प्रधान घटनाओं पर संक्षिप्त प्रकाश डालो।

जहांगीर का वास्तविक नाम तो सलीम था, जहांगीर तो उसने विरुद (पदवी) स्वरुप धारण किया था। पिता अकबर की मृत्यु (१६०५ ई०) के बाद पितृ प्रदत्त सिंहासन पर जहांगीर बैठा (१६०५ ई०)। यह आला मिजाजी व्यक्ति था, रसिक था, कवि था, सहृदय था, योद्ध था, राज्य लोभी था, जिसका प्रबल प्रमाण पिता के शासन-समय में ही विद्रोह कर उसने दिए थे।

---

४८ विश्व इतिहास की झलक पं० नेहरू, हिन्दी अनुवाद (स० सा० मं०) में उद्धृत।

सबसे पहले जहांगीर पुत्र खुसरो ने विद्रोह कर दिया। जिसका करण यह था कि खुसरो समझता था कि जहांगीर से मुझे नहीं पटेगी। खुसरो पंजाब चला गया और गुरु अर्जुन से मदत ली परन्तु अन्त में जहांगीर से परास्त हुए। खुसरो जीवन भर कैद में रहा और अंत में खुर्रम (शाहजजाँ) के द्वारा कत्लकर दिया गया। सिक्ख गुरु अर्जुन को एवं उनके उनुयायी जहाँगीर के हुकुम से मार डाले गए (१६०६ ई०)।

मेहरुन्निसा जो गयासवेग नामक ईरानी सदार की लड़की थी, बाल्यकाल से ही जहांगीर के साथ प्रणय लीला कर रही थी परन्तु अकबर को यह पसंद नही था। उसने मेहरुन्निसा की शादी अलीकुली खाँ (शेर अफगान) से कर दी गई उसे वर्दमान (बंगाल) का शासक बना दिया। जहांगीर के मानस में उस कामिनी के प्रति प्रेमज्वाल प्रज्वलित थी ही, जैसे ही वह सुलतान बना उसने शेरअफगान को अपने पास बुलाया परन्तु शेरअफगान ने अस्वीकार किया। इससे क्रुद्ध होकर जहांगीर ने उसकी हत्या करा दी। पहले तो महेरुन्निसा जहांगीर पर बहुत झुकी परन्तु जहांगीर की इस उक्ति ने उसे मुग्ध कर लिया।

दोषी हूँ पर प्रेम अन्ध हूँ, या तो मुझे क्षमा हो। या यह लो तलवार, खुन के बदले खुन बहादो- (नूरजहाँ) १६११ ई० जहांगीर ने मेहरुन्निशा से शादी की और उसे Light of the world ,नूरजहाँ' की उपाधि दी। इसके बाद जहाँगीर कटपुतली बन गया और सम्पूर्ण शासन स्वरूप नूरजहां बन गयी। जहांगीर

को तो उसके कोमल-कंचन-स्पर्श मात्र चाहिए। निकोलो मेन्यूची (Niccolao Manucci) ने अपनी पुस्तक (Storia do Mogor) में लिखा है कि भारत वर्ष मे (Indies) मे इससे ज्यादे आश्चर्यजनक वस्तु नही दिखाई देती जैसा कि जहांगीर पर नूरजहाँ का प्रभाव। उसने सम्राट को शराब पिलाकर प्रेम में फंसा लिया था। नूरजहाँ ने निज पिता गयासबेग को इतिमादुल्ला की पदवी दी और उसने निज सम्बन्धियों को उच्च उच्च पद प्रदान किया।[४९]

जहाँगीर ने प्रताप सिंह पुत्र अमर सिंह को परास्त करने के लिए, अनेक सेनाए भेजी परन्तु अंत में अमर सिंह खुर्रम के द्वारा परास्त हुआ। अमर सिंह को शाही इज्जते मिली (१६१४ ई०) और उनकी मूर्ति आगरें में बनवायी गई। १६१६ में उस्मान खाँ, जो बंगाल का सरदार था ने विद्रोह किया जो अंत मे पस्त हो गया। फिर जहांगीर ने कांगरा दुर्ग को जीत लिया। इसी समय कन्धार इरानियों के द्वारा जीत लिया गया (१६२१ ई०)

जहांगीर दक्षिण भारत को विजित करना चाहता था, परन्तु, अहमद नगर राज्य के मन्त्री मलिक अम्बर ने उसकी दाल न गलने दी। अंत मे खुर्रम ने अहमद नगर से सन्धि कर ली।

---

४९ Muslim rule in India मे बेनी प्रसाद ने उपयुक्त विवरण पर जो आपत्ति किया है वह भी निराधार जचता है।

नूरजहाँ ने अपनी पुत्री की, जिसका जन्म शेरअफगान के वीर्य से हुई थी, शादी जहाँगीर के सबसे छोटे पुत्र के साथ कर दी और सदा उसी को मदत करती। इसे देख कर खुर्रम (शाहजहाँ) अप्रसन्न हो गया और उसने विद्रोह कर दिया। परन्तु प्रधान सेनापति महावत खाँ ने उसे परास्त किया। शाहजहां बंगाल होते हुए दक्षिण गया और मलिक अम्बर से मित्रता कर ली परन्तु अंत में उसे जहाँगीर के सामने झुकना पड़ा।

नूरजहाँ को महावत खाँ से नहीं पटती थी, क्योंकि उसने शाहजादा परवेज का पक्ष लिया था। महावत खाँ इस अपमान को न भूल सका और झेलम के नजदीक जहाँगीर को बन्दी बना लिया। पर नूरजहाँ ने महावत खाँ को भी अपनी मोहनी मूरति पर निछावर कर लिया और जहाँगीर को स्वतंत्र करवा लिया। थोड़े दिन के बाद शाहजादा परवेज की मृत्यु हो गई (१६२६ ई०)। महावत खाँ का प्रेम अब शाहजहाँ को प्राप्त हो गया।

जहाँगीर न्यायी और धर्मान्धता हीन शासक था। प्रजा-हित उसका लक्ष्य था। व्यपार बढ़े इस हेतु चुंगी हटा दिया गया। नसीली वस्तुओं पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। नहर, कूएं चिकित्सालय खुले। इसी काल में हांकिन्स नामक दूत जहांगीर के पास आया परन्तु पुर्तगोजो के साथ जहांगीर का सम्बन्ध अच्छा न रह सका। जेम्स प्रथम की चिट्ठी लेकर क्रमशः एडवर्डस एवं

सर टामसरो (Sir Thomas Roe) आया था। 'रो' ने जहांगीर को मुग्ध कर लिया और उससे अनेकानेक सहायता प्राप्त की।

जहांगीर कीमृत्यु १६२७ ई० मे हुई।

—:०:—

प्रश्न ४५—शाहजहां के समय में घटने वाली प्रधान घटनाओं का संक्षिप्त वर्णन करें।

जहांगीर पुत्र शाहजहाँ १६२७ ई० में गद्दी पर बैठा। बुन्देल खण्ड का विद्रोहः- वीरसिंह बुन्देला की मृत्यु के बाद जुझार सिंह वहाँ का शासक १६२७ ई० में बना। उसने समझा कि शाहजहां हम पर नाराज है और वह बन्देल खण्ड भाग गया और विद्रोही बन गया। जुझार का मन्त्री श्यामदेव बहुत ही योग्य था। बेटवा नदी के किनारे मुगलों और बुन्देलों मे लड़ाई हुई जिसमे जुझार पराजित हुआ। फिर चौरागढ़ लेकर शाहजहां और जुझार सिंह में लड़ाई हुइ। मुगलों ने ओड़छा पर कब्जा कर लिया। जुझार जंगल भाग गया जहाँ उसकी हत्या गोंडों के द्वारा १६३५ ई० में हुई। फिर चम्पत राय बुन्देला ने विद्रोह किया परन्तु वह भी व्यर्थ गया।

खानजहाँ लोदी ने अहमद नगर सुल्तान से मैत्री स्थापित कर ली और मुगलों से विद्रोह कर दिया। मुगल फौज को उसने खूब तबाह किया परन्तु अंत मे वह स्वयं तबाह हो गया।

दक्षिण शाहजहाँ दक्षिणी राज्यों को नष्ट करने में सबसे

सफल हुआ। खानजहाँ लोदी को अहमद नगर सुल्तान ने मदत दी थी, अतः पहले अहमद नगर पर ही आक्रमण किया गया (१६३० ई०)। अहमदी मन्त्री फतह खाँ ने अहमदी सुल्तान के साथ कृतघ्नता का व्यवहार किया। दौलताबाद पर मुगलों का अधिकार हो गया। और निजामशाही वंश का अन्तिम सुल्तान ग्वलियार दुर्ग में भेज दिया गया।

गोलकुण्डा के कुतुबशाहियो ने शाहजहाँ की अधीनता स्वीकार कर ली। बीजापुर ने अधीनता स्वीकार न की। शाहजहाँ ने बीजापुर को नष्टभ्रष्ट कर दिया और बीजापुर सुल्तान आदिलशाह को सन्धि करने के लिए बाध्य किया। इस सधि के मुताबिक बीजापुर सुलतान ने मुगलों की अधीनता मान ली और कर देना स्वीकार किया। शाहजहां ने दक्षिण प्रदेश का सूबेदार औरगजेब को बना दिया।

मध्येसिया

मध्य एसिया के साथ मुगलों का प्राचीन सम्बन्ध रहा है। इस सम्बन्ध के कारण एवं वहाँ की आन्तरिक स्थति विकट देख कर शाहजहाँ ने मुराद के नायकत्व एक प्रबल सेना भेजी जो बल्ख में गया। इसके बाद औरेंगजेब वहाँ का नायक बना। इस देश विजय का प्रभाव कुछ न पड़ा।

पुर्तगीजों के साथ

पुर्तगीजों के साथ शाहजहाँ का व्यवहार उत्तम नही रहा। इसका कारण यह था कि पुर्तगीजों ने दासों का व्यापार करना

शुरु किया था जो मुगलों को नागवार मालूम होता था।

(१) लोगों को क्रिस्तान बनने के लिए मजबूर करते थे।

(२) दुर्ग बनवा रहे थे और अपनी सैनिक शक्ति प्रबल कर रहे थे।

(३) पुर्तगीजों ने शाहजहाँ की पत्नी मुमताज की दो दासियों को बन्दी बना लिया था।

शाहजहाँ ने कासिम खाँ (बंगाल गवर्नर) को हुक्म दिया कि इन विदेशियों को निकाल दो। ऐसा ही हुआ (१६३१ ई०) १६३२ ई० में हुगली जीत लिया गया। पुर्तगीजों को साथ शाहजहाँ का व्यवहार निर्दयता पूर्ण रहा।

शाहजहां की मृत्यु जेल में हुई (१६६६ ई०) (क्यों) ?

—:o:—

प्रश्न४६ —शासक के रूप में अकबर ने क्यों सफलता पाई और औरंगजेब ने क्यों असफलता ?

सफल शासक होने के लिए शासक में इन गुणों का होना परमावश्यक है (क) दूरदर्शी राजनीतिज्ञ होना (ख) कला प्रिय होना (ग) सैनिक योग्यता सम्पन्न होना (घ) धार्मिक कट्टरता से हीन होना (ङ) धन एवं शक्ति का संचय करना (च) प्रजा का प्रेम भाजन बनना। उपर्युक्त सिद्धान्तो पर आलोचना करने के बाद हम बता सकेंगे कि अकबर और औरगंजेब ने इन सिद्धन्तो पर कहाँ तक अमल किया।

अकबर	औरंगजेब
(१) अकबर एक दूरदर्शी राजनीतिज्ञ था। राजनीति शास्त्र का सबसे प्रथम और प्रसिद्ध नियम यह कि शासक को चाहिए कि शत्रु को मित्र बना ले या उसे मिट्टी पलीद कर दे। प्रबल राजपूतों को मित्र बना कर एवं मित्र न बनने वाले आदिलशाह को मिट्टी में मिला दिया। दीन-इलाही उसकी राजनीतिज्ञता का प्रबल सबूत है।	(१) औरंगजेब न दूरदर्शी था न राजनीतिज्ञ। यदि वह दूरदर्शी होता तो मराठों को यों फूलने फलने नहीं देता और यदि राजनीतिज्ञ होता तो राजपूतों से हिन्दुओं से बैर न मोल लेता। उनपर जजिया न लगाता और प्रबल मराठा शक्ति से झूझ झूझ कर सम्पूर्ण जीवन और शक्ति बरबाद न कर देता।
(२) शासक को चाहिए कि वह साहित्यिकों, कलाकारों को मदत दे, आदर दे क्योंकि युग और काल के मुख ये ही होते हैं। औरंगजेब ने कला-कारों को इज्जत दिया साहित्य-कारो को ऊँचा पद दिया।	(२) औरंगजेब में कला प्रियता नहीं था। वह साहित्यकारों को इज्जत नहीं देता था। साहित्यिकों ने मुसलमान विरोधी भावनाओं का संचार अपने साहित्यिक माध्यमों में किया।

अकबर।

(३) शासक को सैनिक योग्यता सम्पन्न होना चाहिए। अकबर प्रबल सेनापति था, युद्ध विद्या विशारद था, वह तैरना खूब जानता था।

(४) शासक को धर्म से क्या लेना देना है? खासकर उस देश में जहाँ शासक के धर्म से प्रजाओं का धर्म दूसरा है। अकबर ने धार्मिक उदारता दिखलाई। जनता ने इसका स्वागत किया।

(५) शासक को चाहिए कि वह अपने कोष को सदा भरा रखे जो युद्ध या शांति के समय काम आवे। अकबर ने सदा अपना कोष पूरा रखा युद्ध काल में व्यय किया। कृषि आदि जनोपकारक कार्य्य में व्यय किया।

(६) अकबर जनता का सदा स्नेह भाजन रहा क्योंकि जनहित उसका उद्देश्य था।

औरंगजेब।

(३) औरंगजेब में इस योग्यता की कमी थी। वह पालकी पर चढ़ के युद्ध स्थानों में जाता था वह युद्ध विद्या में दक्ष नहीं था।

(४) औरंगजेब में कट्टरता भरी थी। उसने फर्मान के द्वारा पूजा पाठ रोक दिया। हिन्दुओं पर जजिया लगाया। प्रजा बिगर उठी। शिवाजी उसका नेता बना।

(५) औरंगजेब ने केवल युद्ध में ही अपने कोष को नष्ट कर डाला। अंत में उसका खजाना खाली हो गया। यह इसकी व्यय अयोग्यता का प्रबल प्रमाण है।

(६) जनता को औरंगजेब ने सदा तबाह किया। फलतः जनता औरंगजेब का नाश चाहती थी।

अकबर में उपर्युक्त योग्यता थी, औरंगजेब में उपर्युक्त अयोग्यता थी। योग्य व्यक्ति ही सफलता पाते हैं, फलतः शासक के रूप में औरंगजेब असफल रहा।

प्रश्न :—४७ शिवाजी कौन थे? "मामूली जागीरदार के घर में उत्पन्न होकर वेह एक छत्र राजा होकर मरे"—कहना क्या ठीक है?

शाहजी के पुत्र शिवाजी का जन्म १६२७ ई० में जुन्नर-मण्डल के शिवनेरी नामक किला में जीजाबाई के गर्भ से हुआ था। इनके पिता जब बीजापुर की सेवा ग्रहण कर बीजापुर को चले तो शिवाजी का अभिभावक उन्होंने दादा कोण्डदेव नामक महाराष्ट्री ब्राह्मण को बना दिया। जीजाबाई महत्वकाँक्षिणी स्त्री थी। जीजाबाई, शिवाजी को बराबर राजपूतों की वीरोचित कहानियाँ कह कह कर शिवाजी की धमनी में देशप्रेम संचार करती थी, तो कोण्डदेव के साथ रहकर शिवाजी राजनीति-विद्या, शस्त्र-विद्या, युद्ध-विद्या सीखते थे। शिवाजी के कानों में सदा यही कही जाती थी— "तुम्हारी मातृभूमि यवनों के अत्याचारों से त्रस्त है, तुम्हारी जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी सम मातृभूमि मुसलमानों के पदतल से मर्दित है।" शिवाजी को साथी भी बाजी सर्जेश, पासलकर, तानाजी से वीर मिले थे। शिवाजी ने मावलियों की एक प्रबल छापेमार सेना संगठित की।

सब से पहले शिवाजी ने अपनी जागीर को सुरक्षित किया। १६४६ ई० में शिवाजी ने बीजापुर के पहाड़ी किला तोरण पर अधिकार लिया। १६४७ ई० में शिवाजी ने रायगढ़ पर कब्जा कर लिया। चाकन के प्रधान फिरंगोजी बरसाला ने शिवाजी को चुनौती दी, शिवाजी ने उसे पराजित कर उस का गर्व खर्व किया। १६४७ के दिसम्बर में कल्याण प्रान्त के सूबेदार को परास्त किया। सीदी लोगों को परास्त कर कोंकन के अनेक किलों को जीत लिया। शिवाजी फिर बीजापुर की ओर मुड़ा और दन दन कई किलों को जीत लिया। इसपर क्रुद्ध होकर बीजापुर सुलतान अली आदिल शाह ने बाजीराव घोरपड़े की सहायता से शाहजी को कैद कर लिया (१६४८ ई०)। परन्तु शिवाजी ने शाहजहाँ की मदद से अपने पिता को छुड़वा लिया (१६-५-१६४९ ई०) और अब वह (शिवाजी) मुगल साम्राज्य पर भी छापे मारने लगा। इस लूटमार से बीजापुर का सुलतान बहुत तंग हुआ।

बीजापुर सुलतान ने शिवाजी को दमन करने के लिए अफजल खाँ को, जो सह्याद्रि प्रान्त का शासक था, को भेजा। शिवाजी ने अपने वकील गोपी नाथ (राव ?) को भेजकर अफजल खाँ से मुलाकात का स्थान प्रताप गढ़ के पहाड़ी के नीचे ठीक करा लिया। शिवाजी और खाँ एकान्त में मिले। खाँ ने शिवाजी की हत्या करनी चाही परन्तु

शिवाजी ने बघनखे से उसकी हत्या कर दी और छिपी हुई शिवाजी की सेना ने खाँ की सेना को परास्त कर दिया (२४-११-१६५९ ई०)।

१६६० में फाजिल खाँ और सीदी जौहर ने शिवाजी को पन्हाला में घेरकर मार डालना चाहा। परन्तु शिवाजी किसी तरह पन्हाला से निकल गए। जबतक शिवाजी विशालगढ़ तक नहीं पहुंचे तबतक बाजी देशपान्डे ने बीजापुरी सेना को रोक रखा और इस प्रयास में उसे अपनी जान भी खोनी पड़ी।

शिवाजी की शक्ति देखकर बीजापुर सुलतान ने शिवाजी से संधि करली (१६६२)। अब शिवाजी ने मुगलों की ओर आँख फेरी। नेताजी पालकर ने मुगलों के कई किलों को जीत लिया (१६६२)। इस पर क्रुद्ध होकर औरङ्गजेब ने अपने मामा शाइस्ताखां और उसके सहायक स्वरुप में जशवन्त सिंह को भेजा। शाइस्ताखां ने पूना को दखल कर पूना में खीमां डाल दी। शिवाजी ने ५—४—१६६३ की रात को अचानक शाइस्ता खां की छावनी पर छापा मार दिया और उसे भगा दिया। फिर शिवाजी ने सूरत जीत लिया (१६६४)।

औरङ्गजेब ने तब जशवन्तसिंह और मुअज्जम को भेजा। ये भी अफल रहे। अंत में जयसिंह और दिलेर खां भेजा गया। जयसिंह ने कई किले जीते। अंत में शिवाजी को मुगलों के साथ

पुरन्दर की संधि करनी पड़ी (१३—६—१६६५)। जयसिंह के कहने पर शिवाजी रामसिंह (जयसिंह के पुत्र) के साथ दिल्ली गये। जहां उनका अपमान हुआ और बंदी बना लिये गए। परन्तु १९—८—१६६६ को मिठाई के टोकरे में बंद होकर भाग निकले। शिवाजी ने चुप्पी साध ली परन्तु १६६९ में जब औरङ्गजेब ने हिन्दू मंदिर ताड़ना शुरू किया तो शिवाजी ने १६७० में युद्ध छेड़ दिया और कई किलों को जीता।

अंत में रायगढ़ में शिवाजी ने ६ जून १६७४ में अपना आभिषेक कराया। उसने राज्याभिषेक के समय 'शक' नामक संवत भी चलाया। उसने "क्षत्रिय कुलावतंस शिवछत्रपति महाराज सिंहासनाधीश्वर" का पदवी ली। शिवाजी ने १६७८ में पिता की जागीरों को (कोलार, बंगलोर, उसकोटा, बालापुर, सीरा) अपने भाई व्यंकोजी को दे दिया।

प्रहलाद निराजी को गोलकुन्डा में दूत बनाकर भेजा। शासन पेशवा मोरे पिंगले को सौपकर शिवा दक्षिण चला और अनेक राज्यों को जीतता हुआ १६७८ ई० में आपस आया। इनकी मृत्यु ५—४—१६८० में हो गई।

प्रश्न ४८ क्या शिवाजी को महान कहना उपयुक्त है ?

शिवाजी का स्थान भारतवर्ष के आदर्श महापुरुषों में है भला जिसने जननीजन्मभूमि की स्वतंत्रता के लिये प्राण को हथेली में रखकर प्रयास किया, उसे महान कैसे नहीं कहा जा सकता है।

(अ) उसमें सदाचारिता कूट कूट कर भरी थी। उसके

चरित्र पर कलंक के टीके कभी न लगे।

(आ) हिन्दू धर्म को माननेवाला होकर भी उसने किसी धर्म को नीच नहीं समझा। धार्मिक कट्टरता उसको छू तक नहीं गई थी। लूट में पाये हुए कुरान की प्रतियों को वह मुसलमानों को लौटा देता था।

(इ) वीरता उसमें कूट-कूटकर भरी थी। उसकी युद्ध कला की प्रवीणता एवं राजनीति योग्यता स्तुत्य है।

(ई) दीनों के प्रति उसका प्रेम आदर्श था। परदुःखकातरता उसमें पूर्ण थी। यही कारण था कि आबाल वृद्ध के प्रेम का वे मालिक था।

(उ) उसने ऐसी शासन प्रणाली की स्थापना की, जिसमें जनता-कल्याण को ही प्रमुखता दी गई।

(ऊ) स्वयं प्रवीण विज्ञ नहीं होने पर भी विद्या, कला के प्रति उसका प्रेम अपूर्व था। उसने सिक्कों पर भी श्लोक खुदवाये थे —

प्रतिपच्चन्द्र रेखेव वर्धिष्णुर्लोक वन्दिता।
शाह सूनोः शिवस्यैवा मुद्रा भद्राय राजते॥

(ए) उसकी प्रतिभा अपूर्व थी। असंगठित मराठा शक्ति को संगठित करना एवं औरंगजेब जैसे प्रबल पराक्रमी शासक को नाकोदम करना साधारण प्रतिभा वालों का काम नहीं हो सकता।

औरंगजेब ने भी शिवाजी की भूरि २ प्रशंसा की है। प्रसिद्ध ऐतिहासिक कैफी खाँ ने भी शिवाजी की महत्ता को स्वीकार किया है।

फिर भी शिवाजी को unmixed good नहीं कहा जा सकता। सामाजिक कुरीतियों को शिवाजी दूर न कर सके। उनकी युद्ध-नीति से साधारण जनता को भी कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती थी।

प्रश्न ४६—शिवाजी कृत शासन सुधारो का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

शिवाजी की पादशाही पर कितने इतिहासज्ञो का कथन है कि वह केवल हिन्दुओं पर ही आश्रित थी। ऐसी बातें कहना कथक की जड़ता है। शिवाजी की सरकार में अन्य जातियों का भी हाथ था। राज्य की सम्पूर्ण सत्ता का स्त्रोत राजा समझा जाता था जिसकी सहायता के लिए १ मन्त्रिमन्डल होता था, जिनमें ८ सदस्य होते थे मन्त्रिमन्डल का प्रधान, पंत प्रधान (पेशवा) कहलाता था। प्रत्येक मन्त्रियों के हाथों में शासन के एक-एक विभाग थे।

न्यायधीश एवं पण्डित राव को छोड़कर अन्य मन्त्री सैनिक सेवा भी करते थे। पद परम्परागत नहीं होते थे।

ग्राम्य शासन पंचायत के द्वारा होता था। पंचायत को बहुत अधिकार था। पंचायत का प्रधान पटेल कहलाता था।

जिले का शासन भी राजा से नियुक्त व्यक्ति करता था, जिसको मदद देने के लिए ८ मन्त्रियों की एक सभा होती थी।

मालगुजारी का शिवाजी ने सुन्दर बन्दोबस्त कर दिया था। जमीन की पैदावार के अनुसार मालगुजारी की सरह ठीक कर दी गई। मालगुजारी राज कर्मचारी (जैसे कमविशदार, महालकरी आदि) वसूल करते थे। मालगुजारी की सरह ३ होती थी।

शिवाजी के पास एक अच्छी सेना थी। शिवाजी के पास सवार पैदल एवं जल सेना थी। सवार सेना के भी २ भेद थे बारगीर और शिलेदार। शिलेदार का पद ऊँचा और सरकार द्वारा घोड़े एवं हथियार उन्हें मिलते थे परन्तु बरगीरों को यह सुभीता प्राप्त नहीं था। पैदल सेना की प्रचुरता थी। शिवाजी के पास एक सुन्दर जहाजी बेड़ा था। सब मिलाकर १६० या १७० जहाज थे। जहाजी बेड़ा का मुख्य कान्होजी आँगरे था।

सभी लोग किलोंको माता के समान इज्जत देते थे—और उसकी रक्षा के लिए प्राण तक दे देते थे।

अनुशासन एवं नियम बहुत कड़ा था। साधारणतया शिवाजी का शासन आदर्श था।

—०—

प्रश्न ५० —: मुगलकालीन साहित्य और कला के बारे में क्या जानते हैं ? संक्षेप में लिखें।

साहित्यः— मुगलकालीन साहित्यिक दशा भी बहुत उन्नत थी। इस काल में हिन्दी, फारसी, आदि प्रान्तीय साहित्यों का अपूर्व विकाश हुआ। साहित्य प्रेमी अकबर, काव्य प्रेमी जहांगीर, और सौंदर्यप्रेमी शाहजहां के दरबार में साहित्य की उसी तरह उन्नति हुई जिस तरह की उन्नति यूरोप में रिनार्सेंस के समय, चीन में 'चिन' वंश के समय, लङ्का में तिष्य के समय में हुई थी।

हिन्दी साहित्यः— प्रेममार्गी नूर मुहम्मद ने 'इन्द्रावती' लिखकर दिल्ली बादशाह मुहम्मदशाह का गुण-गान किया। रामभक्ति शाखा में उत्पन्न होनेवाले कवि तुलसी इसी युग में हुए जिन्होंने रामचरितमानस, कवितावली, गीतावली, विनय पत्रिका आदि पुस्तकों की रचना कर हिन्दी कोष को बढ़ाया। इसी काल में स्वामी अग्रदास हुए, और नाभादास ने भक्तमाल की रचना की। प्राणचन्द चौहान ने 'रामायण महानाटक' की रचना की।

कृष्णभक्तिशाखा में उत्पन्न होने वाले प्रतिनिधि कवि सूर जिन्होंने सूरसागर लिखी, इसी युग में हुए। सूर, कृष्णदास, परमानंदास, कुम्भनदास, नन्ददास, चतुर्भुजदास, छीतस्वामी गोविन्दस्वमी, इसी युग के कवि थे।

नन्द, चतुर्भुज, छीत युत, गोविन्दस्वामी धार।

सूर, कृष्ण, परमानन्द, कुम्भनदास, विचार ॥ (सं० हि० सा०)

गिरिधर पर मुग्ध होनेवाली मीरा; "या लकुटी और कामरिया पर राज तिहू पुर को तजि डारै,"— कहनेवाले रसखान भी इसी युग के रत्न थे।

रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि केशवदास, चिन्तामणि त्रिपाठी, बिहारी, मतिराम, भूषण, बृन्द, वैताल, गुरुगोविन्द सिंह एवं "नैनन में जो सदा बसते तिनकी अब कान कहानी सुन्यौ करैं" कहने वाले आलम भी इसी युग की सुषमा को बढ़ाते हैं।

फारसी साहित्य:— फारसी साहित्य की प्रगति क्यों नहीं होती इस युग में ? कहा भी है "शस्त्रेण रक्षिते राज्ये शास्त्र चिन्ता प्रवर्वते।" अबुलफजल ने अकबरनामा और आईने अकबरी का प्रणयन किया। जहाँगीर के समय का गयासबेग "फारसी का उद्भट विद्वान" था। नकीब खाँ भी इसी समय हुआ था। शाहजहाँ को जितना स्थापत्य कला से प्रेम था उतना साहित्यकला से नहीं, फिर भी अब्दुल हमीद लाहौरी ने 'बादशाहनामा' की रचना की और इसी काल के दूसरे प्रमुख इतिहासकार इनायत खां ने 'शाहजहांनामा' की रचना की। औरङ्गजेब को "न तो कला और साहित्य से प्रेम करता था और न उसे अपने पिता शाहजहां की तरह शिल्पकला से प्रेम था।"†

† वि० इति० की भू०—नेहरु पृ० ४४७

प्रान्तीय साहित्य

बङ्गला:— प्रान्तीय भाषाओं में बङ्गला का स्थान प्रमुखतम था। मिर्जा हुसैन अली ने देवी स्तुति के माध्यम से इस भाषा का प्रचार किया तो काशीराम ने काकलीमयी वाणी से इस भाषा को समृद्ध किया।

मराठी:— इस साहित्य की भी खूब उन्नति हुई। शिवाजी की छत्रछाया में पलकर इस साहित्य ने अपना पूर्ण विकास किया। शिवाजी के गुरु रामदास, और तुकाराम जो सुधारक, कवि, एवं संत थे, उन्होंने इस साहित्य को प्रगति पथ पर बढ़ाया।

गुजराती:— भाषा की भी उन्नति हुई। तामिल, तैलगू, आदि 'द्रविड़कुलीय' भाषाओं का भी विकाश हुआ।

उपर्युक्त साहित्यकारों का विकाश केवल मुगल दरबार में ही नहीं हुआ था बल्कि देश के अन्य राजाओं महाराजाओं के दरबार में भी हुआ था।

कला

मुगलकालीन कला को हम निम्न भागों में विभक्त करके विचार करेंगे:—

(i) स्थापत्य कला।

(ii) चित्रकला।

(iii) मूर्तिकला।

मुगलकालीन स्थापत्यकला अतीव उच्चता को प्राप्त थी। यह युग इस कला के लिये अद्भुत युग (Glorious period of Indian architecture)† था। अकबर ने फतहपुर शिकरी नामक नगर निर्मित करवाया जो उसकी कला प्रियता का सुन्दर उदाहरण है "(A maggnificent example of this enlightened tendency. †") और जो "लन्दन से भी ज्यादे वैभव पूर्ण था "बादशाह सलामत आलीशान इमारतों के नकशे सोचते हैं और दिमाग के काम को पत्थल और मिट्टी का जामा पहना देते हैं।"*

जहाँगीर और शाहजहाँ का दरबार फ्रान्स सम्राट लुई की राजधानी से ज्यादे वैभव पूर्ण था। इतमादौला की समाधि पर का मकबरा प्रसिद्ध है। जहाँगीर ने निशात बाग बनवाया जो काश्मीर में है।

शाहजहाँ जिसे "सुन्दरता का स्वप्न" देखने वाला कहा जता है, के समय में, दिवाने खास, दिवाने आम, लालकिला, ताजमहल, का निर्माण हुआ। "शाहजहाँ के राजत्वकाल में स्थापत्यकला अपने चरम ऐश्वर्य पर पहुँच गई थी। उसकी दृढ़ रसिक व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति का सफल माध्यम संगमर्मर

---

† Introduction to India. F. R. Moraes and R stimson.

* अबुल फजल, उद्धृत वि० की भू०.

की रेसमी कठोरता ही हो सकती थी।"† कहा जाता है कि ताजमहल की रूप-रेखा को पर्सियन, इटालियन और फ्रान्सीसी कलाकारों ने तैयार किया था परन्तु सच तो यह है कि वह मुगलों की इच्छा थी और भारतीय कलाकारों की प्रतिभा और कलाकारिता। नवीन दिल्ली को सुन्दर रुप देनेवाला शाहजहाँ ही था। लालकिला को इसने १६३९ से १६४८ के बीच में तैयार करवाया था। मोरसिंहासन जिसे नादिरशाह ले गया था को इसी सम्राट ने बनवाया था।

" The principal mosque at Hyderabad is the mecca masjid which can acommodate ten thousand worshpipers commenced by Mohd. Kutubshah. It was completed by Aurangzeb after his victory over the last king of the Kutubshahi dynasty. Constructed entirely of stone, the building offers a fine example of Stucco decoration in exquisite Indian polished plaster, adorned by Fresco or gesso enrichment."

Hyderabad

Issued by—The Tourist

Traffic Branch Ministry of Transport

New Delhi. Page 3.

---

† रीतिकाव्य की भूमिका से उद्धृत। —ले० नरेन्द्र

औरङ्गजेब ने भी मोती मस्जिद को १६५६ ई० में बनवाया था।

चित्रकला

इस काल में चित्रकला की भी खूब उन्नति हुई। बाबर हुमायूं दोनों कला प्रिय थे। अकबर के दरबार के त्रिरत्न चित्रकार (ख्वाजा अबसमद, फर्रुख, अली) प्रसिद्ध है। भारतीय चित्रकार बसावन और दशवन्त तो प्रसिद्ध है ही। जहाँगीर नूरजहाँ के वियोग में चित्र बनाया करता था। अबुलहसन, गोवर्द्धन सा चित्रज्ञ इसी के दरबार में था।

मूर्तिकला

मुगलों के दरबार में इसकी प्रगति नहीं हुई परन्तु देश के राजपूत राज्यों में इसकी प्रगति खूब हुई। शिवाजी ने कई मूर्ति बनवाये थे।

प्रश्न ५१ मुगलकालीन सामाजिक धार्मिक और आर्थिक दशा के बारे में आप क्या जानते हैं ?

सामाजिक दशा

इस काल में कुछ कट्टर हिन्दुओं और मुसलमानों को छोड़कर सामाजिक एकता उत्पन्न हो गई थी। अकबर ने हिन्दुओं से शादी कर ली परन्तु किसी भी हिन्दू ने मुगलों को लड़की को लेना स्वीकार नहीं किया। इस काल के समाज को हम इस दृष्टिकोण से देख सकते है।

(i) राजनैतिक दृष्टिकोण।
(ii) धार्मिक दृष्टिकोण।

राजनैतिक दृष्टिकोण

समाज ३ वर्गों में विभक्त था। पहला सरदारों का वर्ग द्वितीय मध्यम वर्ग (बर्जुआ), तृतीय कृषक आदि।

सरदारों के वर्ग में भी २ तरह के लोग थे। एक तो भारतीय सरदार और दूसरे वे विदेशी जो इरान, अफगानिस्तान, अरब से आकर मुगल दरबार में रह गये थे। इनका जीवन सुखमय था। राजमहलों में इनके दिन कटते थे, सुख एवं शान्ति की बृहदता के कारण ये लोग कला-प्रिय और ऐश्यासी हो गये थे। किसानों के बल पर इनका जीवन चलता था। चूकि ये शक्तिशाली और धनी होते थे, इसलिये समाज में इनका स्थान प्रमुख होता था। अनेकों स्त्रियों से शादी कर सकते थे कबाब और शराब में ये लोग मस्त रहा करते थे।

मध्यम वर्ग कलाकारों साहित्यकों एवं छोटे-छोटे जिमिन्दारों का था। जिनका जीवन सुखमय नहीं तो दुःखमय भी नहीं कहा कहा जा सकता है। कवियों कलाकारों का जीवन ज्यादेतर दरबारों एवं सरदारों के साथ बीता करता था, फलतः इनका जीवन भी सुखमय ही रहता था।

कृषकों, एवं मजदूरों की हालत समाज में कोई अच्छी नहीं थी। ये उपर्युक्त दोनों वर्गों के पालनकर्त्ता तो अवश्य थे परन्तु अपने को पालन करने में असमर्थ थे। सरकारी कर्मचारियों की लूट, बेगारी, एवं यदा कदा अकाल पड़ने पर उत्पन्न होनेवाली तबाही से ये त्रयस्त रहते थे।

धार्मिक दृष्टिकोण

इस दृष्टिकोण से समाज के प्रमुख ३ भाग थे:—
(i) मुसलमानों का (ii) समन्वयवादी हिन्दुओं का (iii) कट्टर हिन्दुओं का।

मुसलमानों ने हिन्दुओं से शादी कर ली। इन लोगों का स्थान समाज में इसलिए प्रमुख रहता था चूंकि जनता इन लोगों को विजेता समझती थी। धीरे २ इस भावना का लोप हुआ और समत्ववादी विचारों का उदय हुआ। आपस में शादी विवाह हुए, अनेक सुधारकों ने समन्वय कराने का प्रयत्न किया और हिन्दुओं मुसलमानों के बीच की खाई बहुत कुछ पाट दी गई।

परन्तु जो हिन्दू कट्टर थे वे अलग ही बने रहे। वे मुसलमानों को म्लेच्छ कहते थे।

इस काल में बालविवाह खूब चली थी। सती प्रथा एकदम नहीं मिटी थी। महाराष्ट्र में तो विधवा विवाह भी होता था। शासन कार्य में स्त्रियाँ भी भाग लेती थी। मुसलमानी समाज में चाँदबीबी और हिन्दुओं में दुर्गावती प्रसिद्ध है।

धार्मिक:— कुछ कट्टर हिन्दुओं को छोड़कर धार्मिक एकता सी स्थापना हो गई थी। राणा कुम्भा के स्तंभ पर मुसलमानी देवताओं का नाम खुदा है। हिन्दू लोग मुसलमानों के धार्मिक कार्यों में यदा कदा भाग लेते थे और मुसलमान भी हिन्दुओं के धार्मिक कार्यों के प्रति प्रेम भाव रखते थे। तजिया आदि

मुसलमानों के उत्सव में हिन्दू भी भाग लेते थे। अकबर ने गो कसी रोक दी थी। "अकबर ने जैनाचार्य हीरविजयसूरि और जयचन्द सूरि के अनुरोध से साल में कुछ नियत दिनों के लिए जीव हिंसा मात्र बन्द कर देने का फरमान जारी कर दिए थे। इस बात का उल्लेख प्रसिद्ध इतिहास लेखक बरदाऊनी ने भी किया है और प्रशास्ति नामक महाकाव्य में भी यह बात लिखी हुई है।[1]

सिक्ख धर्म की भी प्रगति हुई बन्दा बैरागी, गुरु अर्जुन आदि इस सम्प्रदाय के मुख्य आचार्य थे। इसी काल में अमृतसर में उनका स्वर्ण मन्दिर निर्मित हुआ।

बौद्ध और जैन धर्म की प्रगति नहीं हुई। जैन धर्म, कुछ हिस्सों में प्रगति करता रहा परन्तु इन दोनों धर्मों का स्थान गौण ही रहा।

अकबर का 'दीन-इलाही'। उसके मरने के साथ ही लुप्त हो गया परन्तु उसके विचार अन्य धर्मों को प्रभावित करते रहे।

आर्थिक दशा:- मुगल कालीन भारत की आर्थिक अवस्था बहुत अच्छी थी। इस काल में जितने भी विदेशी भारत आये उन्होंने इस देश की वैभव की प्रशंसा खूब की है। फादर एनथोनी मान्सरेट (Father Anthony Monserrate) ने भूमि के बारे में लिखा है कि भूमि आश्चर्य जनक उर्वर और वैभव पूर्ण है कृषि के लिए भी और पशु पालन के लिए भी।" इसने

---

1. भा० भा० पृ० ७८।

अकबर को सबसे वैभव पूर्ण प्राच्य सम्राट (the richest oriental king) बतलाया है। टैवेर्नियर ने जो मुगल हरम की वैभवों का वर्णन किया है वह आश्चर्य पूर्ण है।

सम्राट के कला प्रेमी होने के कारण कलाकारों, व्यापारियों, एवं कवियों का जीवन भी सुखी हो गया था।

कृषि की अवस्था बहुत उन्नत इसलिए थी कि सम्राट भी किसानों को समय-समय पर कर्ज देते थे, मदद करते थे, सिंचाई प्रबंध में सहयोग देते थे।

साधारण जनता की अवस्था उतनी अच्छी नहीं थी। सम्राट के अतिव्ययी हो जाने का बोझ जनता पर पड़ता था। देश का वैभव जनता के रक्त की ही लालिमा थी। ताजमहल जिस "काल के कपोल पर स्थित नयनबिंदु और पृथ्वी के एक मात्र स्वर्ग दीवाने खास"† के बनाने में जो धन व्यय हुआ उसका परोक्ष भार जनता को ही वहन करना पड़ा।

प्रश्न ५१—मुगल साम्राज्य के पतन के क्या क्या कारण थे? संक्षिप्त विश्लेषण कीजिए।

मुगल साम्राज्य के पतन का प्रमुख निम्नलिखित कारण हैं।

(क) मुगलों का शासन साम्राज्यवादी निरकुश राज्यतंत्र था। यह ज्ञातव्य है कि निरंकुश राज्यतंत्र की हस्ती तभी तक रहती है जब तक की राजा या सुलतान के हाथों में फौलादी ताकत हो। अकबर के बाद के सम्राटों

† रीतिकाव्य की भूमिका" ले० नरेन्द्र।

में कायरता की हद हो गई। जहाँगीर को तो मदिरा ही चाहिए थी। जहाँ बाबर, अकबर घोड़े पर युद्ध करने जाते थे वहाँ औरंगजेब ने पालकी पर जाना शुरु किया। युद्ध क्षेत्र में सैनिकों को चुस्त पोशाक पहनना चाहिए, जिसका मुगलों में पूर्णतया अभाव था।

(ख) जागीरदारी प्रथा किसी तरह अच्छी नहीं कही जा सकती। जागीरदारों के हृदय से स्वामि भक्ति की भावना नष्ट हो जाती है और स्वार्थ परता की ही प्रधानता हो जाती है। औरंगजेब ने जागीरदारी प्रथा लागू कर मुगल साम्राज्य के लिए अच्छा न किया।

(ग) शासक यदि धर्मान्ध हो तो उसकी विफलता ध्रुव ही समझिए। अकबर के बाद के सभी साम्राट धर्मान्ध थे। औरंगजेब ने तो और हद कर दी। जनता बिगर उठी—जहां तहां विद्रोह होने लगे।

(घ) औरंगजेब की राजनीतिक अयोग्यता ने साम्राज्य के पतन में बहुत सहयोग दिया। राजपूत-जो स्वाभिमानी, वीर और शक्तिशाली थे, उनका अपमान कर उनका विश्वास खोया। जो राजपूत इस साम्राज्य के मेरुदण्ड थे, उनकी सहायता बिना साम्राज्य की वही दशा हुई जो दशा बिना मेरुदण्ड (vartibræ) के शरीर की होती है।

(ङ) औरंगजेब की नीति हीनता का सब से सबल प्रमाण यह हुआ कि उसने बीजापुर और गोलकुण्डा को बर बाद कर दिया। यदि वह ऐसा न करता तो उठती हुई मराठा शक्ति को पहला टक्कर बीजापुर एवं गोल-कुण्डा से लेना पड़ता न कि मुगल साम्राज्य से। औरंगजेब ने ऐसा करके एक आफत मोल लिया। जिस तरह उमड़ती हुई नदी के तटीय बांध तोड़ दिया जाय तो तटीयस्थ शस्य बर्बाद हो जाते हैं, वही अवस्था औरंगजेब की इस करतूत से हुई।

(च) "दाक्षण औरंगजेब लिए कब्र सिद्ध हुआ।" मराठों के साथ उसने नीतिज्ञता का व्यवहार नहीं किया। नीति शास्त्र कहता है कि सबल शत्रु से मित्रता करे और निर्बल शत्रु को कुचल दे। जिसका अनुशरण इसने नहीं किया।

(छ) देश में जागरण हो रहा था। महाराष्ट्र एवं पंजाब इसमें प्रमुख थे। मातृभक्त मराठों जिनके हृदय में मातृभूमि प्रेम की प्रधानता थी।

(ज) औरंगजेब इतना सक्की था कि वह किसी को शासन नीति का थोड़ा भी ज्ञान देना नहीं चाहता था। वह समझता था कि कहीं गुरु गुड़ चेला चिन्नी न हो जाय। यही कारण हुआ कि औरंगजेब के बाद के सभी शासक नीति हीन एवं कठपुतली सिद्ध हुए।

(झ) औरंगजेब के समय से ही (और उसके बाद तो और

तेजी के साथ) साम्राज्य सूत्र हीन माला के समान छिन्न-भिन्न होने लगा जागीरदारों ने अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया। प्रादेशिक सूबेदारों पर सम्राट (केन्द्र) का नियंत्रण हट गया। यानी अराज-कता हो गई।

(ञ) यातायात के साधन की कमी के कारण विद्रोहों को दबाने में बहुत कठिनता होती थी।

(ट) नादिरशाह एवं अहमदशाह ने मुगल साम्राज्य की कब्र खोद दी।

(ठ) अंतिम और सबसे बड़ी कमजोरी यह हुई कि जहां दूसरे २ देश प्रगति पथ पर बढ़ रहे थे, वहां मुगल सम्राट उसी स्थान पर पड़े थे। अंग्रेजों ने निज सेना को पाश्चात्य रण विद्या, जो उस काल में उन्नत थी, के अनुसार सुसज्जित किया। मराठों में आन्तरिक शक्ति के साथ छापेमार युद्ध की योग्यता थी। वहां मुगल सेनाओं में उपर्युक्त बातों की हीनता थी। "सैनिक शिबरों में (मुगल सैनिक शिविर) में भी वेश्याओं का जमाव रहता था— मुगल सेना की सहायता के लिए कामदेव की भी बृहत सेना चला करती थी।" †

इन्हीं उपर्युक्त कारणों से मुगल साम्राज्य का पतन हुआ।

† रीति काव्य की भूमिका"" ले० श्री नरेन्द्र।

—:o:—

प्रश्न—१ बंगाल में अंगरेजों की प्रधानता कैसे और कब मिली ?

१७४० ई० में अलीवर्दी खाँ बिहार, बंगाल और उड़ीसा का सूबेदार बना। वह बहुत बड़ा नीतिज्ञ एवं योद्धा था। इसी प्रतिभा के बल पर वह एक छोटे अधिकारी के पद से सूबेदार बन गया था। अँगरेज बंगाल में अभी चूं नहीं बोलते थे। वे केवल व्यापारी के रूप में थे। परन्तु, जैसे ही इसकी मृत्यु हुई (१७५६ ई०) कि बंगाल का राजनैतिक स्वरूप एकदम बदल गया।

अलीवर्दी खाँ का पोता सिराजूद्दौला बंगाल का नवाब बना। यह अंगरेजों के षड्यंत्रों से पूर्ण रुपेण परिचित था। कर्नाटक एवं हैदराबाद की हालत को देखकर वह और भी शशंकित हो उठा था।

अंगरेजों ने फोर्टविलियम नामक किला बनवाना शुरू किया क्योंकि उन्हें फ्रांसीसी लोगों से डर था। नवाब ने जब यह

सुना तो वह अंगरेजों के षड्यंत्र को ताड़ गया और उसने अंगरेजों को किला तोड़ देने को लिखा। कलकत्ता का गवर्नर ड्रेक ने इस पर कुछ ध्यान नहीं दिया। फलतः नवाब ने कलकत्ते पर चढ़ाई कर दी। बहुत से अंगरेज हुगली नदी होकर भाग गये। फोर्टविलियम जीत लिया गया। 'काल कोठली' की बात अंगरेज इतिहास कारो द्वारा बनाई गई गप्प है।

मद्रास में क्लाइव ने जब कलकत्ते की बातें सुनीं तो तुरत स्थल मार्ग से कलकत्ते को चला। जलीय बेड़ा वाटसन की अधीनता में चला। क्लाइव ने सिराज के बहुत से कर्मचारियों को मिलाकर कलकत्ते पर कब्जा कर लिया और नवाब के नाम मित्रता पूर्ण संदेश भेजा। नवाब ने अँगरेजों से अलीनगर की सन्धि (९-२-१७५७ ई०) कर ली। इसके अनुसार—

(१) फोर्टविलियम की मरम्मत कराने का अधिकार अंगरेजों को प्राप्त रहेगा।

(२) युद्ध में अँगरेजों की जो हानि हुई है, उसे नवाब पूर्ति करेगा।

इधर अंगरेज और फ्रान्सीसी (जिनकी कोठी चन्दर नगर में थी) में लड़ाई होने लगी। अनेक फ्रान्सीसी नवाब की शरण में आये। नवाब ने शरण दी परन्तु इससे अँगरेज बहुत रुष्ट हुये।

क्लाइव ने मीरजाफर, जो सिराज का सम्बन्धी और सेना नायक था, को राज्य लोभ देकर मिला लिया। अनेक

राज्य कर्मचारियों को भी अंगरेजों ने अपनी ओर मिला लिया। नवाब जर्जर बन गया।

१३-६-१७५७ ई० को क्लाइव नवाब से टक्कर लेने चला। पलासी में लड़ाई हुई। मीरजाफर अंगरेजों से मिल गया। नवाब की पराजय हुई और वह भाग गया परन्तु मीरन द्वारा मार डाला गया।

अंगरेजों ने बंगाल की सूबेदारी मीरजाफर को दी। मीरजाफर को भी कम्पनी को एक करोड़ रुपये देने थे।

परन्तु वह पूर्ण रूप से चुक्ती नहीं कर सका। बंगाल का नवाब कठपुतली बन गया। सारी सत्ता और महत्ता अंगरेजों के हाथ चली गई। मीरजाफर एवं डचों को मिलते देख अँगरेज बहुत क्रुद्ध हुए और उन्होंने मीर कासिम को राज्य देना चाहा। बाध्य होकर मीरजाफर ने गद्दी छोड़ दी और मीर कासिम नवाब बना (१७६० ई०)।

मीर कासिम ने अपनी ताकत बढ़ानी चाही। उसने सैनिकों को संगठित किया। वह था भी प्रतिभापूर्ण व्यक्ति। चुंगी का प्रश्न एक जटिल प्रश्न हो उठा। मुगल सम्राट के हुक्म के अनुसार कम्पनी को चुंगी नहीं लगती थी, परन्तु अब वैयक्तिक रूप में भी अंगरेजों ने व्यापार करना शुरू किया। फलतः नवाब बहुत क्रुद्ध हो गया और भारतीय व्यापारियों को भी उसने चुंगी से मुक्ति दे दी। इस पर क्रुद्ध होकर अँगरेजों ने मीर कासिम पर आक्रमण कर दिया। मीर कासिम ने सेना को

संगठित किया और युद्ध के लिये तैयार हो गया। इसने शुजाउद्दौला (अवध नवाब) एवं शाहआलम से सन्धि की। तीनों की सम्मिलित सेना को अँगरेजों ने बक्सर में परास्त कर दिया।

अँगरेजों के हाथ में सारी सत्ता चली आई। राजनैतिक आर्थिक आदि क्षेत्रों में अँगरेजों का ही प्राधान्य हुआ। इस तरह अँगरेज बंगाल में प्रधान हो गये।

प्रश्न—२ भारतवर्ष में ब्रिटिश प्रमुखता की स्थापना लार्ड हेस्टिंग्स ने कैसे की?

वारेन हेस्टिंग्स को इङ्गलैण्ड से १७७२ में बंगाल का गवर्नर बना कर भेजा गया। एक वर्ष के बाद इङ्गलैण्ड की पार्लमेण्ट ने रेगुलेक्टिंग ऐक्ट पास किया, जिसके अनुसार :—

(१) बंगाल का गवर्नर, 'गवर्नर जेनरल' कहलाया और अन्य प्रेसीडेन्सियों के गवर्नर से उसे ज्यादे अधिकार मिले।

(२) ४ मेम्बरों की एक सभा बनाई गई, जिसके फैसले को गवर्नर जेनरल को मानना पड़ता था।

(३) सुप्रीमकोर्ट की स्थापना की गई (कलकत्ते में), इसके चीफ जस्टिस की नियुक्ति ब्रिटिश सरकार द्वारा होती थी और इनकी मदद के लिए ३ जज होते थे।

(४) गवर्नर जेनरल, कोर्ट आफ डाइरेक्टर्स के अधीन था

और भारतीय शासन के बारे में उससे आज्ञा लेना उसका कर्त्तव्य था।

इस तरह हमने देखा कि वारेन हेस्टिंग्स बंगाल का प्रथम गवर्नर जेनरल था। हेस्टिंग्स उस समय "भारतीय ब्रिटिश साम्राज्य" का नायक बनाया गया, जिस समय राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति ब्रिटिश साम्राज्य को नाश करनेवाली थी। ब्रिटिश कम्पनी की आर्थिक कठिनता, मराठों, हैदर से डर एवं फ्रान्स की उन्नति अँगरेजों को अमेरिका की क्रान्ति (अमेरिकस वार औफ इन्डेपेनडेन्स) में फसना प्रबल समस्याएँ हो गई थी। परन्तु, इतनी गूढ़ समस्याओं के रहते हुए भी हेस्टिंग्स इन सभी पर विजयी निकला। उसने एक-एक कर अपने सभी प्रतिद्वंदियों से बदला लिया। उसने बंगाल के द्वैध शासन प्रणाली को हटा साम्राज्य संगठन और विस्तार की ओर ध्यान दिया।

(१) शाहआलम और हेस्टिंग्स

मुगल सम्राट शाहआलम की पराजय **बक्सर की लड़ाई** में हुई थी और वह अँगरेजों के शरण में आ गया था। कम्पनी ने उसे इलाहाबाद में रखा और उसके खर्च के लिये २६ लाख रुपये सालाना देने का वादा किया। परन्तु शाहआलम ने जब मराठों की प्रबल ताकत देखी तो वह मराठों की शरण में चला गया (१७७२ ई०)। इसपर क्रुद्ध होकर वारेन हेस्टिंग्स ने उसकी

पेंशन बन्दकर दी और इलाहाबाद को अवध शुजाउद्दौला को देकर ५० लाख रुपया प्राप्त किया जिस रुपये से इसने अपनी फौजी ताकत बढ़ाई।

(२) रुहेलखण्ड और अवध का नवाब

रुहेलखण्ड एक पहाड़ी प्रान्त है। मराठों और रुहेलों में नहीं पटती थी, इसलिये रुहेलों ने अवध से सन्धि की (१७-६-१७७२ ई०) और रुहेलों ने ४० लाख रुपया अवध को देने का वादा किया। मराठों से एक छोटी-सी लड़ाई हुई, जिसमें अवध ने रुहेलों को मदद दी। ४० लाख रुपया अँगरेजों ने ले लिया, चूंकि अवध ने अँगरेजों से ऋण ४० लाख रुपया लिया था अँगरेजों ने मीरनपुरकटरा के नजदीक रुहेलों को परास्त किया। इस धन से हेस्टिंग्स ने अपनी सैनिक शक्ति बढ़ाई।

(३) मराठों से :—

माधवराव की मृत्यु के बाद मराठों का सूर्य अस्तंगमित होने लगा। नारायणराव (माधवराव का भ्राता) की हत्याकर राघोबा पेशवा बन गया (३०-८-१७७३ ई०)। परन्तु सरदारों से नहीं पटने के कारण उसे पेशवाई छोड़नी पड़ी और वह अँगरेजों की शरण में सूरत जा पहुँचा और अँगरेजों से सन्धि कर ली। इस सन्धि के अनुसार अँगरेजों ने राघोबा को मदत देना स्वीकार कर लिया परन्तु वारेनहेस्टिंग्स ने इसे स्वीकार नहीं किया। परन्तु बिना गवर्नर जेनरल की आज्ञा से बम्बई

के अँगरेजों ने राघोवा की मदद की जिसमें अँगरेजों को हारना पड़ा और उसे **बड़गांव की सन्धि** करनी पड़ी। इस अपमान को देखकर वारेनहेस्टिंग्स ने एक प्रबल सेना अँगरेजों की मदद के लिये भेजी और अँगरेजों की जीत हुई और मराठों को **सालवाई की सन्धि** करने के लिये वाध्य होना पड़ा (१७-५-१७८२)। इस युद्ध में हेस्टिंग्स ने मराठों की ताकत तोड़ दी, जो अँगरेजों के प्रबल शत्रु-रूप में थे।

(४) मैसूर से :—

मैसूर का हैदरअली अँगरेजों के प्रबलतम शत्रुओं में था। इसकी वीरता, युद्ध प्रवीणता, और सैनिक संगठन योग्यता बहुत ही ऊँचे दर्जे की थी। मराठों को भी हैदर मिला रहा था। हेस्टिंग्स पहले तो बहुत घबराया परन्तु वह भी वीर था। मुनरों को हैदर ने परास्त किया।

फ्रान्सीसियों की मदत के लिये एक प्रबल जहाजी बेड़ा आ रहा था, फलतः फ्रान्सीसी की शक्ति प्रबल हो उठी। अँगरेजों ने सर, आयरकूट, जो अपने जमाने का प्रबल युद्ध वीर था, को हैदर से टक्कर लेने को भेजा, इस घोर युद्ध, जो पोर्टनेवों नामक स्थान में हुआ था, में हैदर परास्त हुआ (१७८१ ई०)। हैदर परस्तहिम्मत न होकर लड़ता रहा परन्तु इसकी मृत्यु ७-१२-१७८२ में हो गई।

(५) बनारस नरेश से :—

हेस्टिंग्स अपनी सैनिक शक्ति को प्रबल बनाना चाहता था। परन्तु उसके पास धन नहीं था। बनारस नरेश से हेस्टिंग्स को अन्त में नहीं पटा (क्योंकि हेस्टिंग्स ने नरेश से २००० अश्वारोहियों को मांगा था, जिसे नरेश न दे सका)। हेस्टिंग्स बनारस गया (१८८० ई०)। नरेश को उसने परास्त कर दिया परन्तु जनता ने हेस्टिंग्स को खूब तबाह किया, परन्तु अन्त में विजय अँगरेजों को ही मिली। बनारस अँगरेजों के अधीन चला आया, वहाँ का नरेश अँगरेजों के हाथ का कठपुतला बन गया।

(६) अवध से :—

अवध के ऊपर कम्पनी का रुपया बाँकी था जिसे वसूलने के लिये हेस्टिंग्स ने अवध पर चढ़ाई कर दी (१७७२ ई०) आशफउद्दौला की माँ और अन्य सम्बन्धियों से कर वसूला गया और सम्पत्ति की लूट हुई।

उपर्युक्त विवरणों से हेस्टिंग्स की नीति उसके प्रयास से स्पष्ट है। भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना करने में उसने कुछ उठा न रक्खा। साम्राज्य (ब्रिटिश) स्थापित करने, एवं धन प्राप्त करने के लिये वह असत्यवादी भी बन सकता था। नन्दकुमार जो अँगरेजी संगठन के बाधक था, को हेस्टिंग्स ने असत्यवादन कर फांसी दिला दी। क्योंकि उसने सुप्रिमकोर्ट

के प्रधान न्यायाधीश, जिसका नाम इलाइजाइम्पी था, को अपने में मिला लिया था। यद्यपि रेगूलेटिंग ऐक्ट के दोषों से हेस्टिंग्स के मार्ग में रुकावटें पहुँची फिर भी इसका भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना का प्रयास स्तुत्य है।

प्रश्न—३ वेलेस्ली ने भारत में ब्रिटिश प्रमुखता की स्थापना कैसे की ?

बहुत ही संकटकालीन परिस्थिति में लार्ड वेलेस्ली भारत आया था (१८९८ ई०)। इस समय राजनैतिक विश्व में उथल पुथल मची हुई थी। फ्रान्स का कान्सल नेपोलियन अब सम्राट बन गया था (१८०४ ई०)। यह अँगरेजों का प्रबल शत्रु था। नेपोलियन और टीपू सुलतान में सन्धि हो गई। दोनों अँगरेजी राज्य के विरुद्ध अपनी अपनी ताकत बढ़ा रहे थे। अफगानिस्तान का जमनाशाह भी भारत पर आक्रमण करने के लिये आ रहा था। निजाम अँगरेजों से असंतुष्ट था। मराठे भी अँगरेज विद्रोही थे। अँगरेजों की आर्थिक अवस्था भी रद्दी हो चली थी।

वेलेस्ली की प्रवृत्ति साम्राज्यवादी थी उसने (Subsidiary Alliance) के माध्यम से अनेक देशी राज्यों को जर्जर कर दिया। इस सहायक सन्धि के अनुसार :—

(१) इस सन्धि को मानने वाले राजे अँगरेजों के अधीन

रहेंगे और बिना अँगरेजों से आज्ञा प्राप्त किये वे किसी अन्य राजा से युद्ध या सन्धि नहीं कर सकते।

(२) राजाओं को एक फौज रखनी परेगी। जिसपर प्रधान प्रभाव अँगरेजों का ही रहेगा और वे जहाँ चाहे इस सेना का प्रयोग कर सकते हैं।

(३) इस सेना के खर्च के लिये राजाओं को एक भूभाग देना पड़ेगा।

(४) राजाओं के पास एक अँगरेज रेजीडेन्ट रहेगा।

इस सन्धि ने वेलेस्ली की ताकत को और बढ़ा दी। टीपू इसका सबसे बड़ा शत्रु था जो विभिन्न देशों से मदद लेकर अँगरेजों को परास्त करना चाहता था। १७९९ में टीपू और वेलेस्ली में लड़ाई हुई और टीपू वीरता पूर्वक लड़ता हुआ मारा गया। अँगरेजों का एक बहुत बड़ा शत्रु नष्ट हो गया। मैसूर का राज्य राजा कृष्ण को मिला, जिसने अँगरेजों से सहायक सन्धि की।

हैदराबाद का निजाम ने भी बाध्य होकर १-९-१७९८ ई० में अँगरेजों से सहायक सन्धि कर ली। अवध को भी वेलेस्ली के सामने झुकना पड़ा।

उस समय भारत में एक और प्रबल ताकत थी मराठों की। मराठों ने सहायक सन्धि पर हस्ताक्षर नहीं की परन्तु बसई की सन्धि (१८०२ ई०) उनकी महत्ता नष्ट हो गई। पेशवा भी सहायक सन्धि की पेंच में फस गया (३१-१२-

१८०२)। मराठों के साथ अँगरेजों की अनेक लड़ाइयाँ भी हुई परन्तु अन्त में विजय अँगरेजों को ही मिली।

वेलेस्ली ने कर्नाटक और तंजौर के राज्य को जप्त कर लिया और उसके राजाओं को पेंशन स्वरूप कुछ रकम दी गई।

वेलेस्ली ने जानमल्कम को प्रतिनिधि बनाकर ईरान भेजा जिसने वहाँ के सुल्तान को अँगरेजों से मिलने के लिये कहा, और इस परिश्रम में मालकम को बहुत कुछ सहायता भी मिली।

इस तरह लार्ड वेलेस्ली ने भारत में अँगरेजी साम्राज्य की स्थापना को और मजबूत कर दिया। इन्डिया हौल के सामने इसका पाषाण-मूर्ति आज भी खड़ा है।

प्रश्न—४ लार्ड विलियम बेंटिक कृत प्रमुख सुधारों का वर्णन कीजिये।

लार्ड बिलियम बेंटिक (१८३६-४२ ई०) कृत प्रमुख सुधार निम्नलिखित हैं :—

(१) सरकारी खजाने भरने का प्रयास

आगरा, मद्रास सूबों का नवीन रूप से बन्दोबस्त किया गया। सिविल कर्मचारियों की वेतन में कमी कर दी गई। वेलगान जमीन पर लगान लगाये गये। अफीम व्यापार का सर्वाधिकार सरकार के हाथों में दिया।

(२) बोर्ड ऑफ रेवन्यू भी स्थापना इलाहाबाद में हुई। जिलों का समूह कमिश्नरी के रूप में बना जिसका शासक कमिश्नर कहलाता था।

स्थानिक भाषा को न्यायालय में व्यवहार करने योग्य सिद्ध किया। सरकारी नौकरियों में धर्म, जाति, स्थान को प्रधानता नहीं दी जाती थी।

(३) राजा राममोहन राय से विचार लेकर सती प्रथा उठा दी गई।

(४) इसी समय मेकाले का भाषा सम्बन्धी निर्णय हुआ। भारतीयों को रंगेसियार बनाने के लिये अँगरेजी भाषा का प्रचार किया गया।

प्रश्न—५ बृटिश साम्राज्य को भारत में बढ़ाने के लिये जिन-जिन उपायों को लार्ड डलहौसी ने काम में लाया उसका वर्णन कीजिये।

भारत में बृटिश साम्राज्य के स्थापन कर्त्ताओं में लार्ड डलहौसी का भी प्रमुख स्थान है। यह १८४८ ई० में भारत आया था। इसकी प्रवृत्ति पूर्णतः साम्राज्यवादी थी, वह सम्पूर्ण भारतवर्ष को ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर ले लेना चाहता था। इस भावना को पूर्ण करने के लिये उसने बहुत परिश्रम किया। इसने घोषना कर दी कि—

(१) दत्तक पुत्र लेने का अधिकार किसी राजे महाराजे को नहीं हैं। इस नीति को अपह की नीति (Doctrine of Lapse) कहते हैं। उस नीति के अनुसार सतारा (१८४८ ई०) झाँसी (१८५४ ई०) जैतपुर, बघाट :के प्रदेश ब्रिटिश भारत में मिला लिये गये।

(२) डलहौसी ने पेशवा (बाजीराव) के मरने के बाद उसकी पेंशन बन्द कर दी, यद्यपि नाना साहब उसका दत्तक पुत्र मौजूद था। कर्नाटक और तंजौर के राजों की भी हालत यही हुई। इन सब पेंसनों के बचे हुए रुपयों को डलहौसी ने "भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की प्रगति" में लगाया।

(३) जिन-जिन राज्यों के राजे निःसंतान मर गये थे उनका राज्य ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया।

इस नियम के अनुसार तंजोर (१८५५ ई०) सम्भलपुर, नागपुर के राज्य ब्रिटिश भारत में मिला लिये गये।

(४) डलहौसी को एक प्रबल बहाना यह मिल गया कि कुछ राज्यों की शासन प्रणाली बहुत बुड़ी हो गई थी। बस डलहौसी ने इसी बहाने के बल पर सिन्ध, सिक्कम एवं स्लीमन रिपोर्ट के आधार पर अवध, ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिये गये।

(५) निजाम के पास अँगरेजों का बहुत रुपया बाकी था, जिसे निजाम नहीं दे सका। १८५३ की संधि के अनुसार निजाम के बरार एवं उसके निकट के प्रान्त देने पड़ें।

इन उपायों का प्रयोग का डलहौसी ने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य को ठोस रूप प्रदान किया।

—:※:—

प्रश्न—६ डलहौसी को आधुनिक हिन्दुस्तान का बनाने वाला क्यों कहा जाता है ?

डलहौसी (१८४८–५६ ई०) को आधुनिक हिन्दुस्तान को बनानेवाला क्यों कहा जाता है। इसने भारत में अँगरेजी साम्राज्यवाद को स्थापित करने और इसे नवीन वैज्ञानिक वस्तुओं से सुसज्जित करने का पूर्ण प्रयास किया। यह ज्ञातव्य है कि इसने जिन-जिन सुधारों को किया उसमें लगे खर्च भारतीयों से ही वसूला गया।

(१) कृषि कार्य्य को उन्नत बनाने के लिये सिचाई की आवश्यकता होती है। डलहौसी ने अनेक नहरों का निर्माण किया।

(२) इसने जनकार्य विभाग (पवलिक वर्क डिपार्टमेन्ट) की स्थापना की, जिसका कर्त्तव्य था सड़क, रेल आदि बनवाना। ग्रेंड ट्रंक रोड का पुनः निर्माण हुआ। सबसे पहले रेल १८५३ ई० में बनाई गई।

(३) तार का प्रबन्ध किया गया।

(४ डाक प्रथा को पूर्ण वैज्ञानिक रूप दिया गया। इसने पोस्टकार्ड प्रथा लागू की।

रेल, डाक, तार के द्वारा भारत को नवीन वैज्ञानिक प्रवाह से परिचित कराया। राष्ट्रीय आन्दोलन की प्रगति में रेल, डाक, तार से बहुत मदद मिली। इससे अन्तरदेशीय एकता में बहुत मदद मिली।

इन्हीं उपर्युक्त प्रधान कारणों के बल पर डलहौसी को आधुनिक हिन्दुस्तान का बनानेवाला कहा जाता है।

प्रश्न—७ प्रथम स्वातंत्र्य संग्राम (सिपाही विद्रोह) के क्या कारण थे? इसके क्या परिणाम हुए? भारतीय इतिहास में इसका क्या स्थान है?

१८५७ के गदर के निम्न लिखित कारण थे—

(१) डलहौसी ने झूठ कारण ढूढ़ कर, बनाकर अनेकों छोटे-छोटे राज्यों को अँगरेजी राज्य में मिला लिया था। राजाओं एवं नवाबों को जो पेंशन अँगरेजी सरकार के तरफ से मिलती थी वह बंद कर दी गई। फलतः जिन लोगों की पेंसने जप्त हुई और राज्य जप्त हुए थे वे अँगरेजी राज्य प्रबल शत्रु बन गये।

(२) डलहौसी ने रेल, तार, जहाज आदि का भारत में प्रयोग किया। इन सब यातायात के साधनों के द्वारा अँगरेज जब जहाँ चाहते थे जल्द पहुँचं जाते और देशी राजाओं के

प्रत्येक कार्यों में दखल पहुँचाते थे। मानो रेलों के द्वारा भारत बेड़ी में जगर दिया गया।

(३) गोद लेने की प्रथा भारतवर्ष में बहुत दिनों से चली आ रही थी, परन्तु डलहौसी ने इस प्रथा पर रोक लगा दी, और इसी बहाने अनेक राज्यों को हड़प लिया। हिन्दुओं ने एवं देशी राजाओं ने इसे अन्याय समझा कि घर के कार्यों में भी अँगरेज दखल दें। वे राजकुमार जिन्हें गोद ली जाती, अँगरेजों के विरोधी बन गये।

(४) दिल्ली सम्राट की सत्ता अँगरेजों द्वारा हड़प ली गई थी। फलतः सम्राट के सम्बन्धी एवं अन्य मुसलमान लोग अँगरेजों के कट्टर शत्रु बन गये थे।

(५) अँगरेज भारतीय जनता को शोषित करते थे। भारतीयों को वे कभी सम्मान नहीं देते थे। राजे रजवाड़ों को भी अँगरेज नौकर सा ही समझते। मुनरो ने कहा था—"विदेशी विजेताओं ने देशवासियों के साथ हिंसा का और अकसर बहुत ज्यादा बेरहमी का व्यवहार किया है, लेकिन किसी ने भी उनसे इतनी नफरत का बर्ताव नहीं किया, जितना कि हमने।"१

---

१ एडवर्ड थामसन द्वारा "दि मेकिंग अफ दि इन्डियन प्रिंसेज" में उद्धृत पृ०—२७३ हिन्दुस्तान की कहानी।

—पं नेहरू (अनु० टंण्डन)

(६) (क) गृह उद्योग के नष्ट हो जाने से एवं अनेकों व्यक्तियों की जमीन वेंटिंग आदि के द्वारा ले लिये जाने से बेकारी की समस्या बढ़ी। जिसका उत्तरदायित्व अँगरेजों पर ही समझा जा सकता है।

(ख) भारतीयों के राज्य अँगरेजों द्वारा ले लिये जाने से, अनेक भारतीय कर्मचारियों को निकाल दिया गया। इससे भी बेकारी बढ़ी।

(ग) भारतीय राजाओं की बहुत सी सेनाएँ हटा दी गई। अँगरेजों की सेना में भारतीयों को बहुत कम उच्च पद मिलते थे, या यों कहूं कि मिलते ही नहीं थे।

(७) अँगरेज सरकार ने विधवा विवाह, को जायज करार दिया और सती प्रथा को नाजायज। हिन्दू इसे 'स्वधर्म' पर हस्तक्षेप समझते थे।

(८) अँगरेजों की ओर से अनेक मिशिनरियों एवं विद्यालय खोली गई। इन विद्यालयों में भारतीय सभ्यता और संस्कृति का स्थान बहुत ही गौण था। इनमें पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली के अनुसार ही शिक्षा दी जाती थी। लोगों ने समझा कि ये अँगरेज भारतीय सभ्यता और संस्कृति को गर्त में फेंक देना चाहते हैं। फलतः जनता में क्रांति की ज्वाला फैलने लगी।

(९) इसाई पादरियों ने घूम-घूम कर इसाई धर्म को फैलाना शुरू किया। उन लोगों ने हिन्दू एवं मुसलमान धर्म को नीच कहा--भारत सदा से धर्म प्रधान देश है। जब अँगरेजों का धर्म विरोधी प्रचार शुरू हुआ तो जनता बौखला उठी।

(१०) भारतीय सैनिकों को योग्य रहते हुये भी उन्हें अँगरेजों के नीचे ही रहना पड़ता था। अपमान सहना पड़ता था, जो कि कोई भी स्वाभिमानी सैनिक नहीं सह सकता है।

(११) अँगरेजी सेना में जाति पांति का भेद भाव नहीं रखा जाता था। कट्टर हिन्दू इसे कैसे सह सकते थे? फलतः उच्च जातीय सैनिकों का मन उचट गया था।

(१२) अँगरेजी सरकार ने हुक्म दी कि भारतीय सैनिकों को समुद्र पार के देशों से भी, यदि लड़ाई हो तो, जाना पड़ेगा। हिन्दू समुद्र पार करना अधर्म समझते थे।

(१३) नाना साहब, अजीमुल्ला, बापू, झांसी की रानी आदि ने अँगरेजों के विरुद्ध भारतीय सैनिकों को मिलाया और उन्हें विद्रोह करने को उसकाया। ज्योतिषियों ने कहा कि शास्त्र के अनुसार पलासी की लड़ाई के १०० वर्ष बाद अँगरेजों का नाश होगा। १८५७ में १०० वर्ष पूरे हो रहे थे। भारतीयों ने समझा कि उन्हें दैवी मदद मिलेगी।

(१४) इसी समय कम्पनी ने एक तरह का कारतूस चलाया। इसे दांत से काटना पड़ता था। कम्पनी के एक चमार के द्वारा भारतीय सैनिकों को पता चला कि इसमें गाय और सूअर की चर्बी का व्यवहार होता है। फलतः हिन्दू और मुसलमान दोनों अँगरेजों के विरुद्ध हो गये।

इन्हीं सब कारणों से विद्रोह हुआ।

असफलता के कारण

(१) भारतीय नेताओं में राष्ट्रीयता की भावना नहीं थी बल्कि वे अँगरेजों से बदला लेना चाहते थे। नीति शास्त्र का कथन है कि 'यदि नेताओं में बदला लेने की प्रवृत्ति की प्रधानता और राष्ट्रीयता की भावना गौण हों, तो विजय असंभव है।'

(२) देश के सभी भागों के लोगों का सहयोग इस विद्रोह को प्राप्त नहीं था। दक्षिण भारत तो प्रायः इससे बिलकुल ही अलग रहा।

(३) राजाओं में जो अँगरेजों द्वारा अपमानित थे उन्होंने ही विद्रोह में भाग लिया था परन्तु अन्य रजवारों ने विद्रोह में भाग नहीं लिया। बहुतों ने तो अँगरेजों को मदद भी दी।

(४) सिक्खों एवं नेपालियों ने अँगरेजों को मदद दी थी। पं० नेहरू के शब्दों में "उस समय राष्ट्रीयता की भावना की कमी थी।"

(५) फिरोज साह, झाँसी की रानी, तातिया-टोपी, जैसे-जैसे वीरों के रहते भी विद्रोह असफल हो गया इसका कारण यह भी था कि अँगरेजों के हाथों में नवीन वैज्ञानिक अस्त्र थे परन्तु भारतीयों में इसकी कमी थी।

(६) भारतीय नेताओं में राजनीतिज्ञता की कमी थी। जिन-प्रदेशों पर उन लोगों ने कब्जा किया वहाँ भी वे शासन संचालन ठीक से न कर सके। लोगों ने समझा कि; "अँगरेज ही ईश्वर के भेजे हुए व्यक्ति है जो शासन कर सकते हैं।"

परिणाम

(१) इङ्गलैण्ड की पार्लमेन्ट ने १८५८ में एक ऐक्ट पास किया। इस ऐक्ट में २० धाराएँ थीं। उसमें प्रमुख थी

(क) भारतीय शासन-प्रबन्ध ब्रिटिश सम्राट (सम्राज्ञी विक्टोरिया) के नाम से शुरू हुआ।

(ख) "बोर्ड आफ कन्ट्रोल" को तोड़ दिया गया और "कोर्ट आँफ डाइरेक्टर्स" की स्थापना की गई। इस मण्डल के प्रधान को भारत मंत्री (सेक्रेटरी आफ स्टेट फार इन्डिया) कहा जाता था और इनकी सहायता के लिये १५ व्यक्तियों की एक कौंसिल होती थी इनमें ७ डाइरेक्टरों के प्रतिनिधि और ८ सम्राट द्वारा मनोनीत व्यक्ति होते थे।

(क) गवर्नर जनरल को वाइसराय की उपाधि दी गई।

(ख) द्वैध शासन प्रणाली को अंत कर दिया गया।

(ग) इस्ट इण्डिया कम्पनी की खातमा कर दी गई।

(२) १ नवम्बर १८५८ को महारानी विक्टोरिया ने भारतीयों के नाम एक घोषणा निकाली। उसके अनुसार—

(क) कम्पनी ने जिन राजाओं, रजवारों से संधियाँ की थी, या प्रतिज्ञा या उन्हें बचन दी थी उसे पूर्ण की जायगी।

(ख) भारतीयों को दत्तक पुत्र लेने का अधिकार है।

(ग) पेंसन एवं जागीर नहीं ली जायगी।

(घ) भारतीयों की धार्मिक विचार-धारा पर अँगरेज कुछ भी प्रभाव नहीं डालेंगे।

(ङ) शासन के प्रत्येक विभाग में योग्यतानुसार भारतीयों को भी स्थान दिया जायगा।

(३) मुगल सम्राट मिटा दिया गया। बहादुर शाह रंगून भेज दिया गया। उसकी मृत्यु १८६२ में हुई।

(४) अँगरेजों को बहुत से देशी राजाओं ने मदद दी थी। सच तो यह है कि अँगरेज प्रधानतः इसी बल पर विद्रोह को कुचल सके थे। अँगरेजों ने समझा कि यदि ये देशी रजवारे बने रहें तो अँगरेजी राज्य के लिये अच्छा है।

(५) अँगरेजों ने सेना में नेपालियों एवं सिक्खों को रखना ही अच्छा समझा, क्योंकि इन लोगों ने अँगरेजों को विद्रोह के समय में मदद दी थी। अँगरेजी सेना बढ़ा दी गई।

भारतीय सैनिकों को इस तरह अलग रखा जाने लगा कि वे समय पर मिल न सकें। १८६३ में, गोरी फौजों की संख्या—५ हजार और हिन्दुस्तानियों सैनिकों की संख्या—१ लाख ४० हजार ही थी।

(६) अँगरेजों ने देखा कि गुप्तचर विभाग की अयोग्यता से ही इस क्रान्ति के षड्यंत्र का उन्हें पता नहीं लग सका। इसीलिये गुप्तचर विभाग को खूब सुसंगठित बनाया गया।

(७) अँगरेजों ने "फूट डालो और शासन करो" की नीति को जोरों से चलाया।

महत्व

१८५७ की क्रान्ति को मुर्रे और स्टिमन ने भारतीय राष्ट्रीयता की भावना से पूरित बतलाया है उन्होंने लिखा है—"To search out the beginning of Indian nationalism one must go back many years, perhaps to the Indian mutiny of 1857." सावरकर ने अपनी पुस्तक 'दि हिस्ट्री औफ दि वार औफ इन्डियन इन्डिपेनडेन्स' में १८५७ की क्रान्ति को भारतीय स्वतंत्रता-युद्ध कहा है। कुछ लोगों ने इसे सैनिकों का विद्रोह माना और कुछ ने राजे रजवारों का षडयंत्र बतलाया। उपर्युक्त सभी विचारों में सत्य है। कुछ लोग राष्ट्रीयता की भावना से पूरित होकर लड़े कुछ लोगों में स्वार्थ की ही प्रधानता थी, परन्तु सभी का उद्देश्य एक ही था—अँगरेजी राज्य को उलट देना।

भारतीय इतिहास में इस क्रान्ति का बहुत महत्त्व है। इस क्रान्ति के कारण कितने ही सुधार हुए। भारतीय जागरण का यह प्रथम प्रबल प्रयास था।

प्रश्न—८ राष्ट्रीय जागरण के कौन-कौन से प्रधान कारण थे? संक्षिप्त वर्णन कीजिये।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रबल होने में राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय परिस्थितियों का पूर्ण प्रभाव पड़ा। भूत के स्वातंत्र्य

प्रिय व्यक्तियों एवं उनके प्रयासों से प्राप्त प्रेरणाओं, पाश्चात्य एवं प्राच्य बौद्धिक तत्वों, सामाजिक नवीन विचारों का भी प्रमुख प्रभाव रहा है।

(१) भारतीय सदा से स्वातंत्र्यप्रिय रहे हैं। यही कारण है कि किसी बाह्य शासन के प्रति वे शान्ति से नहीं बैठे। पिण्डारियों को अँगरेजों ने लुटेरा बतलाया है, वे डकैत थे, ठग थे, परन्तु सच तो यह है कि उनके मानस में स्वातंत्र्य समुद्र उमरता था। किसी ने ठीक कहा है—"वास्तव में ठग सताये हुए किसान थे जो आसानी से अँगरेजी गुलामी मंजूर करने के लिये तैयार नहीं थे और इसीलिये अँगरेजों ने उन्हें निर्दयतापूर्वक खत्म कर दिया।"२ "ठगी आन्दोलन का रूप कुछ विकृत नहीं होता तो उसे आधुनिक भारत का पहला जन आन्दोलन कहा जा सकता।"३ वहाबी क्रांति में भी राष्ट्रीय तत्त्व ही प्रधान थे। १८५७ के गदर को सावरकर ने ठीक ही भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम बतलाया है।४ उपर्युक्त विद्रोहों से भारतीयों को बहुत बड़ी प्रेरणा मिली। १८५७ ने स्पष्ट कर दिया कि भारतीयों की जन बहुलता, अँगरेजों के वैज्ञानिक साधनों के आगे तुच्छ है। ठेस लगने पर बुद्धि बढ़ती है।

(२) सम्पूर्ण भारत पर अँगरेजों का आधिपत्य था।

---

२ विश्व इतिहास की भूमिका २ प्रो० रामशरण शर्मा पृ० २२०

३ वही।

४ दि हिस्ट्री आफ दी वार आफ इन्डियन इंडिपेंडेंस।

यातायात सुन्दर रूप में था। लोग कम खर्च एवं समय में ही निज निज विचारों को फैला सकते थे। प्रेस खुलने के कारण स्वातंत्र्य भावना पूरित पुस्तकों का छपना भी सहज हो गया।

(३) भारत में अँगरेजी भाषा का प्रचार अँगरेजों ने इसलिये किया था कि भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद प्रबल हो सकेगा परन्तु, इसका फल उलटा निकला। पाश्चात्य देशों के साहित्य में ६० प्रतिशत पुस्तकें क्रांति, षडयंत्र, युद्ध एवं स्वतंत्रता की भावना से पूरित है। इनके सम्पर्क में आने से भारतीयों के हृदय में भी उपर्युक्त विचार-तरंग उठने लगी। "भारतीय मस्तिष्क पर पाश्चात्य साहित्य का प्रभाव शराव सम हुआ"५ वर्क, मेकाले, स्पेन्सर कृत स्वातंत्र्य भावना पूरित साहित्य ने नव जागरण का संदेश दिया।

(४) संस्कृत साहित्य को "भारतीय सभ्यता की कुंजी"६ कहा गया है। अनेक पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों ने इस साहित्य के प्रच्छन्न रत्नों को निकाला। पाश्चात्य विद्वानों में सर विलियम जोन्स, जो सुप्रीमकोर्ट के जज भी थे—थे। उन्होंने इशियाटिक सोसाइटी की स्थापना की (१७८४ ई०)। जौन, कौलब्रूक, मोनियर विलियम्स का भी प्रमुख हाथ था। मेक्समूलर को तो हम "भारतीय क्रांति जीवन में गर्म खून का दान देने वाला—" कह सकते हैं।

---

५ Lord Rona Idshay.

६ सरकार एण्ड दत्त'

भारतीय विद्वानों में महादेव गोविन्द रानडे, हरिप्रसाद शास्त्री, रामकृष्ण भंडार कर आदि मुख्य थे।

(५) साहित्यकारों का स्थान किसी भी विद्रोह में प्रमुख रहा करता है। जहाँ भारतेन्दु ने कहा—"भारत दुर्दशा न देखी जाय" वही बंगाल के बंकिम ने बन्दे भारतम का आह्वान किया। उसका ग्रन्थ आनंदमठ को "Bible of modern Bengali Patriotism"७ कहा जाता है। हाली ने उर्दू साहित्य में नवीन प्रवाह ला दिया तो विष्णुशास्त्री ने मराठी में। रविन्द्रनाथ ने "दारुण विप्लव माझे, तव शंख ध्वनि बाजे—जय भारत भाग्य विधाता"—को गाकर देश में नव जोश भर दिया। दीन बन्धु मित्र ने 'नील दर्पण' में निलहों की करुण कहानी लिख कर भारतीयों के रक्त को त्वरित किया।

(६) पत्रकारों ने भी राष्ट्रीय आन्दोलन की पृष्टभूमि बनाने में प्रमुख भाग लिया। जिनमें प्रमुख थे इन्डियन मिरर, हिन्दू पेट्रिऔट और बम्बई समाचार, बंगदर्शन, अमृत बाजार पत्रिका, अंग दर्शन आदि।

(७) धार्मिक एवं सामाजिक सुधारकों का भी इस जागरण में पूर्ण हाथ रहा है। इनमें राममोहन राय, स्वामी विवेकानंद,

---

७ Text Book of moder Indian History Vol.—II Sarkar & Datta. Page 110

रामकृष्ण परमहंस है। राममोहन राय (१७७४–१८३३) ने अनेक भाषाओं को सीखा और अनेक जातियों के धर्मशास्त्रों का अध्ययन किया। मोनियर विलियन्स ने उन्हें संसार का प्रथम व्यक्ति माना है जो सर्वधर्मसमन्वयवादी, प्रवृत्ति लेकर उनका अध्ययन करते रहे। दयानंद सरस्वती के बारे में एन बिसेन्ट ने कहा था कि दयानंद ही वह प्रथम भारतीय है जिसने कहा कि भारत भारतीयों के लिए है।

(८) अन्तराष्ट्रीय परिस्थितियों का भी भारतीय राष्ट्रीय जागरण पर पूर्ण प्रभाव पड़ा। अबसीनियां ने इटली का मुह तोड़ दिया और (१९०५ में) जापान ने जारों के रूस को परास्त कर दिया। यूरोपीय राष्ट्रों का भंडाफोर होने लगा। १७८९ की फ्रांस की क्रांति ने बतला दिया कि सत्ताधारियों को जनता परास्त कर सकती है। १५ मार्च १९१७ को रूसी जार निकोलस गद्दी से उतार दिया गया और ७ नवम्बर को बोलशेविक सरकार ने, जो जनता की सरकार थीं—गद्दी पाई। इसने घोषणा की कि रूस उस देश को सदा मदद देगा, जो सम्राज्यवादी जुए को फेंक देना चाहे। तुर्की के मुस्तफा कमाल ने उसका पूरा उपयोग किया। इन बाहरी बातों का भी भारत पर पूर्ण प्रभाव पड़ा।

(९) भारतीय व्यापारियों को अँगरेजों से प्रबल असंतोष था क्योंकि उनका व्यापार चौपट हो रहा था। प्रेस ऐक्ट ने

समाचार सम्पादकों को विद्रोही बना दिया। (यद्यपि रिपन ने इसे रद कर दिया)। इलबर्ट (Sir C. P. Ilbert) ने एक बिल बनाया, जिसके अनुसार न्याय क्षेत्र में अँगरेज और भारतीय समान समझे जयँगे। अँगरेजों ने इसका घोर विरोध किया फलतः भारतीयों को और दुःख हुआ। १९०५ में कर्जन ने बंगाल का बटवारा करके भारतीय एकता को चुनौती दी।

(१०) लार्ड लिटन के समय एक प्रबल अकाल पड़ा जिसमें अँगरेजों का रुख भारतीयों के प्रति अच्छा न रहा। महामारियों में भी उनका व्यवहार अच्छा नहीं था।

इन्हीं उपर्युक्त कारणों से भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की प्रगति हुई।

प्रश्न—९ राष्ट्रीय जागरण का संक्षिप्त इतिहास लिखिये।

राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास "भारतीय स्वतंत्रता संग्राम १८५७" में शुरू होता है। १८५७ की असफलता, ने दिखला दिया कि संगठन हीनता भारतीयों की पराजय का मुख्य कारण था। भारत अब अपने को संगठित करना चाहता था जिसमें रानडे के योग्य नेतृत्व में पूना की सार्वजनिक सभा और सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के नेतृत्व में कलकत्ते की इन्डियन एसोसियेसन (जिसकी स्थापना २६-७-१८७६ ई० में हुई थी) प्रमुख प्रयास था। इसी समय में अँगरेज सरकार ने सिविल सर्विस

(I. C. S.) में भर्ती होने का उच्चतम उम्र २१ से घटाकर १९ कर दिया (जो केवल भारतीयों के हेतु ही था) बुद्धिमान भारतीयों ने इसका विरोध करना चाहा और डटकर किया भी। कलकत्ता में में २४-३-१८७७ को महाराज एन० के० बहादुर की अध्यक्षता में विरोध सभा हुई। सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने देश के भिन्न-भिन्न भागों में भ्रमण किया। रिपन ने वर्नाकुलर प्रेस ऐक्ट को रदकर भारतीयों के प्रति मित्रता दिखलाई। डफरिन ने देखा कि भारतीयों के हृदय में विद्रोह संचित हो रहा है इसलिये यदि कोई भारतीयों की ऐसी योग्य सभा होती जिसके माध्यम से उनके विचार व्यक्त होते तो अच्छा था।

एलन ऑक्टेवियन ह्यूम (A. O. Hume) ने भारतीयों की दिमागी,, नैतिक, सामाजिक राजनैतिक उन्नति के वास्ते एक संगठन होने की आवश्यकता को समझा। इसके प्रयास से एवं अनेक भारतीयों के प्रयास से २७ दिसम्बर १८८५ को बम्बई में एक सभा हुई जिसके सभापति उमेशचन्द्र बनर्जी थे। इसीको इन्डियन नेशनल कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन कहा जाता है।

कांग्रेस का प्राथमिक रूप के बारे में पं० नेहरू ने ठीक ही कहा था कि "जब यह पहले पहल कायम हुई, एक बहुत ही नरम और फूक फूककर कदम रखनेवाली, अँगरेजों के प्रति राज्य भक्ति के प्रदर्शित करनेवाली, और छोटे-छोटे सुधारों के लिये बड़ी नम्र भाषा में मांग पेश करनेवाली संस्था थी। उस

समय यह धनिक मध्यमवर्ग की प्रतिनिधि थी, गरीब मध्यम श्रेणी तक के लोग इसमें शामिल नहीं थे। आम रिआया किसान और मजदूरों को तो इससे कुछ लेना देना नहीं था।"८ १८८६ में कलकत्ता अधिवेशन के सदस्यों को लार्ड डफरिन ने (Government-House) में भोज किया था। परन्तु यह कब तक चलती। कांग्रेस का भी विचार बदलने लगी। बेडलग (Bradlaugh) जो पार्लमेण्ट का मेम्बर था, के विचार से कांग्रेस ने ह्यूम, फिरोजशाह मेहता, उमेशचन्द्र बनर्जी आदि का एक मण्डल इंगलैण्ड भेजा कि ये इंगलैण्ड जाकर भारत की दशा और कांग्रेस की मांग जतावे। मण्डल सफल हुआ और १८९२ में इन्डियत :कौनसिल ऐक्ट पास हुआ परन्तु कांग्रेस को संतोष न मिला। इसी समय में अकाल और बम्बई में प्लेग फैला जिमें ब्रिटिश सरकार उदासीन रहीं।

महाराष्ट्र का लोकमान्य तिलक ने समझा कि "जंजीर टूटती कभी न अश्रु धार से।"९ इसी समय कुछ अँगरेजों की हत्या का अभियोग लगाकर तिलक को २७ जुलाइ १८९७ को १८ महीनों के लिये एरेस्ट कर लिया गया। जनता में एवं कांग्रेस के मेम्बरों में क्रान्ति का प्रवेश तिलक ने करा दिया। देश के घाव में १९०५ में बंगाल को बाँटकर लार्ड कर्जन ने नमक छिड़क

---

८ विश्व इतिहास की झलक भाग १ पृष्ठ ६२८ (हिन्दी)।

९ नवीन नेपाली।

दिया। भारतीयों ने समझा कि अँगरेज हमारी राष्ट्रीयता के बाधक हैं। एकता को खण्डन करना चाहते हैं। फूट डालो और शासन करो की नीति अपनाते हैं।

७ अगस्त १९०५ में कलकत्ता में सभा हुई और स्वदेशी आन्दोलन चला। अँगरेजी एवं विदेशी वस्तुओं को लोगत्यागने लगे। ढ़ेर लगाकर उसमें आग लगा देते थे। इससे भारतीय गृह उद्योग को खूब तरक्की मिली। राष्ट्रीय विद्यालय खोले गये। इस आन्दोलन के नेता सुरेन्द्रनाथ बनर्जी एवं विपिन चंद्रपाल थे।

१९०६ में दादा भाई नौरोजी ने स्वराज्य की घोषणा की। कांग्रेस इस समय २ भाग में बट गया (१) गरम दल (२) नरम दल। पहले दल के नेताओं में गोखले, फिरोजशाह मेहता, नरेन्द्र नाथ बनर्जी आदि और दूसरे दल के नेताओं में प्रधान तिलक, विपिचन्द पाल, लालालाजपत राय थे। १९०७ में सूरत की कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। जिसमें से दोनों दल अलग हो गये परन्तु प्रमुखता नरम दल को ही मिली।

अँगरेजों का दमन चक्र चला। गरम दल के नेताओं को गिरफ्तार कर मण्डाले (बर्मा) भेज दिया गया, समाचार पत्रों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। क्रान्तिकारियों ने जहाँ-तहाँ बम चलाया। इसमें प्रफुल्लचन्द्र और बुदीराम बोस प्रमुख था। इसी समय में मार्ले मिन्टो सुधार हुआ (१९०९ ई०)। इस नीति में दमन और शमन का सम्मिश्रण था। इससे भारतीयों को

को शान्ति न मिली। अँग्रेजों ने मुसलमानों को कांग्रेस से अलग कर लेना चाहा और उसीके इसारे पर आगाखाँ ने सम्पूर्ण भारतवर्षीय मुसलिम लीग का संगठन किया (दिसम्बर १९०६) और मार्ली मिन्टो रिफार्म में इनको प्रमुखता दी गई। इटली के लोगों ने ट्रिपोली (तुर्की के एक भाग) पर चढ़ाई कर दिया। तुर्की को मुसलमान बहुत इज्जत देते थे। मुसलमान भी अब अँगरेज से अलग होने लगे और मिठ जिला के प्रयास से लीग कांग्रेस में मिलकर भारतीय स्वतंत्रता के प्रयास में लग गया।

प्रथम विश्व युद्ध (१९१४-१९१८) में भारतीयों ने अँग्रेजों को दिल खोलकर मदद दी थी यद्यपि गरम दल मदद देना नहीं चाहता था। भारतीयों ने समझा कि युद्ध में विजयी होने के बाद अँगरेज भारत को स्वाधीन कर देंगे परन्तु ऐसा न होकर १९१९ का रौलर ऐक्ट ने तो भारतीयों की आशा पर पानी फेर दिया। इस काले कानून के अनुसार पुलिस को एरेस्ट करने का सर्वाधिकार था। इसके बारे में कहा जाता है 'न वकील, न अपील, न दलील'।१० इसी समय गांधी का प्रवेश हुआ। अप्रिल ६, (१९१९) को गांधी ने सम्पूर्ण देश में हड़ताल करने का आह्वान कर दिया। इस समलजालियाना बालाबाग में एक कांग्रेसी सभा हो रही थी (अप्रिल १३-१९१९) जिसके चारों

---

१० वि० इ० की० क० नेहरू। (हिन्दी अनुवाद स० सा० मं०)।

ओर से घेरकर जेनरल डायर के हुक्म ले लोगों को दागना शुरू किया।

गांधी ने असहयोग आंदोलन चलाया १६२१ ई०। गांधी भारतवर्ष का प्रतिनिधि था। इस आंदोलन ने अँगरेजी साम्राज्य की नींव हिला दी। हिन्दू मुसलमानों का सम्मिलन सहयोग था। इसी समय में चौरा चौरी का काण्ड हुआ। भारतीयों ने २२ सिपाहियों को जला दिया गांधी ने आंदोलन रोक दिया। सुभाषचन्द्र ने कहा था—"ऐसे अवसर पर जब लोगों का जोश खूब खौल रहा हो, पीछे हटना राष्ट्रीय दुर्भाग्य था। गांधीजी के बड़े-बड़े साथी देशबन्धु दास, मोतीलाल, लाजपत राय सभी जेल में थे और सभी इस कार्य से क्षुब्ध थे।"११

साम्प्रदायिक दंगे शुरू हुए। कांग्रेस से लीग अलग होने लगी, गरम दल वालों का प्रभाव बढ़लने लगा। साइमन कमीशन भी कोई प्रभाव न ला सका। नेहरू रिपोर्ट (मोतीलाल नेहरू) उपनिवेशिक स्वराज्य की मांग की जिस पर गरम दल के नेता पं० नेहरू आदि प्रसन्न नहीं थे। उन्होंने ३१ दिसम्बर (१६२६ को पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। और २६ जनवरी १९३० को स्वाधीनता दिवस मनाया गया।

१६३० में सविनय अवज्ञा आन्दोलन गांधी के नेतृत्व में शुरू

---

११ उद्धत विश्व इतिहास की भूमिका २ पृ०—२२७

हुआ, जिसका मुख्य ध्येय नमक कानून तोड़ना था। दंडी जाकर गांधी ने इस कानून को तोड़ा जिसमें "७५००० आदमी अँगरेजों के द्वारा बंदी बनाये गये।"

गोलमेज सम्मेलन (जो १२-११-१९३० से १९-१-१९३१ तक हुआ था) भी असफल हुआ। गान्धी इर्विन समझौता भी व्यर्थ गया। देश में साम्यवाद समाजवाद का प्रवाह चला। १९३५ के ऐक्ट के अनुसार प्रान्तीय स्वराज्य हुआ और कांग्रेस ने '३७ में इसमें भाग लिया। राष्ट्रीय आन्दोलन जोरों से बढ़ने लगा।

१९३९ में द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ा जिसमें कांग्रेस ने अँगरेजों को मदद नहीं दी, उसने जनतांत्रिक देशों के प्रति प्रेम दिखलाया। कांग्रेस ने डा० कोटनीश को चीन भेजा। अँगरेजों ने 'सर स्टेर्ड फोर्ड क्रिप्स' को भारत भेजा कि वह भारतीयों को शांत कर सके परन्तु वह असफल हुआ। मि० जिन्ना ने १९४० में (जिन्ना मुसलिम लीग के प्रतिनिधि) पाकिस्तान की मांग कर दी।

अगस्त १९४२ को 'भारत छोड़ो' की घोषणा की गई। गांधी जी को इस घोषणा के अपराध में जेल दे दिया गया। १९४२ की कांति हुई। जिसमें करीब करीब सम्पूर्ण देश ने भाग लिया। अँगरेजों ने घोर दमन किया परंतु स्वतंत्रता की भावना कुचली न जा सकी। प्रमुख प्रमुख नेता जेल में भर दिये गये।

१६ मई' ४४ को गांधी रिहा कर दिए गये। वौवल योजना

(१४ जून' ४४), कांग्रेस से संधि करने की प्रवृत्ति का परिचायक था। शिमला सम्मेलन, जो उपर्युक्त योजना को माना जाय या नहीं। पर विचार करने के लिये बैठी थी असफल हुई। जिसमें मुस्लिमलीग एवं कांग्रेस का आपसी वैमनस्य ही कारण था।

आजाद हिंद फौज का संगठन कर सुभाषचंद्र सिंगापुर तक बढ़ आया था। भारतीयों को इससे बहुत जोश मिली। १९४६ में नाविकों ने विद्रोह कर भारतीयों के प्रति अपनी सहानुभूति दिखलाई। उसी समय कई हड़तालें हुई। अँगरेजों की शक्ति ढुलमुलाने लगी।

अंत में अँगरेजों ने १९४७ में इन्डियन इन्डिपेनडेंस एक्ट पास कर १५ अगस्त १९४७ से भारत वर्ष को भारत और पाकिस्तान दो प्रभुत्व सम्पन्न राष्ट्रों में विभक्त कर दिया, और भारत स्वतंत्र उपनिवेश घोषित हुआ और २६ जनवरी १९५० को भारत में जनतंत्र की घोषणा हुई।

संक्षिप्त में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का यही इतिहास है।

प्रश्न—१०-१९ वीं शताब्दी से से लेकर वर्तमान काल तक में किये गये सामाजिक सुधारों का संक्षिप्त वर्णन कीजिये।

भारतीय आदर्श सामाजिकता नष्ट प्राय हो रही थी। अनेक विज्ञ भारतीयों ने इस तरफ ध्यान दिया जिनमें सूर्य्य के समान राजा राममोहन राय है। इन्होंने १८२८ में ब्रह्म समाज की स्थापना की और भारतीय सामाजिक कुरीतियों की कटु

आलोचना की। दूसरे सुधारक दयानंद थे जिन्होंने आर्य्य समाज की स्थापना की। इन्हीं लोगों के प्रयास से एवं बहुत से विज्ञ अँगरेजों की सहायता से अनेक सामाजिक सुधार हुए।

(१) **सती प्रथा**—सती प्रथा का अन्त करना आवश्यक था। राजा राममोहन राय, जो उस काल के प्रमुखतम व्यक्तियों में थे, सती प्रथा को हटाना चाहते थे। अँगरेजों ने भी इस प्रथा को अन्याय समझा और १८२९ ई० में लार्ड विलियम बेंटिक ने इस प्रथा को अवैध बना दिया। अनेक भारतीयों ने समझा कि अँगरेज सरकार को यह अधिकार नहीं है कि वह भारतीयों की सामाजिक धारा में अड़चनें डालें। इन लोगों ने एक संगठन बनाया जिसके प्रधान राधाकान्त देव थे। इस संगठन ने उपर्युक्त मामले को 'प्रीभीकौंसिल' के सामने उपस्थित किया (१८३० ई०)। राजा राममोहन ने सती प्रथा हटाने का ही पक्ष लिया और इन्हींके प्रबल-प्रयत्न के कारण इस प्रथा का नाश हुआ।

(२) **बाल-विवाह**—रोकने के लिये १८७२ ई० में "नेटिभ मेरेज ऐक्ट" स्वीकृत हुआ। इसके द्वारा बाल-विवाह अवैध बना दिया गया। उस समय सर्वसम्मति से लड़कियों का वैवाहिक उम्र १६ माना गया। १९२९ में 'शारदा नियम' स्वीकृत हुआ। यह नियम ब्रिटिश भारत के सभी व्यक्तियों पर लागू था और इसके द्वारा घोषित किया गया कि वैवाहिक उम्र लड़कों के लिये कम-से-कम १८ हो और बालिकाओं के लिये १४। साधारणतया उपर्युक्त नियमों का पालन जनता नहीं करती है।

(३) विधवा विवाह—रोकने के लिये अनेक हिन्दुओं ने प्रयास किये परन्तु अनेकों ने विधवा विवाह होना योग्य बतलाया। द्वितीय विचार को माननेवालों की संख्या ही अधिक थी। पण्डितों ने कहा कि शूद्रा को ही यह अधिकार है कि वह विधवा विवाह करें।

परन्तु ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने शास्त्र के दृष्टान्तों के द्वारा सिद्ध किया कि शास्त्र विधवा विवाह की मान्यता प्रदान करता करता है। अंत में ब्रिटिश सरकार ने भी विधवा विवाह को ता० २६-७-१८५६ के कानून द्वारा वैध घोषित कर दिया।

महाराष्ट्र में विधवा विवाह संघ की स्थापना की गई (१८६६ ई०)। बहुत विरोधों के बाद महाराष्ट्र में भी इस प्रथा का प्रचलन हुआ।

धीरे-धीरे सम्पूर्ण देश में यह प्रथा प्रचलित हुई। परन्तु आज भी ऐसी लोगों की प्रचुर संख्या हैं जो इस प्रथा को भ्रष्ट प्रथा समझते हैं।

(४) जाति प्रथा—आज भी भारतीय समाज में जाति प्रथा का राज्य है। सम्पूर्ण भारतीय जाति अनेक फिरकों में बटे हुए हैं। यहाँ तक कि ब्राह्मणों के ईनार, पोखर में डोम चमार पानी नहीं भर सकते। देवालय में नीच जाति प्रवेश नहीं कर सकते। परन्तु आज, राजनैतिक क्षेत्र से जाति प्रथा एकदम उठा दी

गई है। संविधान के अनुसार कोई भी जाति नीच नहीं। यदि कोई जाति किसी जाति को नीच बतलाता है तो वह दण्डनीय है। हरिजनों (पददलित नीच समझे जानेवाली जाति) को भी देवालय में प्रवेश करने का अधिकार है। हाल ही में विनोबा भावे ने वैद्यनाथ धाम के मन्दिर में हरिजनों को लेकर प्रवेश करने चले थे, परन्तु पण्डों ने उन्हें प्रवेश नहीं करने दिया और कुछ दिन बाद, खूब पीटा। परन्तु सरकारी मदद से हरिजनों ने मन्दिर में प्रवेश किया।

(५) **स्त्रियों की अवस्था**—स्त्रियों में शिक्षा प्रचार के लिये राष्ट्रीय नेताओं ने पूर्ण प्रयास किया। अखिल भारतीय स्त्री-संघ का गठन जिस ध्येय पूर्ति के लिये हुआ था उसमें शिक्षा प्रचार भी प्रमुख ध्येय था। शिक्षा के प्रत्येक विभागों में स्त्रियों ने प्रवेश किया। मेडिकल कालेज में अनेक स्त्रियाँ भर्ती हुई। लेडी हार्डिंगस मेडिकल कालेज का नाम प्रमुख है। आज शिक्षा प्रचार के लिये भारत सरकार बहुत ही प्रयत्नशील है। जगह-जगह महिला विद्यालयों एवं महिला कालेजों का शिलान्यास हो रहा है।

१९३५ के विधान के द्वारा स्त्रियों को व्यवस्थापिका एवं कौंसिल में जाने का अधिकार मिला एवं स्त्रियों को भी मताधिकार में भाग लेने का अधिकार मिला। आज भारत की ललनाएँ विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में प्रकट हो रही है। कारखानों से लेकर शासन में भी उनका कार्य्य सराहनीय है। सरोजनी नायडू ने दिखला कि नारी पुरुष से कम नहीं है। श्रीविजयालक्ष्मी

पण्डित भारतीय स्त्री समाज के गौरव है। ये आज "संयुक्त राष्ट्र संघ की वृहद सभा" की अध्यक्ष हैं।

(६) **नीच जातियां**—समाज में जो नीच जातियाँ थीं वह अँगरेजी चर्च के प्रलोभन से अँगरेजी धर्म को स्वीकार कर रही थीं। इन लोगों की दशा बहुत ही दर्दनाक थी। नीच जातियों की दशा सुधारने के लिये रामकृष्ण मिसन कृत प्रयास प्रशंसनीय है। आर्य्य समाज ने उन हिन्दुओं को जो कभी अन्य धर्म को ग्रहण कर लिये थे को फिर हिन्दू धर्म में लेने के लिये तैयार रहता है। 'अछूत प्रथा' उठा दी गई। गांधीजी ने दलित जातियों को 'हरिजन' नाम से सम्बोधित किया और 'हरिजन' नामक पत्रिका निकालना शुरू किया (१९३२ से)।

(७) **बेगारी**—बेगारी लेना जुल्म है। बेगारी नहीं लिया जा सकता। बेगारी लेने की प्रथा प्रधानतः जमीन्दारों में पाई जाती थीं।

(८) **गुलाम प्रथा**—दुनियां के अन्य देशों के समान मध्यकाल में भारत में भी गुलाम प्रथा प्रचलित थी। गुलामों का क्रय-विक्रय होता था। इनका जीवन पशुओं से अच्छा नहीं था। उन्नीसवीं शदी में विश्व के अनेक देशों ने इस प्रथा को अन्याय समझा यथा—यूरोप और अमेरिका ने। ब्रिटिश पार्लमेण्ट ने उन्नीसवीं शदी के प्रारंभिक भाग में इस व्यापार (गुलाम व्यापार) को अवैध घोषित कर दिया। १८३३ के चार्टर ऐक्ट के अनुसार

गवर्नर जेनरल का यह कर्त्तव्य बना दिया गया कि वह गुलामी का अन्त करे। १८४३ के कानून के अनुसार भारत में गुलाम प्रथा अवैधघोषित हुआ। आज गुलामों का देश में कहीं भी समाचार नहीं मिलता है।

(६) **बलि प्रथा**—देश के कुछ अनार्य्य भागों में बलि प्रथा प्रचलित थी। देवियों को रिझाने के लिये बालक बालिकाओं की बलि दी जाती थीं। इस प्रथा को एकदम बंद कर दिया गया।

आज भारतीय समाज उन्नति पथ पर गमन कर रहा है।

—:※:—

प्रश्न—११ उन्नीसवीं शदी से लेकर वर्तमान काल के बीच में शिक्षा में जो प्रगति हुई है, उसपर संक्षिप्त प्रकाश डालें।

अँगरेजों की प्राथमिक नीति यही थी कि भारतीयों को अँगरेजी भाषा की शिक्षा नहीं दी जावे। उसी तरह भारतीय भी कटिबद्ध थे कि किसी भी अँगरेज को देववाणी (संस्कृत) न सिखलाई जाय। कहते हैं कि (सर विलियन्स जोन्स) ने एक संस्कृतज्ञ की बहुत खोज की, इनाम देने की प्रतिज्ञा की, लालच दिये, पर एक भी भारतीय नहीं मिला जो उसे संस्कृत सिखलाता। अंत में उसे एक नीच हिन्दू वैद्य ने संस्कृत की शिक्षा दी।

थोड़े दिनों के बाद उपर्युक्त अवस्था नहीं रही। अँगरेजों

को शासन कार्य सम्पादन करने के लिये किरानियों (लिपिकों) की आवश्यकता थी। भारतीयों को किरानी बनाने के लिये कुछ शिक्षा देना जरूरी था। इसलिये इस्ट इन्डिया कम्पनी के कर्मचारियों ने शिक्षा प्रचार के लिये प्रयास करना अपना राजनैतिक कर्त्तव्य समझा। भारत में शिक्षा प्रचार प्रमुखतः निम्नलिखित माध्यमों के द्वारा हुआ।

(१) अँगरेज अफसरों द्वारा (२) राष्ट्रीय नेताओं के द्वारा (३) अँगरेजी मिसीनरियों द्वारा।

(१) १७८१ ई० में वारेनहेस्टिंग्स ने 'कलकत्ता मदरसा' की स्थापना की और डंकन ने के प्रयास से बनारस में संस्कृत कालेज खुला। वेलेस्ली ने फोर्टविलियम में एक कालेज की स्थापना की जो सिविल सर्विश वालों के हेतु स्थापित हुआ था (१८००)। कम्पनी ने शिक्षा प्रचारार्थ १ लाख रुपये देना स्वीकार किया। चार्ल्स ग्रान्ट ने १७९२ में "भारतीयों को अँगरेजी शिक्षा मिलनी चाहिये" ऐसा कहा।

(२) भारतीय सुधारकों में राजाराममोहन राय का नाम प्रमुख है। इन्होंने शिक्षा प्रचारार्थ अनेक उद्योग किये। इनके एवं हायड इस्ट (सुप्रीम कोर्ट का प्रधान न्यायाधीश) के प्रयास से कलकत्ता में हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना हुई (१८१६)। इसी साल राममोहन राय ने सूरीपारा में एक आँग्ल विद्यालय खोला। राधाकान्त देव एवं तेजेशचन्द्र कृत इस विषय का प्रयास स्तुत्य है।

(३) भारत में जो मिसीनरियाँ थी उसका ध्येय धर्म प्रचार था। इसके लिये उसने देशी भाषा की शरण ली और देशी भाषाओं के विकाश हुए इनमें थोमस सार्शल कैरी वार्ड का प्रयास स्तुत्य है। कैरी तो बंगाली का प्रसिद्ध विज्ञ और इसी विषय का प्राध्यापक भी था। १८२० में कलकत्ते में विशप कालेज खोला गया।

अँगरेज़ी पढ़ना अति आवश्यक हो गया, यही कारण हुआ कि दिल्ली के मदरसों में अँगरेजी शिक्षा शुरू हुई। कलकत्ता विद्यालय समाज और कलकत्ता विद्योपयोगी पुस्तक समाज को सरकारी सहायता मिली।

सबसे बड़ी समस्या तो यह हुई की शिक्षा किन भाषा में दी जावे? आंग्ल भाषा में वा हिंदी में वा उर्दू भाषा में। राममोहन ने समझा कि भारत शिथिल होता जा रहा है और इस शिथिलता को हटाने के लिये आँग्ल भाषा साहित्य में जो क्रांति विद्रोह, जागरण रूपी शराब है वह चाहिये। अतः उन्होंने कहा कि भारतीयों को अँगरेजी माध्यम से ही शिक्षा दी जावे। अनेक अँगरेजों ने, जिन्होंने संस्कृत साहित्य रूपी अमृत का पान किया था कहा कि—"संस्कृत साहित्य, जो भारतीय साहित्य है, उसमें अमूल्य रत्न भरे पड़े हैं, भारतीयों को किसी पाश्चात्य भाषा की आवश्यकता नहीं है।" और इसी विचार को प्रधानता मिली और दिल्ली एवं कलकत्ता में

में संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना हुई (क्रमशः १८२५, १८२४ ई०)।

अँगरेजों ने सोचा कि भारतीयों को वह शिक्षा दी जावे जिससे कि उनका मस्तिष्क भी गुलामी की जंजीर में आवद्ध हो जाय। मेकाले, जो पब्लिक इन्स्ट्रकसन कमिटी का सभापति था, ने २-२-१८३५ की घोषणा के द्वारा यह सूचित किया कि शिक्षा का माध्यम अँगरेजी ही होगा।

और यह भी घोषित किया गया कि शिक्षा प्रचार में जो व्यय किया जायेगा उसका अधिक अंश अँगरेजी प्रचार पर ही होगा (मार्च १८३५ ई०) और इसी समय "कलकत्ते में मेडिकल कालेज (और) थोमसन इनजीनियरिंग कालेज रुरकी में जो उत्तर पश्चिमी प्राप्त में और १८५२ में मद्रास यूनवरसीटी हाई स्कूल की स्थापना हुई।१२

बोर्ड औफ कन्ट्रोल के अध्यक्ष सरचार्ल्स उड १८५४ में शिक्षा सुधार सम्बन्धी तक घोषणा की और जिसका ध्येय था कि शिक्षा के लिये अलग अलग विभाग बने, प्रेसीडेंसी नगर में विश्वविद्यालय खोले जाँय, शिक्षकों को ट्रेनिंग देने के लिये

---

12. The Medical College started in Calcutta in 1835 the Thomnon Eng ineering College at Rurki in North-western Provinces and an institution in Madras bearing in 1852 the title of the Madras.

विभाग खुले। सरकारी स्कूल कालेज को सरकारी सहायता मिलनी चाहिये नवीन ढर्रे के मिड्ल स्कूल खुले, धार्मिक पक्षपात रहित शिक्षण संस्थाओं को मदद (Grant-in-aid) मिले, स्त्री शिक्षा के लिये शिक्षण संस्था खोले जांय, निम्नतम से लेकर उच्चतम शिक्षण संस्थाओं का पारस्परिक सम्बन्ध हो।

१८५७ में कलकत्ता, बम्बई, मद्रास में विश्वविद्यालय खुले। और अन्य विश्वविद्यालय भी खुले।

यहाँ यह ज्ञातव्य है कि अँगरेजी शिक्षा को हिन्दुओं ने जितना पवित्र समझा उससे ज्यादे मुसलमानों ने उनके प्रधानों ने अँगरेजी शिक्षा से मुँह मोरने को कहा। यह रवैया तब तक चलती रही जब तक कि १८७५ ई० में सर सैयद अहमद खाँ ने, जो मुसलमानों प्रसिद्ध नेता थे, अलीगढ़ में की स्थापना की, जो आज अलीगढ़ विश्वविद्यालय के नाम से प्रसिद्ध है।२

लार्डरिपन ने हन्टर की अध्यक्षता में एक कमिटी बनाई जिसका कार्य यही देखना था और सरकार को बतलाना था कि १८५४ की घोषणा के अनुसार शिक्षण कार्य कहाँ तक उपयोगी हुए। इस कमीशन ने जो रिपोर्ट प्रकाशित किया उसमें

University High School.

T. B. M. I-H, vol. II. Page II by Sarkar and Dutta Page 25

२. Introduction to India. F. R. Moraes and R. Stimsons Page 99.

यही कहा था कि प्राथमिक शिक्षा की प्रगति हो और शिक्षण संस्था स्थानिक संस्थाओं के अधीन हो। उसी घोषणा के अनुसार प्राथमिक शिक्षण कार्य लोकल बोर्ड एवं म्यूनिसिपैलेटी को सौंप दिया गया।

१८९३ ई० (सम्वत १९५०) में अनेक छात्रों एवं बाबू श्याम सुन्दर दास के प्रयत्न से काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई। "इस सभा के उद्देश्य दो हुए—नागरी अक्षरों का प्रचार और हिन्दी साहित्य की समृद्धि।"१४

लार्ड कर्जन ने १९०२ में एक विश्वविद्यालय कमीशन बनाया जिसकी रिपोर्ट को ध्यान रखते हुए १९०४ में एक शिक्षा ऐक्ट पास हुआ। इस ऐक्ट ने सरकार के अधिकार को विश्व-विद्यालयों पर बहुत बढ़ा दिया। विश्वविद्यालय की सीनेट में ज्यादेतर सरकार चुनित व्यक्तियों कोस्थान दिया गया । स्कूल और कालेज पर सरकारी प्रतिबन्ध (Recognition) लगा दिया।

१९०१ ई० में डा० देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने बोलपुर में विश्व भारती की स्थापना की। रविन्द्रनाथ विश्व कवि कहलाते हैं के निर्देशन में शान्ति निकेतन विश्व का एक प्रधान विश्व-विद्यालय बन गया।

शिक्षा विभाग को सरकार ने स्वतंत्र विभाग बना दिया गया (१९१० ई०) इस समय तक अनेक विश्वविद्यालय बन गये थे जिनमें प्रमुख थे—पटना, रंगून, लखनऊ, ढाका, अलीगढ़,

१४ हि० सा० इति०—पं० रामचन्द्र शुक्ल पृ० ४८३

हैदराबाद आदि। १९१९ में बनारस में हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।

१९१९ ई० में एवं १९३५ के रिपोर्ट के अनुसार जो सुधार हुए वे बहुत ही साधारण थे। शिक्षा विभाग प्रांत के शिक्षा-सचिव के अधीन कर दिया गया।

शिक्षा लेने के लिये अनेक छात्र इङ्गलैण्ड, अमेरिका आदि भी जाने लगे।

गांधीजी ने वार्धा शिक्षा स्कीम बनाया जो भारतीय शिक्षण पद्धति पर खड़ी थीं। इस समय अनेक देशी शिक्षण संस्थाएँ भी थीं जिनमें प्रमुख उल्लेखनीय ना० प्र० सभा और गुरुकुल कंगरी विश्वविद्यालय हैं।

१९४२ ई० में भारतवर्ष में १७ विश्वविद्यालय जिसमें ३५० कला महाविद्यालय और करीब १०० प्रोफेसनल कालेज।" शिक्षित लोगों की संख्या ब्रिटिश भारत से भारतीय स्टेट में ज्यादे थीं। जैसा कि एक अँगरेज लेखक बतलाता है—

The literacy figure is 12½ percent in British India, and there are roughly five literate men for one literate woman. This Contrasts unfavourable with some Indian states, notably Travancor and Mysore According to the 1941 census, 65'/ of the men and over 42'/. of the woman in Travancor are literate.

Introducti to India. F. R. Moraes and R, Stimson Page 99.

मि० जौन सर्जेन्ट जो (१९४३) में (educational Adviser to the Government), ने एक स्कीम उपस्थित किया। जिसमें कहा गया था कि (१) ६ से १४ साल के बालकों को निःशुल्क शिक्षा दी जावे।

(२) २००,००० छात्रों के लिये विश्वविद्यालय का सुप्रबन्ध हो।

(३) निरक्षरता निवारण के लिये पूर्ण प्रयास हो।

(४) २,०००००० शिक्षकों को रक्खा जाय। जिसके खर्च के सरकार ३०० करोड़ रुपया सरकार दें।

स्वतंत्रता के बाद सबसे बड़ी समस्या यह खड़ी हुई कि किस भाषा को राष्ट्रभाषा माना जाय? भारत के लिये यह बहुत ही लज्यास्पद विषय है, (आज भी) कि यहां के अधिकारी, दूत सभी ज्यादेतर अँग्रेल भाषा में ही व्याख्यान देते हैं, कार्य करते हैं। याद है रूसियों के ये फटकार, जिसको उसने भारतीय दूत से कहा था कि अँग्रेल न मेरी भाषा है और न भारत की। फिर क्यों किसी दूसरी भाषा में मेरा आपका कार्य सम्पन्न हो। रूस सरकार के पास भेजी अँगरेजी का भी उन्हें रूसी अनुवाद करना पड़ता है तो क्यों नहीं हिन्दी से ही ये अनुवाद किये जांय?

आज भारत के शिक्षा मन्त्री हैं मौलाना अब्दुल कलाम आजाद।

शिक्षा मंत्री के प्रयास से या परामर्शक बोर्ड के प्रयत्न से आरंभ—में मातृभाषा में ही शिक्षा दी जाय—ऐसा स्वीकृत हुआ। मौलाना साहब उर्दू के पक्षपाती हैं परन्तु ऐसा दोष केवल मौलाना के ऊपर ही नहीं मढ़ा जा सकता। अनेक ऐसे भी भारत पुत्र है जो अँगरेजी को छोड़ना महापाप समझते हैं और दलील देते हैं कि आंग्ल अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है और विश्व में हम इसी भाषा के माध्यम से बढ़ सकते हैं। बतलावे कि रुस की प्रगति भारत से कैसे कम है जिस किसी भी क्षेत्र में? वहाँ पर कौन आंग्ल भाषा की बोलबाला है? प्रो० प० राय ने शिक्षित समाज में संस्कृतिक और राजनीतिक चेतना देने का श्रेय आंग्ल भाषा को ही दिया है। महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायन ने ठीक ही कहा—'शायद अंगरेजी की सहायता बिना जिन देशों ने ज्ञान-विज्ञान सीखा वह सब संस्कृतहीन रहे—जापान, रुस का उदाहरण दिया जा सकता है, जिन्होंने अपनी भाषा द्वारा शिक्षा पाई। मैं तो कहता हूं, यह औंधी खोपड़ियां कभी किसी चीज को ठीक नहीं समझ सकती। इन पर अँगरेजों की छाप इतनी अधिक पड़ी है, कि अँगरेजी के बिना वह अपने को अनाथ समझते हैं।"[२]

अंत में हिन्दी को राष्ट्रभाषा का पद दिया गया। फिर भी १५ वर्ष के लिये आंग्ल भाषा को वही पद रहा जो पहले प्राप्त था।

'भाषाधार प्रांत होना चाहिये'—इस बात को कांग्रेस ने

---

१५ आज की राजनीति। पृ० २११

कई वर्ष हुए स्वीकार किया था। युग पुरुष गांधी ने भी इसपर अपनी प्रसन्नता दिखलाई थीं। इस विषय पर अनेकानेक कार्य्य हुए भी हैं, परन्तु यह कहकर कि देश पर अनेकानेक कार्य पड़े हुए हैं यह कार्य ठप्प पड़ गया है। यह ज्ञातव्य है कि सम्विधान ने इन १४ भाषाओं को स्वीकृत की है १ आसामी २ बंगाली ३ उड़िया ४ तेलगू ५ तामिल ६ मलयालय ७ मराठी ८ कन्नाड़ी ९ गुजराती १० पंजाबी ११ काश्मीरी १२ उर्दू १३ हिन्दी १४ संस्कृत। और आश्चर्य है कि मैथिली जैसी भाषा जिसमें प्रचुर साहित्य हैं और जो प्रवाहशील भी है, की मान्यता सम्विधान ने नहीं दी है।

आजाद ने कहा था कि निःशुल्क बेसिक शिक्षा का इन्तिजाम करना सरकार का पहला कर्त्तव्य है। और उन्होंने कहा था "१ जुलाई १९४८ से पहले ४७ स्कूल खोले गये, नवम्बर १९४८ के उत्तरार्द्ध से ५० दूसरे स्कूल भी आरम्भ कर दिये गये। १ अप्रिल १९४९ से ५० तीसरे स्कूल आरम्भ होंगे और आशा है कि १९४९ से ५० तीसरे स्कूल आरम्भ होंगे और आशा है कि १९४९-५० के आर्थिक वर्ष के अन्त तक लाये दिल्ली प्रदेश में बेसिक स्कूल छा जायंगे।"१६

रिसर्च कार्य के लिये भण्डारकर रिसर्च इन्सच्युट, इन्डियन हिस्टोरिकल रेकार्डस, मिथिला इन्सच्युट आदि मुख्य है।

---

१६ आज की राजनीति—ले० रा० सांस्कृत्यायन पृ० २०७

प्रश्न—११ उन्नीसवीं शदी से आजतक के बीच में आर्थिक प्रगति कैसे हुई है? संक्षिप्त उत्तर दें।

"व्यापारियों की कम्पनियों की सरकार प्रत्येक देश के वास्ते नीचतम सरकार होती है।१७ "अँगरेजों के दिमाग में दौलत के लिये इतना जबर्दस्त लालच भरा हुआ था कि कोर्टेज और पिजारो के युग के स्पेनवासियों के समय से लेकर आज तक उसकी मिसाल नहीं मिल सकती।...."१८ फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने १८७८ में लिखा था "हमारे पूर्वी साम्राज्य का किसान पूर्व में, नहीं शायद सारी दुनियां में, सबसे ज्यादे दर्दनाक नजारा है।"१९ अँगरेजों की स्वार्थता के कारण भारत की आर्थिक दशा बहुत बुरी हो गई थी। अँगरेजों ने भी कबूल किया है इस बात को, जैसा कि वेंटिक ने कहा कि भारतवर्ष के जमीन पर सूत्रकारों की अस्थियाँ छाई हुई है।२० उन्नीसवीं शदी से आज तक की आर्थिक अवस्था को हम निम्नलिखित भागों में विभक्त कर विचार करेंगे।

(१) खेती (२) व्यापर कला कौशल (३) खनिज (४) जंगल

(१) **खेती**—भारत सदा से कृषि प्रधान देश रहा है। भारतीय भूमि उर्वरतम भूमि है। १९ वीं शदी के प्राथमिक

१७ वेल्थ आफ नेसन्स।
१८ एडवर्ड टामसन और जी० टी० ग्रेरेट, उद्धत पुस्तक हिन्दुस्तान
१९ उद्धृत वि० इति० क० (हिन्दी) नेहरू पृ० ६०९
२० हि० को क०।

अंश में ५० प्रतिशत भारतीय खेती पर निर्भर करते थे और ५० प्रतिशत अन्य अन्य कार्यों में लगे रहते थे। ज्यों-ज्यों अन्य उद्योगों का नाश हुआ त्यों-त्यों मनुष्य खेती की ओर झुके और पं० नेहरू के अनुसार विश्व युद्ध के कुछ पहले करीब ७१ प्रतिशत लोग खेती में लगे हुए थे। उन्नीसवीं शदी के प्रारंभिक भागों में भारतवर्ष में इतनी उपज होती थी जितनी कि उसके खर्च के लिये पर्याप्त थे। स्थायी बन्दोबस्त (Permanent Stllement १७९३) खेती के वास्ते योग्य नहीं सिद्ध हुआ जैसा कि एक अँगरेज विज्ञ ने भी माना है (homes)। जमींदारों का

एक नया वर्ग बन गया जिसकी स्वार्थान्ध प्रकृति एवं कड़े टैक्स ने किसानों की कमर तोड़ दी। वे खेती छोड़ना चाहते थे, चूंकि वे लगान देने में असमर्थ थे, परन्तु अँगरेजों के अत्याचार के कारण उन्हें खेती करना पड़ता और टैक्स भी देना पड़ता था वे बधुआ खेत मजदूर (Serf) बन गये। टैक्स वसूलने वालों से अपमान सहने पड़ते, जूते खाने पड़ते, बेइजती उठानी पड़ती—भला इस दशा में खेती की प्रगति कैसे होती ?

१९ वीं शदी के मध्य भाग में अँगरेजों ने नील की खेती का ठीका लेना शुरू किया, क्योंकि उन दिनों इसकी मांग बहुत थी। नील की खेती करने के लिये किसानों को वे प्लाण्टर्स (निलहे अँगरेज) दबाव देते थे। निलहे किसानों पर बड़े-बड़े अत्याचार किये जाते थे इस प्रथा का अन्त हाल ही में महात्मा

गांधी के प्रबल प्रयास से चम्पारण में हुआ है। हाँ इसके पहले भी अनेक भारतीय सुधारकों ने इस प्रथा की बहुत कड़ी आलोचना की थी जैसा कि नीलदर्पण नामक ग्रन्थ में किया गया है।

जितने भी शिक्षा सुधार हुए कृषि शिक्षा का स्थान कहीं नहीं मिला। परन्तु डा० वोवेल्कर ने भारतीयों को नहरों एवं कृषि कार्य में सुभीते देने के लिये कहा और इन्हीं महाशय के परिश्रम से कृषि शिक्षा का भी प्रचार हुआ लार्ड लिनलिथगो के समय में 'Imperial council of Agricultural Reasearch' स्थापित हुआ, जिमने खेती के लाभार्थ अनेक प्रयास किये।

कृषि शिक्षण के लिये अनेक कृषि कालेज स्थापित किये गये।

द्वितीय विश्व युद्ध के समय में किसानों की हालत और रही हो गई। वे जमीन बेचते-बेचते बहुत गरीब हो गये और खेत के प्रधान अधिपति से जिमीन्दार बन गये। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद Imperal Council of Agricultural Reasearch ने कृषि कार्य के उन्नति के लिये एक योजना बनाई। इस योजना पूर्ति के लिये १००० करोड़ रुपये की आवश्यकता थी और प्रतिवर्ष २५ करोड़ की आवश्यकता थी। इसके अनुसार १० वर्ष में५० प्रतिशत और १५ वर्ष में शतप्रतिशत उन्नतिकी सम्भावना थीं। परन्तु यह योजना खटाई में ही फूलती रही।

खेती के लिये खाद आवश्यक है। गोबर सुन्दर खाद है। १९४४ के नोभेम्बर में यूनाइटेड किंगडन से एक मिसन

भारतवर्ष को एक खाद कारखाना खोलने को कहा जिसमें ३५०,००० टन खाद तैयार हो। सिन्दरी के खाद का कारखाना आज विश्व प्रसिद्ध है।

(२) व्यापार और कला कौशल

भारतीय वस्तुओं की मांग उन्नीसवीं शदी तक प्रायः सम्पूर्ण सभ्य संसार में थी। जब इङ्गलैंड में औद्योगिक क्रांति (१८ वीं शदी) हुई तो इङ्गलिस्तान के व्यापारियों ने अँगरेजी सरकार से कहकर भारतीय मालों पर करीब ८० प्रतिशत चुंगी बैठा दी। "कुछ भारतीय वस्तुओं को व्यवहार में लाना भी अवैध घोषित हुआ।" अँगरेजों ने कहा कि भारत कृषि प्रधान देश है, परन्तु यह कहना भारत के साथ अन्याय करना था। १८४० में इतिहासज्ञ मोटगुमरी मार्टिन ने कहा था—"हिन्दुस्तान की औद्योगिक सामर्थ्य उतनी ही जितनी की कृषि सामर्थ्य। और वह शख्स जो उसे खेतिहर देश की ही हैसियत में लाना चाहता है वह उसे सभ्यता के पैमाने में उसे गिराना चाहता है।"२१

हिन्दुस्तानी महसूलों पर बहुत बड़ी मात्रा में कर लगे थे। यह केवल भारतीय उद्योग को नष्ट करने के लिये ही किया गया था। हाँ, बेंटिक एवं आकलैण्ड ने अवश्य कुछ करों को हटा दिया था।"

---

२१ उद्धृत हि० को क० में—पं० नेहरू में।

१८६० के लगभग में बंगाल में बहुत से जूट के कारखाने अँगरेजों के द्वारा खुले। इसे देखकर बहुत-से भारतीयों ने बम्बई एवं अहमदाबाग मेंअनेक सूती मिलों को खोला। अँगरेजों ने सदा चाहा है कि भारतीय उद्योग का नाश हो। अँगरेजों ने इन कपड़ों के मिलों पर बहुत कड़ा टैक्स बाँध। आश्चर्य लगता है यह सुनकर कि अँगरेजों के द्वारा इतने टैक्स लगा दिये गये भारतीय कपड़े पर कि इंगलैण्ड से आनेवाले कपड़े सस्ते पड़ते थे।

माड़वारियों, पंजाबियों एवं सिन्धियों के द्वारा भारतीय व्यापार की खूब प्रगति हुई। "आज (लड़ाई छिड़ने से पहले) दुनियाँ भर में शायद ही कोई ऐसा बन्दरगाह होगा जहाँ कम-से-कम एक दो सिन्धी दूकानें न हों।२२ यत्र तत्र गृह-उद्योग का नष्ट प्राय रूप चल रहा था।

सबसे प्रबल औद्योगिक प्रयास १६१० ई० में हुआ। जमसेदजी ताता ने जमसेदपुर में अहरन एण्ड स्टील कम्पनी खोली। अँगरेजों की बक्र दृष्टि से यह भी नहीं बची, परन्तु यह खत्म न हो सका। जब प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ा तो अँगरेजों को लोहे की समान आवश्यकता हुई तो ताता अहरन फैक्ट्री ने खूब प्रगति की ओर ब्रिटिश साम्राज्य का प्रधान लौह कारखाना बन गया। इस विश्वयुद्ध में अनेक उद्योग उठ खड़े हुए परन्तु

---

२२ हि० को क०—पं० नेहरू पृ० ४१०।

इस विश्वयुद्ध के बाद अँगरेजों की कृपा दृष्टि क्रूर दृष्टि में बदल गई। १९३९ में जो नेशनल प्लानिंग कमिटी बनी उसने उद्योग के मदद के लिये अनेक सुझाव उपस्थित किये।

हिन्दुस्तान में जो हवाई जहाज, जल जहाज, मोटर की खपत होती थी वह इङ्गलैण्ड और अमेरिका से आती थीं। भारत में जब उपर्युक्त चीजों के बनने का प्रयास १९४० के करीब में हुआ। "एक अमेरिकन कारबार के साथ हरेक चीज तय कर ली गई और हिन्दुस्तान सरकार और हिन्दुस्तान में फौजी प्रधान केन्द्र को, उनकी मंजूरी के लिये तार भेजे गये। कोई जवाब नहीं मिला। कई बार याद दिलाने पर एन जवाब आया और उसमें योजना को नापसंद किया गया था। जब जहाज इङ्गलैंड और अमेरीका से खरीदे जा सकते हैं, तो उन्हें हिन्दुस्तान में बनाने की क्या जरूरत है।"२३

अनेक भारतीय जिन्होंने विदेशों में जाकर शिक्षा प्राप्त की थी, भारत में आकर औद्योगिक उन्नति के लिए स्तुत्य प्रयास किया। अनेक विदेशी मिशनों ने भी यदाकदा राय-विचार देकर सहायता दी। जिसमें सबसे प्रमुख है 'मेडा कम्पनी' नामक अमेरिकन मिशन जो १९४२ ई० में भारत आया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद औद्योगिक उन्नति में अँगरेजों का भी प्रयास स्तुत्य है। औद्योगिक प्रगति के लिये ३९४२ या ४३

---

२३ वही पृ० ५१५।

में एक बृहद योजना बनाई गई। १६४४ में (centrai technical power board) की स्थापना की गई जिसका प्रधान उद्देश्य जल विद्युत उत्पादन था। यह ज्ञातव्य है कि १६४२ के बाद जो भी बृहद योजना बनती थी उसमें सरकार भारतीय नेताओं से भी परामर्श लेती थी।

(३) भारत में खनिज प्रचुर मात्रा में है। अँगरेजों ने भी कभी इस विषय में क्रूरता न दिखलाई क्योंकि इनसे उनका आर्थिक स्वार्थ था। सबसे संगठित प्रयास, खनिज के लिये (geological survey of Inda) के द्वारा किया गया। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद जो भारत का India's reconstruc ion plan हुआ उसमें खनिज अन्वेषण को भी मुख्य स्थान मिला। दिसम्बर १६३८ में, जो national planning committee बनी थी और जिसके चेयरमैन पं० जवाहरलाल नेहरू थे। ने असल ने १६४५ के बाद खनिज उन्नति के तरफ प्रयास किया।

स्वतंत्रता के बाद

स्वतंत्रता के बाद लोगों ने देखा कि इस उद्योगी विश्व में प्रगति करने के लिये उद्योग बढ़ना होगा। दिसम्बर १९४८ ई० में प्रधान मंत्री ने कहा था "(१) केवल सुरक्षा, रेलवे, परमाणु-शक्ति आदि के उद्योग-धंधे को ही राज्य के हाथ में रखा जायगा। (२) राष्ट्रीय महत्व के उद्योग-धंधे जैसे–कोयला, लोहा,

इस्पात, विमान-निर्माण आदि का काम करनेवाली कम्पनियों को छुआ नहीं जायगा। हाँ, आगे से इस सम्बन्ध के नये कारखाके सरकार की ओर से भी खुलेंगे। (३) नमक, बिजली, इञ्जीनियरी, मोटरकार, भारी रसायन आदि जैसे आधारभूत उद्योग-धंधो का नियन्त्रण और नियमन राज्य की ओर से होगा और (४) बांकी सारा औद्योगिक क्षेत्र व्यक्तिगत प्रबन्ध में रहेगा।"२४ भारत के प्रतिनिधियों ने झोली पसार-पसारकर पूजीवादियों के दरवाजे खटखटाते, दूसरे तरह से कहू कि प्रार्थना की—कितनी शर्म की बातें थी !! प्रसिद्ध पूजीपति घनश्यामदास बिड़ला ने अमेरिकन पूजीपतियों की प्रार्थना की, डालर एवं मशीन की भिक्षा मांगी !!! अमेरिका ने दया दिखलाई परन्तु उसमें स्वार्थ परता की ही अधिकता है। अमेरिका ने भारत को कई बार आर्थिक मदद दी हैं क्यों ? इसलिये कि संसार में जो साम्यवाद की भेड़ी बज रही है उससे पूजीवादी देश कांप रहा है।

सुर-नर मुनि सबके यह रीती, स्वारथ लागि करे सब प्रीती।

विदेशी समझते हैं कि भारतके पास कोयला, मेगनीसियम, आलमुनियम, लोहा आदि की कमी नहीं है वह प्रबल औद्योगिक देश बन सकता है इसलिये जदाकदा भारत को विदेशों से चावल, गेहूँ आदि चीज मिलते रही हैं।

---

२४ आज की राजनीति—राहुल सांस्कृत्यायन।

जब तक पैसा गांठ, यार संगहि संग डोले।
पैसा रहे न पास, यार मुख से नहीं बोले॥

पेट्रोल की भारत को बहुत कमी है। "बहुत सा पेट्रोल का खर्च कम किया जा सकता है, शहर, में मोटर बसों को हम बिजली से चला सकते। दरअसल अब ट्रामवे चलाने की आवश्यकता नहीं है, उससे खामखाह सड़क खराब लगती है। हम ऊपर के बिजली के तारों के बल मोटर-बस चला सकते हैं। मोटरों और बसों में भी एक चौथाई पेट्रोल के खर्च को कम किया जा सकता है, यदि अपनी सारी चीनी मीलों के सीरे को स्पिरिट में बदल दिया जाय।.....कोयले से भी हम बहुत-सा पेट्रोल पैदा कर सकते हैं।"

(राहुल सांस्कृत्यायन)

भारत का सबसे बड़ा निर्यात चाय है। इसका सबसे बड़ा खरीददार इङ्गलैंड है? जो ३० करोड़ पौंड खरीदता है। कृषि उन्नति के लिये 'अधिक अन्न उपजाओ' की घोषणा हुई तो बहुत, परन्तु प्रगति बहुत धीमी है। योजनाएं खड़हे के गति से बढ़ती है और कार्य रूप में कछुए के गति से। पंचवर्षीय योजनाओं से प्रगति तो बहुत हुई है, परन्तु रूसी पांच वर्षीय योजना के सामने नगन्य है। व्यापार की भी हालत उन्नत है परन्तु जलीय व्यापार की हालत अच्छी नहीं कही जा सकती।

कृषि शिक्षा के लिए पूसा, दिल्ली, सबोर आदि में उन्नत केन्द्र हैं। कृषि विभाग, कृषि उन्नति के लिए प्रयत्नशील है।

हाल ही में (२१ मई १९५४ ई०) देशमुख, जो कृषि विभाग के संघीय मन्त्री (Union minister of Agriculture) ने Statistic branch of Indian Council of Agricultural Research का शिलान्यास दिल्ली में किया है।

हाल ही में अमेरिका ने १० करोड़ ४० लाख डालर की सहायता भारत को देना स्वीकृत किया है। जिनमें ४ करोड़ ५० लाख डालर की आर्थिक सहायता एवं ४ करोड़ डालर गेहूं, रुई आदि कृषि पदार्थों के रूप में, बांकी १ करोड़ ९० लाख, डालर की सहायता टेकनिकल चीजों के रूप में भी मिलेगी।

—:※:—

प्रश्न—१२ संघीय शासन का गठन एवं कार्यों का वर्णन संक्षेप में कीजिये।

भारतवर्ष प्रजातांत्रिक गणराज्य (Sovereign Democratic Republic) है। Democracy का अर्थ होता है जनता के द्वारा शासन। यह शब्द (democracy) demos (the People) एवं Kralein : (to rule) से बना है जिसका भी उपर्युक्त ही अर्थ होता है।

भारतीय संघ एक शक्ति सम्पन्न एवं सुसंगठित संघ है। इस संघ ने २६-११-१९४९ को अपना संविधान निकाला जिसके अनुसार आज संघीय शासनकार्य संचल हो रहा है।

नीचे संघीय शासन का गठन एवं कार्य का संक्षिप्त रूप प्रस्तुत किया जाता है—

राष्ट्रपति (President)।

राष्ट्रपति, जिसके अधिकार में परोक्ष या अपरोक्ष रूप से सभी शक्तियाँ होगी (विधानानुसार), पार्लमेंट के दोनों सदन (Both houses of Parliament) एवं राज्य के (Legislative assemblies) के द्वारा मनोनीत किये जायंगे। वही व्यक्ति इस पद पर सुशोभित होगा जो भारत का नागरिक होगा, जिसकी आयु ३५ वर्ष से कम न होगी एवं जिस पर लोकसभा को विश्वास होगा। ५ वर्ष तक इस पद पर रह सकते हैं। सम्विधान के नियमों के नहीं मानने पर राष्ट्रपति पर महाभियोग लगाया जा सकता है। सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश के पास उसे प्रतिज्ञा करनी पड़ती है कि वह सदा देश और सम्विधान को रक्षण करेगा ?

उपराष्ट्रपति (The vice-president)—उपपदाधिकारी (Ex-Officio Chairman).

यह पार्लमेंट के दोनों सदनों द्वारा चुना जायगा। वही व्यक्ति इस पद के लिये योग्य समझा जायगा जो भारत का नागरिक होगा, जिसकी उम्र ३५ वर्ष की होगी। ये न तो पार्लमेंट के सदस्य हो सकते हैं और न किसी राज्य के लेजिसलेचर के सदस्य।

मन्त्रिमंडल (Council of ministers)

राष्ट्रपति के कार्यों में मदद देने के लिये प्रधान मन्त्री सहित एक मन्त्रिमंडल होगा। जिनमें प्रधान मंत्री (The Prime minister) तो राष्ट्रपति द्वारा चुने जायंगे और अन्य मंत्रिगण

राष्ट्रपति एवं प्रधानमन्त्री के द्वारा। मन्त्रिमंडल, लोकसभा के प्रति उत्तरदायी होगा।

राष्ट्रपति एक The Attorney General को नियुक्त करेगा जो भारत सरकार को वैधानिक विषयों में सहायता पहुँचावेगा।

पार्लमेंट। (Parliament)

इसके २ विभाग होंगे–राज्य परिषद (Council of states) एवं लोक सभा (The House of the people)

राज्य परिषद में २५० से ज्यादे सदस्य नहीं होंगे जिनमें १२ को राष्ट्रपति मनोनीत करेगा जिनमें साहित्य, विज्ञान, कला, एवं समाज सेवा विषयक विशेषज्ञ होंगे और २३८ सदस्य राज्य प्रेषित होंगे।

लोक सभा में ५०० से अधिक सदस्य नहीं होंगे जो संघीय बालिक नागरिकों द्वारा निर्वाचित होंगे। इस सभा की अवधि पांच वर्ष होगी, परन्तु इसमें हेर फेर की भी गुंजाइस है।

पार्लमेंट के सदस्य होने के लिये भारत का नागरिक होना होगा। राज्य परिषद के सदस्य के लिये ३० वर्ष की आयु आवश्यक है एवं लोक सभा के सदस्यों के लिये २५ वर्ष की।

The Union Judicary.

एक सुप्रीम कोर्ट, जिसके प्रधान "प्रधानन्यायाधीश" कहलावेंगे, होगा। राष्ट्रपति प्रधान न्यायाधीश को नियुक्त करेगा। इस न्यायालय के न्यायाधीशों, को ५ वर्ष तक किसी उच्च न्यायालय (High Court) का न्यायाधीश होना

आवश्यक है या कम से कम १० वर्ष तक किसी उच्च न्यायालय में एडभोकेट या राष्ट्रपति के विचार में योग्य न्यायाधीश होना आवश्यक है।

प्रश्न—१३ नागरिकों को भारतीय सम्विधान ने कौन-कौन से अधिकार दिये हैं?

सम्विधान के अनुसार नागरिकों को निम्न अधिकार प्राप्त है :—

(१) **समानता का अधिकार**—जाति, जन्म, कुल, स्थान, जन्य समानता।

(२) शासन कार्य एवं किसी राज्य के अधीन जो नियुक्तीकरण होगा उसमें समानता।

(३) अस्पृश्य भाव (Untonchability) को हटा दिया गया है और इस तरह की भावना वाले व्यक्ति दण्डनीय ठहराये गये हैं।

(२) **स्वतंत्रता**—(१) बोलने की (२) भावना व्यक्त करने की (३) संघ बनाने की। (४) विना शस्त्र जहाँ-तहाँ जाने की। (५) सम्पूर्ण देश में (Terri tory) में भ्रमण करने की। (६) धन कमाने और बेचने की। (७) किसी भी व्यापार एवं पद पर नियुक्ति होने की, स्वतंत्रता प्राप्त है।

(३) **धार्मिक अधिकार**—(१) किसी भी धार्मिक संस्था खोलने, चलाने का अधिकार प्राप्त है।

(४) विद्यालय में समता का अधिकार।

(५) प्रत्येक आदमी को अधिकार है कि वह अपनी वैयक्तिक वैभव की सुरक्षा करे और कल-कारखाने-व्यापार-बढ़ावें।

प्रश्न—१४ भारतीय सम्विधान की विशेषताओं पर संक्षिप्त प्रकाश डालो।

प्रत्येक देश के सविधान में अपनी-अपनी कुछ-न-कुछ विशेषताएँ रहती ही है और यही विशेषताएँ सम्विधान संकलन कार्ता या निर्माता एवं सम्विधान की उच्चता का परिचायक है।

(१) भारतीय सम्विधान की पहली विशेषता तो यह है कि यह पार्लमेन्ट के द्वारा बनी हुई नहीं बल्कि जनता द्वारा बना है जैसा कि सम्विधान के प्राथमिक (Preamble introduction esp. that of an act of parliament givine its reason and purpose) कहा गया है।[२५]

(२) **प्रजातंत्र का स्वरूप** भारतीय सन्विधान के मुताबिक विशुद्ध प्रजातांत्रिक देश है। अशुद्ध प्रजातांत्रिक देश England है जहाँ राजा रहते हुए भी प्रजातंत्र। यद्यपि वहाँ राज-तंत्र गौण

25 "In Our Constituent Assembly this twenty-Sixth day of November, 1949, do Hereby Adopt Enact, Give to ourselves this Constitution"

हैं-फिर भी है। अतः हम उसे राजतांत्रिक प्रजातंत्र कहते हैं। भारत का प्रधान राष्ट्रपति केवल ५ वर्ष के लिये ही जन-मन-से मनोनीत होगा। प्रजातंत्र का सच्चा स्वरूप सम्विधान द्वारा प्रहीतहै।

(३) लोकतंत्र-Republic लोक तंत्र का शुद्ध प्रतीक भारतीय सम्विधान है। भारत में प्रजातांत्रिक लोकतंत्र और इङ्गलैण्ड में राजतांत्रिक लोकतंत्र है। बालिग मताधिकारानुसार निर्वाचित संसद और विधान मण्डल के विचार पर ही मन्त्रिमण्डल और और राज्य-शासन-दिशा निर्भर है—अतः भारत में लोकतंत्र है।

(४) धर्म-निरपेक्ष राज्य (Secular state) शासन कार्य में धार्मिक विचारों सिद्धान्तों का विचार नहीं किया जायगा। धार्मिक उच्चता और न्यूनता पर, शासन एवं राज्य संचालन क्षेत्र में, ध्यान नहीं दिया जायगा। हिन्दू, मुसलमान सभी समान होंगे। आज विश्व में ज्यादेतर इसी प्रकार के देश है जो (Secular State) है। परन्तु जिसका अपवाद पाकिस्तान है।

(५) संघ और राज्य में सम्बन्ध (Relation between Union and states) संघ और राज्य के सम्बन्ध को भारतीय सम्विधान में साफ-साफ बतलाया गया है, जिससे पीछे कोई झंझट न हो यदि कहीं हो तो इसका निर्णय सुप्रीम कोर्ट करेगा।

(६) सम्विधान बनाने में भाषा को स्वच्छ एवं बोधगम्य रखना पड़ता है, नहीं तो कभी कभी यह भ्रम हो जाता है कि

अमुक नियम का अर्थ यह होगा या वह। भारतीय सम्विधान की यह विशेषता विशेष रुप से उल्लेखनीय है।

(७) सम्विधान का स्वरूप—सम्विधान ३ प्रकार के होते हैं (१) Flexible (परिवर्तनशील) (२) Ridid (अपरिवर्तन शील) (३) चली आती हुई परम्परा के अनुसार या यदा कदा पास नियमों के अनुसार। प्रथम और तृतीय श्रेणी में इङ्गलैंड का सम्विधान आता हो और द्वितीत श्रेणी में अमेरिका का। भारतीय सम्विधान उपर्युक्त किसी भीश्रेणियों में नहीं आता।

(८) कार्य पालिका—भारतीय सम्विधान में कार्य पालिका को बहुत से ऊँचे ऊँचे अधिकार दिये गये हैं। कहने का तात्पर्य यह कि यहाँ की कार्य पालिका शक्ति सम्पन्न है—ऐसी बात अमेरिका के सम्विधान में नहीं है।

(९) विबधता में एकता—सविधान ने संघ को बहुत प्रबल अधिकार दिये हैं। यदि कहें कि राज्य शासन का विकाश केन्द्रीय शासन छाया में होता है तो तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं होगी। राज्यपाल की नियुक्ति प्रसिडेंट के द्वारा ही होता है। बहुत से नियमों पर राज्य को केंद्र से आज्ञा लेनी पड़ती। इतना बड़ा देश जिसमें अनेक जाति अनेक धर्मों के माननेवाले-ही। उसने एक सी नागरिकता होना सम्विधान की एक प्रमुख विशेषता है।

(१०) राष्ट्रपति और मन्त्रिमंडल में सम्बन्ध—राष्ट्रपति के नाम से ही सभी कार्य होंगे और भारतीय सविधान ने

राष्ट्रपति अनेक अधिकार एवं विशेषाधिक दिये है। वह किसी परिस्थिति में अध्यादेश (Ordinance) निकाल सकता है। फिर भी यहाँ का मन्त्रिमंडल प्रबल है। मन्त्रिमंडल राष्ट्रपति के प्रति उत्तरदायी न होकर संसद के प्रति उत्तरदायी है।

(११) न्याय पालिका को स्थान—सविधान ने न्याय पालिका को बहुत ऊँचा स्तर और अधिकार किया है। प्रजातंत्र में 'मेहतर और राजा' न्याय के सामने एक होता है। यदि प्रधान मंत्री एवं राष्ट्रपति किसी को व्यर्थ तकलीफ दे—अन्याय पूर्वक-तो वह भी दोषी है-इसे देखने के लिए सर्व शक्ति सम्पन्न न्याय पालिका की आवश्यकता होती जो है—यह किसी भी नियम (Act) को यह कह कर अवैध कर सकती है। कि यह सम्विधान के अनुसार नहीं है। ऐसी ही बात अमेरिका में है।परन्तु इङ्गलैंड में ठीक उलटा है।

प्रश्न—१५ आपके राज्य की शासन व्यवस्था कैसी है? कौन कौन से उसके विभाग हैं? संक्षिप्त परन्तु पूर्ण वर्णन कीजिये।

राज्य का प्रधान शासक राज्यपाल (Governor) है।[२६] कार्यकारिणी (Executive) की सारी शक्ति का व्यवहार

---

२६ 'अ' श्रेणी के राज्यों का प्रधान राज्यपाल।
'ब' श्रेणी के राज्यों का प्रधान राजप्रमुख कहलाते हैं।

राज्यपाल प्रत्यक्ष रूप से या अप्रत्यक्ष रूप से करता है। अप्रत्यक्ष रुप माने मन्त्रियों एवं अन्य अधिकारियों के द्वारा। राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति (President) के द्वारा होती है। जिस दिन से ये इस पद पर जायँगे, उस दिन से ५ वर्ष तक उसे कार्य सम्पादन करने का अधिकार है, परन्तु राष्ट्रपति यदि चाहे तो वह अवधि के पहले भी उसे स्थान छोड़ने के लिये वाध्य कर सकता है।

राज्यपाल पद के उम्मीदवार के लिये भारत का नागरिक एवं ३५ वर्ष का उम्र होना आवश्यक है। उम्मीदवार यदि संसद या राज्य के व्यवस्थापिका सभा के सदस्य हों तो राज्यपाल के कार्य सम्पादन करने के समय उसे उन स्थानों को रिक्त करना आवश्यक होगा। राज्यपाल के वेतन का निर्धारण संसद करेगा। व्यवस्थापिका सभा के द्वारा जो विधेयक (Bill) बनते हैं, वे राज्यपाल के पास भेजे जाते हैं। राज्यपाल को इसे स्वीकृत या अस्वीकृत करने का पूरा अधिकार है। अर्थ विषयक बिल अपवाद में है। राज्यपाल कभी कभी, समय एवं परिस्थिति के अनुसार, अध्यादेश (Ordinance) लागू कर सकता है, परन्तु यह तभी हो सकता जब व्यवस्थापिका की बैठक न हो रही हो। जब इसकी बैठक होगी तो अध्यादेश पर विचार किया जायगा। व्यवस्थापिका के विचार से यह अध्यादेश कानून (act) भी बन सकता है और रद्द भी कर दिया जा सकता है। यह

ज्ञातव्य है कि राज्यपाल उस विषय पर अध्यादेश नहीं लागू कर सकता जिसका सम्बन्ध अन्य राज्य से हो। ऐसी स्थति में राज्यपाल को राष्ट्रपति से आज्ञा लेना परमावश्यक है।

राज्यपाल के कार्यों में सहायता देने, विचार देने के लिये एक मन्त्रिमंडल (Council of ministers) है। इस मन्त्रिमंडल के मुख्य मंत्री (Chief minister) को राज्यपाल नियुक्त करता है और अन्य मन्त्रियों की नियुक्ति राज्याल मुख्य मंत्री से विचार विमर्श करके। मंत्रिमंडल सामुहिक रुप से व्यवस्थापिका सभा (Legislative assembly) के प्रति उत्तरदायी है। मंत्रिमंडल की अवधि ५ वर्ष की होती है, इसके बीच में भी यदि व्यवस्थापिका सभा मंत्रिमंडल के प्रति अविश्वास का प्रस्ताव पास करे या न पवे तो उसुका विनाश हो जाता है।

मुख्य मन्त्री के पद पर उसीको चुना जाता है जिसपर व्यवस्थापिका के ज्यादे सदस्यों का विश्वास हो।

बिहार, मद्रास, उत्तर प्रदेश, पंजाब, बम्बई एवं पश्चिमी बंगाल में व्यवस्थापिका (Legislature) दो सदनों में है। अन्य राज्यों में एक ही सदन है। द्विसदन कहने का तात्पर्य व्यवस्थापिका सभा (Legislative Assembly) और व्यवस्थापक परिषद-(Legislative Council) है।

व्यवस्थापिका सभा (L. A.) में प्रत्यक्ष निर्वाचन द्वारा

चुनित सदस्य हैं । ७५ हजार लोगों का एक प्रतिनिधि (Representative) होता है । परन्तु किसी तरह इस सभा ५०० से ज्यादे और ६० से कम सदस्य नहीं रह सकते ।

Legislative Assembly के उम्मीदवार वे लोग हो सकते हैं, जो पागल, दिवालिया, भारतीय नागरिकता से हीन, न्यायालय द्वारा प्रतिबन्धित नहीं हो ।

व्यवस्थापिका परिषद स्थायी हैं । हरेक दूसरे वर्ष इस सभा के तिहाई सदस्य मुक्त कर दिये जाते हैं । इस परिषद में कम-से-कम ४० मेम्बर रहते । इसके सदस्यों के १ तिहाई म्युनिसिपैलेटी (Municipalities) जिला बोर्ड (district boards) एवं संसद द्वारा अधिकार प्रदत्त स्थानिक संस्थाओं से लिये जाते हैं। (One twelfth) सदस्यों की नियुक्ति विश्वविद्यालय के ग्रेज्युएट (Graduates) जो कम-से-कम ३ वर्ष तक हुए कि Graduates हो गये हों से होती है । आधा भाग राज्य के भीतर के शिक्षा संस्था जो माध्यमिक से निम्न का न हो से चुने जायँगे । एक तिहाई (One-third) व्यवस्थापिका सभा (Legislattve assembly) के द्वारा वे लोग चुने जायँगे जो उस सभा के सदस्य नहीं है ।

बाकी छटा भाग राज्यपाल द्वारा चुनित साहित्य, कला, विज्ञान आदि के आचार्य हैं ।

'अ' एवं 'क' श्रेणी के राज्यों में High Court (उच्च

न्यायालय होता) है। राज्य का सबसे प्रधान न्यायालय होता है। इनमें एक मुख्य न्यायाधीश (Chief Justice) होता है और, और भी न्यायाधीश होते हैं। इन सबों को नियुक्ति सुप्रीमकोर्ट के प्रधान न्यायाधीश, राज्यपाल एवं राष्ट्रपति मिलकर करते है। उच्च न्यायालय के पास मण्डल न्यायालय के फैसले पर अपील की जाती है दिवाली एवं फौजदारी मामले की अपील होती है। उच्च न्यायालय का न्यायाधीश ६० वर्ष की उम्र तक पद पर रहते हैं। इस बीच में से स्वेच्छा से भी त्याग पत्र दे सकता है और राष्ट्रपति के द्वारा पद छोड़ने पर बाध्य भी जा सकता है।

प्रश्न—१६ एशियाई राष्ट्रों के साथ ब्रिटिश काल में भारत का सम्बन्ध कैसा था ?

किसी राष्ट्र को किसी राष्ट्र से दो प्रकार के सम्बन्ध रहा करता है पहला व्यक्त द्वितीय अव्यक्त।

व्यक्त सम्बन्ध = किसी देश से किसी देश में जाना आना, उससे शत्रुवत या मित्रवत व्यवहार, व्यापारिक या सांस्कृतिक सम्बन्ध।

अव्यक्त सम्बन्ध = किसी देश की क्रांति से या शान्ति से पड़े प्रभाव। रूस की क्रांति, एवं चीन की क्रांति से राष्ट्रीय जागरण को सम्बन्ध है परन्तु यह अव्यक्त सम्बन्ध है।

'विजित देशों पर विजेताओं की ही नीति चलती है।'— भारतवर्ष उसके अपवाद में नहीं था फिर भी राष्ट्रीय जागरण के बाद भारतीयों ने भी इस ओर ध्यान दिया।

अफगाननिस्तान के साथ—नीतिज्ञों का कथन है कि सीमा पर के राज्यों के अपने प्रभाव में, और शक्तिशाली रखना चाहिये क्योंकि वाह्य आक्रमण का पहला धक्का उसे ही सहना पड़ता है। रूस पूरब में बढ़ते बढ़ते अफगानिस्तान के नजदीक चला आया फलतः अंगरेज बहुत घबराये। इस समय अफगानिस्तान में दोस्तमुहमद ने गद्दी लेली और शाहशुजा को भगा दिया, जो भारत में अँगरेजों की शरण में आ गया।

फारसियों के विरुद्ध दोस्तमुहम्मद ने अँगरेजों से मदद मांगी परन्तु मदद न मिली। फलतः वह रूस के तरफ झुका फलतः अँगरेजों ने युद्ध का एलान कर दिया और दोस्तमुहम्मद काबुल भाग गया। अँगरेजों की हालत इस युद्ध में बिगड़ गई और नेता मैकनाटन मारा गया और अँगरेज हार गये। परन्तु दूसरी सेना, जो जेनरल नौट और पाउलक के अधीन आई, उसने इस पराजय को विषय में बदल दिया। (१८४३ ई०)। दोस्तमुहम्मद के बाद उसका पुत्र शेरअली गद्दी पर बैठा। मोयो ने उसके प्रति प्रेम दिखलाया। उस समय विश्व राजनीति में अनेक फेर बदल हो रहे थे अँगरेजों ने चाहा कि अफगानिस्तान पूर्ण आंग्ल प्रभाव में आये। अतः इङ्गलैंड से लिटन इस कार्य के लिये चला। वह शेरअली से बातचीन भी करता और उसके राज्य में घेरा भी डालता। १८७७ में अँगरेजों ने क्वेटा पर अधिकार कर लिया जो अफगान किले का प्रबल बुर्ज था।

अफगानों ने रुस से स्थायी मित्रता कर ली। उसी समय बर्लिन की सन्धि हुई (जुलाई १८७८ ई०) जिससे अँगरेज एवं रूस दोनों मित्र बन गये। परन्तु यह बात ज्यादे दिन तक न चली लिटन ने अफगानिस्तान पर ३ तरफ से आक्रमण कर दिया और उसे जीत लिया शेरअली तुर्किस्तान भाग गया। अँगरेजों से इसके पुत्र याकूब से **गण्डमन की सन्धि की (मई १८७९ ई०)** जिसके अनुसार काबुल और इरान में अँगरेज रेजीडेन्ट रहा और अफगानिस्तान की अन्तर्राष्ट्रीय नीति अँगरेजों के हाथ में आ गई। परन्तु अफगानों ने विद्रोह कर रेजीडेंट को मार डाला (१८७९ ई०) जिस पर क्रुद्ध होकर रौबर्ट्स ने अफगानों को कुचला और याकूब खाँ को पदच्युत किया और अब्दुर-रहमान को अफगाननिस्तान का अधिपति बनाया गया इसके बाद हबीबुल्ला वहाँ का वजीर बना जिसने गण्डमन सन्धि की बातों को मानने से पहले तो इनकार किया परन्तु पीछे इकरार। १९०७ की सन्धि के मुताबिक रुस और अँगरेज मित्र बन गये। प्रथम विश्व युद्ध में अफगानों ने ब्रिटेन को खूब मदद दिया। जागरण की भावना अफगानों में आई और वरकतुल्ला ने हबीबुल्ला की हत्या कर दी। अमीर अमानुल्ला ने अँमरेजों से अपना पिंड छुड़ाना चाहा परन्तु असफल रहा और अँगरेजों से सन्धि कर ली (१९१९) और अँगरेजों ने २२ नवम्बर १९२१ को पूर्ण स्वतंत्रता दे दी।

नेपाल के साथ—पृथ्वीनारायण ने नेपाल में गोरखा राज्य

की स्थापना की। (१७६५)। वहाँ की आदिवासियों ने अँगरेजों से मदद लेकर पृथ्वीनारायण को हराना चाहा। अँगरेजों ने मदद दी परन्तु अँगरेज भी हार गये (१७६८ ई०)। १८०२ में नेपाल का राजा नाबालिग था जिनका अभिभावक भीमसेन था। नेपालियों के राज्य और अँगरेजों के राज्य के बीच की सीमा तय नहीं थी फलतः दोनों में मतभेद रहा करता था। अँगरेजोंने नेपाल पर चढ़ाई कर दी। इसका प्रधान आक्टरलेनी और जिलेस्पी था। जिलेस्पी युद्ध में मारा गया (१८१४ ई०)। गुरखों ने डरकर मुकाबला किया और अँगरेजों के छक्के छुटने लगे परन्तु पासा पलट गया। इस युद्ध के दो नेपाली नायक अमरसिंह और बलभद्र की वीरता प्रसिद्ध है। अंत में **सुगोली की सन्धि** हुई जिसके अनुसार गुरखों ने यह कबूल किया कि नेपाल में अँगरेजों के सिवा किसी विदेशी को टपने न देंगे। तब से नेपाल के साथ अच्छा सम्बन्ध रहा। अँगरेजी सेना में नेपालियों को ही लिया जाने लगा। विश्व युद्ध समय को उसकी वीरता इतिहास प्रसिद्ध है।

बर्मा के साथ—१८२३ में लार्ड एम्हर्स्ट गवर्नर जेनरल बना। बर्मियों ने आसाम एवं मणिपुर जीत लिया था। अँगरेजों से यह न सहा गया और उसने बर्मा पर चढ़ाई कर दी परन्तु रसद न मिलने के कारण उसें लौटने के लिये बाध्य होना पड़ा। फिर दूसरी बार अँगरेज रंगून तक पहुँच गये। बार्मी सेनापति महाबन्धु, जो अभी चटगाँव में था, अँगरेजों के दबाने रंगून को

लौट चला–यह उसने बहुत बड़ी भूल की। डोनबू की लड़ाई में बन्धुल मारा गया और बर्मी सम्राट को **यदम्बू की सन्धि करनी पड़ी** (१८२६ ई० । जिसके अनुसार आगरा, आराकान, टेनस्सीरम के प्रांत अँगरेजों को मिले।

डलहौसी ने देखा कि पेगू (बर्मा का एक प्रमुख प्रांत) में सोने की खान है। वह इसपर ललच गया। मौका भी मिल गया। बर्मा सरकार ने बर्मी कानून के अनुसार २ हत्यारे अँगरेजों को जुर्माना किया गया जिसपर अँगरेज सरकार ने बर्मी सरकार से हर्जाना मांगी जिसे देना बर्मा ने स्वीकार कर लिया। परन्तु फिर डलहौसी ने १ लाख पौण्ड मांगा जिसे बर्मा के राजा ने नहीं दिया बस अँगरेजों ने 'पेगू' जीत लिया।

फ्रान्सीसियों ने हिन्द-चीन पर कब्जा कर लिया और बर्मा में भी इनका प्रभाव बढ़ता जा रहा था। अँगरेज इसे न देख सके और यद्यपि बर्मा से मित्रवत सम्बन्ध का फिर भी डफरिन ने सेना भेजकर मण्डाला पर कब्जा कर लिया और १८८६ में ऊपरी बर्मा भी भारत में मिला लिया गया। १९३७ में बर्मा भारत से हो गया। थोड़े दिनों तक भारत और बर्मा में नहीं पटती थी। जापानियों ने बर्मा पर अधिकार कर लिया (१९४२) परन्तु मित्र राष्ट्रों ने जापानियों को हरा दिया।

बर्मा आज स्वतंत्र है और ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल का सदस्य है।

फारस से—फारस की खाड़ी में रूस का प्राधान्य हो चला

था और अन्य भी देश इन पर टूट पड़े थे। इसे रोकने के हेतु कर्जन १९०३ ई० में वहाँ गया। परन्तु १९०७ की सन्धि के अनुसार फारस का उत्तरी भाग रूस के नायकत्व को माना और दक्षिणी प्रदेश ने ब्रिटेन के नायकत्व में माना।

तिब्बत—तिब्बत चीन के अधीन एक स्वतंत्र प्रदेश था यद्यपि यह दलाइलामा के अधीन था। तिब्बत में अनेक सुवर्ण क्षेत्र थे जिसपर मुग्ध होकर वारेन हेस्टिंग्स ने उस देश से व्यापार करना चाहा। १८९९ में लामा ने रूस में एक मण्डल भेजा जिसे देखकर अँगरेज बहुत आशंकित हुए और कर्जन ने यंगहस्बैन्ड के अधीन फौजी मिशन भेजा। लासा पर कब्जा करके सन्धि कर ली जिसके अनुसार अँगरेज मण्डियाँ खुलीं।" वहाँ करीब ३०० फौजें रहने लगीं जो ब्रिटिश साम्राज्य वाद की निशानी थी। चीन जब शक्तिशाली हुआ तो उसकी छाया तिब्बत पर पड़ने लगी जिससे अँगरेज कुलबुलाये।

चीन के साथ—चीन में अँगरेजों ने १७ वीं शदी में प्रवेश किया। इन लोगों का बन्दरगाह कैंटन था,। ये लोग चीन से कच्चे माल (रुई, रेशम आदि) ले जाते और बदले में सोने देते थे परन्तु पीछे अँगरेजों ने अफीम लाना शुरू किया जिसमें उन्हें खूब नफा था। चीनी सम्राट ने कानून लागू कर अफीम की खरीद बिक्री रोक दी। फलतः अँगरेजों ने विद्रोह कर दिया। अंत में चीनी सम्राटको झुकना पड़ा। चीन का उस समय नव निर्माण हो रहा

में सनयात सेन (प्रमुख चीनी नेता) का ३ सिद्धान्त निकला जिसका अव्यक्त प्रभाव भारत पर बहुत हुआ। "चीनी क्रांति की कामयाबी पर बड़े जोड़ जोश से खुशियां मनाई गई और इसे हिन्दुस्तान में आती हुई आजादी और एशिया में यूरोप के अधिपत्य के मिटने का सूचक माना गया।"२७ १६३८ में भारतीय कांग्रेस के द्वारा एक मंडल चीन भेजा गया जिसमें ज्यादे डाक्टर थे। पं० जवाहरलाल नेहरू भी चीन गये थे। भारतीय कांग्रेस एवं चीन के साथ सदा अच्छा सम्बन्ध रहा है।

जपान—१६०५ में जापान ने रूस को परास्त कर दिया। भारतीयों को बहुत बड़ी प्रेरणा मिली कि पश्चिमी राष्ट्र अजेय नहीं है। यह अव्यक्त सम्बन्ध था। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद जापान से व्यक्त सम्बन्ध हुआ उसी समय रासबिहारी बोस ने जापान जाकर आजाद हिन्द फौज का संगठन किया। जापानी फौज के साथ सुभाषचन्द्र रंगून तक आ गये, जिससे भारतीयों को बहुत बड़ी प्रेरणा मिली।

एशियाई प्रधान देशों से भारत का ब्रिटिश काल में जो सम्बन्ध रहा है उसका संक्षिप्त वर्णन यही है।

---

२७ हि० की कहानी—नेहरू पृ० ५२२।

प्रश्न—१७ दुनियां के साथ भारतवर्ष का ब्रिटिश कालीन सम्बन्ध पर प्रकाश डालें।

दुनियाँ के साथ भारतवर्ष के सम्बन्ध पर विचारने के लिये विचार को ३ भागों में बाँट लेना चाहिये।

(१) प्रथम विश्वयुद्ध तक।

(२) प्रथम विश्वयुद्ध से द्वितीय विश्वयुद्ध तक।

(३) द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से १५ अगस्त १९४७ तक।

पूंजीवाद का आगमन—१५ वीं शदी में हुआ। १७८९ ई० में फ्रांस की राज्यक्रांति हुई और फिर १८ वीं शदी से औद्योगिक क्रांति हुई। औद्योगिक क्रांति ने साम्राज्यवाद को जन्म दिया ओर उपनिवेश निर्माण की होड़ चली। भारत में अँगरेज इसी ध्येय को लेकर आये थे। अँगरेजों का उपनिवेश अमेरिका, अफ्रिका, अस्ट्रेलिया, एवं एशिया के कई देशों में हो गया। भारतीयों का सम्पर्क उपर्युक्त सभी देशों से बढ़ा क्योंकि ये सभी ब्रिटिश शासन के अधीन थे।

नेपोलियन, इङ्गलैण्ड को सताना चाहता था। वह उसका प्रबल शत्रु था। अँगरेज विरोधी भारतीयों ने उससे मदद चाही (यथा टीपू)। नेपोलियन मिश्र तक आ गया (१७९८ ई०) जहाँ नेलसन२८ ने उसे परास्त किया। इसी समय भारत से एक फौज अँगरेजों ने मिश्र भेजा परन्तु तब तक नेपोलियन लौट चुका था।

---

२८ ब्रिटिश जल सेना का नायक।

साम्राज्यवादी प्रतियोगिता में इङ्गलैण्ड बढ़ चला। दुनियाँ में हलचल-सी मच गई। नवीन-नवीन शक्तियाँ उत्पन्न होने लगी। इन साम्राज्य निर्माताओं में स्वार्थ के लिये यदा कदा युद्ध होता रहता था। जहाँ-जहाँ ब्रिटिशों को लड़ना पड़ता वहाँ-वहाँ भारतीयों से मदद ली जाती थी। भारतीय करीब-करीब बहुत से देशों में फैल गये। इसका कारण यह था कि औद्योगिक संसार को कुली की आवश्यकता थी। पहले तो यह काम गुलामों से ली जाती थी परन्तु बाद में चलकर यह प्रथा अवैध घोषित हुई (१६ वीं शती के प्रारंभ में)। भारत से बहुत से प्रतिज्ञाबद्ध कुली अफ्रिका आदि देशों में गये।

अमेरिका में भारतीय इतने पहुँच गये कि अंत में कनाडा सरकार ने यह प्रतिबन्ध लगाया कि वही प्रवासी वहाँ जा सकता है जो अपने बन्दरगाह से कनाडा के बन्दरगाह तक एक ही जहाज पर आवे। फलतः भारतीयों का कनाडा जाना रुक-सा गया परन्तु सिख गुरुदत्त सिंह अपनी जहाज लेकर कनाडा चले। यह देखकर कनाडा के अधिकारी व्याकुल हुए और जहाज को कनाडा आने से रोक दिया।

बहुत-से भारतीय जर्मनी, यूरोप, एवं जापान में थे। उस समय साम्राज्यवाद के विश्व के २ प्रतिनिधि थे, पहला इङ्गलैण्ड और दूसरा जर्मनी। दोनों का हित आपस में टकराने लगा। जर्मनी ने जलसेना बढ़ा दी। अँगरेजों और जर्मनों में प्रतियोगिता शुरू हुई। भारत अँगरेजों के साथ चला। यूरोप २ दल में बट

गया पहला दल इङ्गलैण्ड का था। जिसमें इङ्गलैण्ड, रूस, फ्रांस (Triple entante) और दूसरा जर्मनी का जिसमें जर्मनी अष्ट्रिया और इटली था (Triple alliance)। इङ्गलैण्ड के साथ उसका साम्राज्य भी था। प्रथम विश्वयुद्ध शुरू हो गया। इस महायुद्ध में भारतवर्ष को व्यर्थ घसीटा गया क्योंकि उसे जर्मनी या उसके साथियों से कुछ लेना देना नहीं था बल्कि मित्रवत् व्यवहार था। जर्मनी के भारतीयों ने तो जर्मन सरकार को युद्ध में मदद भी की थी।

परन्तु भारतीय पूँजीपतियों का विचार था कि भारत युद्ध में भाग ले, जिससे उनके युद्ध सम्बन्धी सामान बिकें। इङ्गलैण्ड ने जबर्दस्ती भारतीय फौजों को युद्ध मोर्चों पर भेजा। ब्रिटेन ने भारत को उद्योग प्रधान देश बनाना चाहा क्योंकि उसे हथियारों की आवश्यकता थी। अंत में महायुद्ध बन्द हुआ और इसमें अपार क्षति हुई। सभी देश पस्त हुए। अमेरिकन राष्ट्रपति विल्सन ने ऐसा संघ बनाना चाहा जो विश्व में शान्ति और राष्ट्रों को सुरक्षा प्रदान कर सके। मित्र राष्ट्रों ने १९१९ के सम्मेलन में राष्ट्रसंघ की स्थापना की थी, जो उपर्युक्त ध्येय पूर्ति के लिये की गई थी। भारतवर्ष भी इसका सदस्य बना। इस सन्धि पर आलोचना करते हुए एक अँगरेज राजनीतिज्ञ ने लिखा है :—

"It is not a Peace treaty,
but a declaration of another war."

(२) प्रथम विश्वयुद्ध के बाद अमेरिका का उदय हुआ।

उसने युद्ध में भाग नहीं लिया था। अतः वह ताजा था उसने मित्रराष्ट्रों को ऋणी बना लिया था। प्रथम विश्व युद्ध के बाद जो साम्राज्यवाद एवं व्यापार का घुड़दौर चला उसमें अमेरिका बाजी मार गया। ब्रिटिश साम्राज्यवाद में स्वतंत्रता की भावना जाग उठी।

इसी समय इटली में मुसोलिनी का उदय हुआ। जो वहाँ का डिक्टेटर बन गया और उसने राष्ट्रसंघ को ठुकरा कर अबसीनियाँ पर आक्रमण कर दिया (१९३५ ई०) परन्तु राष्ट्रसंघ उसको कुछ न कर सका। इसी समय जर्मनी में हिटलर का उदय हुआ जिसने १९३५ में अनिवार्य सैनिक शिक्षा से की घोषणा की और मंचूरिया पर कब्जा कर लिया। ब्रिटेन और फ्राँस ने हिटलर को मदद दी क्योंकि हिटलर रूस विरोधी था। इससे उत्साहित होकर हिटलर ने पोलैंड पर आक्रमण कर दिया (१९३९) और द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू हुआ। एक दल था ब्रिटेन और उसके साम्राज्य, फ्रांस, अमरीका, चीन और रूस का दूसरा था जर्मनी- इटली एवं जापान का। अमेरिका युद्ध से बचना चाहता था परन्तु जर्मनी ने उसे इतना तंग किया कि वह भी मित्र गुट्ट में मिल गया। भारतवर्ष को अँगरेजों ने युद्ध में घीचना चाहा जिसका विरोध भारत ने डट कर किया। भारत ताना शाही का पराजय और प्रजातंत्र का विजय चाहता था। परन्तु अँगरेजों ने भारत को युद्ध में साथ देने के लिये बाध्य किया।

कांग्रेस ने तो अपनी वैदेशिक नीति १९२० में निकाला था, जिसमें कहा गया था कि पड़ोसी देश से मित्र भाव रहना चाहिये।" १९२७ ई० में कांग्रेस ने कहा कि भारतीय फौजों को बिना भारतीयों की आज्ञा से किसी लड़ाई में नहीं भेजी जा सकती। पं० नेहरू के शब्दों में "हमने खास तौर से पूरब और पश्चिम के अपने पड़ोसी देशों चीन, अफगानिस्तान, ईरान, और सोवियत रूस से गहरे रिश्ते की बातें सोची। सुदूर अमेरिका से भी हम बहुत अच्छा नाता रखना चाहते थे। उसकी वजह थी और वह यह कि जैसे हम सोवियत रूस से बहुत कुछ सीख सकते हैं, उसी तरह हम संयुक्त राष्ट्र से भी सीख सकते हैं।"२९

परन्तु बिना भारतीयों से पूछे १९३९ ई० में भारतीय सेना युद्ध मोर्चे पर भेज दी गई जिसका कांग्रेस ने घोर विरोध किया और घोषणा की कि भारतवर्ष लोकतंत्र और स्वतंत्रता का पक्षपाती है। "यूरोप अफ्रिका आदि में किये गये फासिस्टों की कुकीर्ति पर कांग्रेस ने क्षोभ प्रकट किया साथ ही चेकस्लेविया के लोकतंत्र के प्रति ब्रिटिशों की उपेक्षनीय रुख की आलोचना भी की।"

१९४५ में युद्ध का अन्त हुआ। विश्व में त्राहि २ मची हुई थी। जन धन की अपार क्षति हुई थी। शान्ति स्थापना का

---

२९ हि० की क०—नेहरू पृ० ५२६। (हिन्दी) अनु० टंडन

था। पुनः प्रयास हुआ। संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना फासिस्ट शत्रुओं ने की, जिस में ५ प्रधान राष्ट्र हैं फ्रांस, ग्रेटब्रिटेन, रूस अमेरिका, और चीन। भारतवर्ष भी इसका एक सदस्य है।

(३) द्वितीय महायुद्ध के बाद कुछ दिनों तक युग अन्धकारमय ही रहा। इस अंधकार में छिपे छिपे रूस ने बहुत प्रगति कर ली। चीन भी प्रगति क्षेत्र में बढ़ चला। ब्रिटेन पिछड़ गया—अमेरिका आगे बढ़ गया। ब्रिटेन का साम्राज्यवाद लड़खड़ाने लगा। और अंत में १५ अगस्त १९४७ को उसने भारत को स्वतंत्र कर दिया।

— —

प्रश्न—१८ कामनवेल्थ क्या हैं ? भारत का कामनवेल्थ के साथ कैसा सम्बन्ध है ?

Commonwealth का अर्थ जन-कल्याण (Commonwealth = Public good) है। इसकी व्युत्पत्ति लेटिन की respublica से है। परन्तु यह ज्ञातव्य है कि शब्दों के अर्थ सदा समान नहीं रहते, जीवित शब्द का यही प्रमाण है। जब इङ्गलैंड में चार्ल्स प्रथम को गद्दी से च्युत कर दिया गया तो क्रेमवेल का शासन (Cromwell's government) शुरू हुआ। इस सरकार को भी Commonwealth शब्द से सम्बोधित किया गया। कुछ दिनों के बाद इसका व्यवहार बदल गया।

इस शब्द से अराजकता वादियों का अर्थ बोध होने लगा। अस्ट्रेलिया के उपनिवेशों ने भी एक संगठित रूप बनाया और Australian commonwealth के नाम से विख्यात हुआ।

परन्तु आज Commonwealth शब्द का उपर्युक्त अर्थ गौण समझा जाता है। अर्ल ग्रे (Earl Grey) ने 'ब्रिटिश साम्राज्य' का द्योतक मानकर commonwealth शब्द का व्यवहार किया। लार्ड रोवसबरी ने 'ब्रिटिश कौमनवेल्थ ऑफ नेसन्स' (British commonwealth of nations) शब्द का व्यवहार किया। परन्तु सबसे वैज्ञानिक अर्थ में प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ कर्टिश (Curtish) ने किया। उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यान्तर्गत प्रत्येक स्वतंत्र देशों का अन्तर्राष्ट्रीय संघ के लिये Commonwealth शब्द का प्रयोग किया। कर्टिश के विचार बहुत ही सुन्दर थे। कई राजनीतिज्ञों ने, जो बाद में हुए थे, कर्टिश के आदर्श को न समझ सके और common ealth को British Empire के समान अर्थ बोधक समझने लगे।

वर्तमान काल में Brtish commonwealth of Nations का अर्थ होता है संयुक्त राज्य (unitedkingdom) एवं ब्रिटिश साम्राज्यान्तर्गत स्वतंत्रराज्य।

भारत जब स्वतंत्र हुआ तो यह समस्या उठी कि वह ब्रिटिश कांमनवेल्थ (राष्ट्रमंडल) का सदस्य हो या नहीं।

१९४९ ई० में लण्डेन में एक सभा हुई थी और उसमें विचार किया गया कि भारत को राष्ट्रमंडल में रहना चाहिये, क्योंकि राष्ट्रमंडल के अन्य देशों के साथ उसका भाईचारा का सम्बन्ध है। भारत यदि राष्ट्रमंडल में रहेगा तो इसका यह अर्थ नहीं लगाया जा सकता कि वह ब्रिटिश साम्राट के अधीन है या ब्रिटिश साम्राज्य में है। भारत की वैदेशिक या किसी प्रकार की नीति राष्ट्रमंडल की पछलगुआ नहीं हो सकती। यह तो शान्ति स्थापन एवं उन्नति के लिये एक संगठन मात्र है। भारत सरकार ने भी इस प्रस्ताव को स्वीकृत कर लिया और भारत राष्ट्रमण्डल (commonwealth) का सदस्य है।

कुछ लोग समझते हैं कि भारत राष्ट्रमंडल का सदस्य है इसलिये वह अभी भी साम्राज्यवादी छाया में है। भारत का शरीर तो स्वतंत्र हो गया है, परन्तु प्राण अभी तक राष्ट्रमंडल में बन्द है। सत्य तो यह कि राष्ट्रमंडल में रहते हुए भी भारत पूर्ण सत्ताधारी, स्वतंत्र है।

भारत का राष्ट्रमंडल के साथ अच्छा ही सम्बन्ध है, परन्तु वैयक्तिक रुप से कुछ ऐसे भी सदस्य हैं जिनसे भारत को नहीं पटती, क्योंकि भारत शांतिप्रिय एवं जन कल्याणकारी भावना से पूरित है। पाकिस्तान भी इस मंडल का सदस्य हैं। दक्षिण अफ्रिका के भारतीयों पर बराबर अत्याचार हो रहे थे तो राष्ट्र-मंडल में इस विषय पर खूब बहस हुई।

आजकल राष्ट्रमंडल में ११ सदस्य हैं जिनमें प्रमुख युनाइटेड किंगडम है।३०

—:※:—

प्रश्न—१६ संयुक्त राष्ट्र संघ क्या है? संयुक्त राष्ट्र संघ के साथ भारत का कैसा सम्बन्ध है?

द्वितीय विश्वयुद्ध में फासिस्ट विरोधी राज्यों ने विजय पाई तो ठीक, परन्तु उनकी भी हालत बेहालत हो चुकी थी। ब्रिटेन, अमेरिका, रूस एवं चीन के सबल प्रयास से एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन "संयुक्तराष्ट्र संघ" (युनाइटेड नेसन्स औरगेनीजेसन बनाया गया। सबसे पहली सभा सेनफ्रे सिसको (जो उत्तरी अमेरिका के पश्चिमी भाग में है) में हुआ। ब्रिटिश सरकार ने भारत को भी प्रतिनिधि मण्डल सेनफ्रान्सिको भेजने की आज्ञा दी। साम्राज्यवादी ब्रिटेन की आज्ञा से भारत के तत्कालिन वायसराय ने सर फिरोज खाँ, सर के० पी० मेनन, सर वी० टी० कृष्णमचारी, सर राम स्वामी मुदालियर का मण्डल बनाकर सेनफ्रान्सीसको भेजा।। भारत परतंत्र था एवं साम्राज्यवादी ब्रिटेन के मुख में था इसलिये भारतीयों ने कहा कि भारत से सेनफ्रान्सीसको मंडल न भेजा जाय। परन्तु भारतीयों की उस

---

३० शेष सदस्य ये हैं—१ Union of south Afriica २ न्यूजीलैंड ३ लब्रोडोर ४ बर्मा ५ भारत ६ पाकिस्तान ७ कानाडा ८ आस्ट्रेलिया ९ न्यूफाउण्डलैंड १० आयर राज्य।

समय एक न चली। गान्धी ने कहा था कि जो संसार से संग्राम को रोक देनाचाहता है, उसके लिये एक एक देश के द्वारा दूसरे देश का शोषण योग्य नहीं।

गान्धीजी के इस व्यक्तव्य का उस समय की सरकार पर कुछ भी प्रभाव न पड़ा। मोलटोस, रूसी मंडल के प्रधान, ने सेनफ्रान्सीसको में भारत को स्वतंत्र घोषित करने की बातों पर जोड़ दिया।

१९४५ में शिमला में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ जिसमें "संयुक्त राष्ट्र संघ सम्विधान" के रूप रेखा पर खूब आलोचना की गईं। संयुक्त राष्ट्र संघ की कई बातों का कांग्रेस ने स्वागत भी किया परन्तु कई बातों की आलोचना भी की।

i० की सुरक्षा परिषद में ५ प्रतिनिधि राष्ट्र है जिनमें प्रत्येक विशेषाधिकार प्राप्त (VetoPower) हैं (फ्रांस अमेरिका, ब्रिटेन, चीन, रूस)। परन्तु बहुमत अमेरिका का ही है। फलतः संयुक्त राष्ट्र संघ अमेरिकी छाया के अन्तर्गत है। वर्तमान समय में तो वह एक कठपुतली संस्था सी बन गई है। अमेरिकन गुट्ट उसे जिधर चाहता है उधर घुमा लेता है।

काले गोरों के सवाल पर भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ में बहस की थी। परन्तु संयुक्त राष्ट्र संघ में तो स्वयं ऐसे देश ही veto power रखते हैं जो काले गोरे के सवाल को अच्छा समझते हैं। दक्षिण अफ्रिकी प्रधान मन्त्री स्मट्स ने भारत के इस प्रस्ताव का घोर विरोध किया था।

भारत एवं पाकिस्तान के बीच काश्मीर की समस्या जटिल हो गई। यह समस्या जटिल नहीं होने पाती यदि अमेरिका और ब्रिटेन की गुप्त सहायता एवं राय पाकिस्तान को न मिलती। गिलगिट नामक स्थान विश्व राजनीति में बहुत बड़ा स्थान रखती है। इसका कारण यह है कि इस प्रदेश पर सैनिक अड्डा बनाकर रूस एवं चीन से लड़ा जा सकता है। क्योंकि अमेरिका जानता है कि उसे एक न एक दिन रूस के विरुद्ध लड़ना ही होगा। काश्मीर पर पाकिस्तान ने अचानक आक्रमण कर बहुत-सा भागों पर कब्जा कर लिया। भारत ने इस प्रश्न को संयुक्त राष्ट्र संघ के सम्मुख उपस्थित किया। परन्तु कोई भी सबल प्रयास संयुक्त राष्ट्र संघ ने नहीं किया है। संयुक्त राष्ट्र संघ में वैसे ही राष्ट्रों की प्रधानता है जो पाकिस्तान को उल्लू बनाकर अपना काम निकालना चाहते हैं। परन्तु, काश्मीर, सभी को तमाचा मारकर भारत संघ में शामिल हो गया। पाकिस्तान का कहना है कि काश्मीर को ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं है। अमेरिका ने पाकिस्तान को सैनिक सहायता देकर एशिया में युद्ध फैलाना चाहा। प्रधान मन्त्री नेहरू ने घोषणा कर दी काश्मीर स्थित अमेरीकी पर्यवेक्षक अब तटस्थ नहीं रह सकें क्योंकि उन्होंने पाकिस्तान को सैनिक सहातता दी है। अमेरिका का कहना है कि पर्यवेक्षक संयुक्त राष्ट्र संघ से भेजे गये हैं। कहने का तात्पर्य यह कि है कि अमेरिका राष्ट्रसंघ के नाम से अन्याय भी कर रहा है।

चीन में च्यांगकाई सेक की सरकार १९४९ में ही खतम हो गई और तबसे चीन में जनता की सरकार है। परन्तु संयुक्त राष्ट्र संघ में सेक की सरकार के ही प्रतिनिधि है। भारत ने कई बार प्रजातंत्र चीन के प्रतिनिधि को संयुक्त राष्ट्र संघ में स्थान देने की बात चलाई। कई देशों ने भारत का समर्थन भी किया। परन्तु सब व्यर्थ। १८ मार्च १९५४ को अमेरिकन प्रतिनिधि कैबोट लौज ने कहा अमेरिका चीन को सुरक्षा परिषद में स्थान नहीं पाने देगा। यदि ऐसा होगा तो अमेरिका विशेषाधिकार "vito power" प्रयोग करेगा।

कोरिया की समस्या लेकर भारत को संयुक्त राष्ट्र संघ से और भी अधिक सम्बन्ध हुआ। उत्तरी कोरिया में रूसी सेनाओं का प्राधान्य था और दक्षिणी कोरिया में अमेरिकन कठपुतली सिंगमनरी की सरकार थी। मामूली बात के लिये अमेरिका ने उत्तरी कोरिया को आक्रमणकारी घोषित कर दिया। जो एकदम असत्य है। अमेरिका कहता है कि संयुक्त राष्ट्र संघ के बहुमत के अनुसार ही अमेरिका ने कोरिया में फौजें भेजी है, परंतु यह भी गलत है। सच तो यह कि अमेरिका ने संयुक्त राष्ट्र संघ के विधान को कुछ मूल्य ही नहीं दिया भारत ने कोरिया युद्ध बन्द करने के लिये कई बार प्रयास किये, परन्तु कुछ फल न निकला है। भारत ने कोरिया युद्ध में लड़ने के लिये सेनाएँ न भेजी बल्कि एम्बूलेंसयूनिट ही भेजा।

निशस्त्रीकरण के लिये १९४९ ई० में भारतीय प्रतिनिधि वी० एन० राउ ने एक प्रस्ताव उपस्थित किया। परन्तु कोई फल न हुआ।

आज सं० राष्ट्र संघ की बृहद् सभा के अध्यक्षा विजय लक्ष्मी पण्डित है। यह गौरव की बात है।

प्रश्न—२० स्वतंत्रता के बाद भारत का एशियाई राष्ट्रों के साथ कैसा सम्बन्ध है? संक्षिप्त उत्तर दें।

एशियाई राष्ट्रों के साथ भारत का प्राचीनतम काल से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सम्बन्ध रहा है। मध्यकाल में एशियाई राष्ट्रों की स्थिति विदेशी साम्राज्यवादियों के कारण बहुत ही कठिन थी, परन्तु समय के पार्श्व परिवर्तन एवं विश्व-राजनीति-मंच के पासा को पलट जाने से आज भारत, चीन, वर्मा पाकिस्तान आदि स्वतंत्र है और जो भी एशियाई देश साम्राज्यवादी चपेटे में पड़े हुए हैं, वे भी उससे मुक्त होना चाहते हैं और मुक्ति-संग्राम कर रहे हैं जिसका उदाहरण हिन्दचीन दिया जा सकता है।

वर्तमान युग गुट्ट का या संगठन का युग है। ये गुट्ट और संगठन २ प्रकार के हो सकते सकते हैं, शान्तिमय या क्रान्तिमय। एशियाई राष्ट्र शान्तिमय पद्धति पर ही है।

भारत जब स्वतंत्र हुआ तो नेपाल में भी जनतंत्र की लपटें फैली। राणाशाही के अन्त करने के लिये वहां की जनता

व्याकुल थी। भारत ने भी सहयोग दिया था। वहां के राजा दिल्ली आकर ठहरे थे, और आज नेपाल भारत का चिर मित्र है।

तिब्बत—में लार्ड कर्जन के समय से ही शशस्त्र मिशन थी जो "ब्रिटिश साम्राज्यवाद की निशानी" थी। भारत ने चीन के साथ तिब्बत के विषय में सन्धि कर ली है और "साम्राज्यवाद की निशानी को हटाकर पूर्ण भ्रातृभावना को स्थापित किया है। भारतीय प्रधान मन्त्री ने इसके विषय में कहा था :-

"-It is good not only for our country but the whole of Asia and the rest of the world".

पाकिस्तान, भारत का निकटतम पड़ोसी देश है परन्तु उसकी नीति पर अमेरिका और ब्रिटेन का ट्रेड मार्क लगा हुआ है। भारत नहीं चाहता कि एशियाई राष्ट्रों की नीति या आन्तरिक स्थिति में यूरोपियन या अमेरिकन गुट्ट किसी प्रकार का हस्तक्षेप करे। अमेरिकन गुट्ट पाकिस्तान को युद्ध क्षेत्र बनाना चाहता है क्योंकि अमेरिका को यह पक्का विश्वास है कि किसी-न-किसी दिन उसे रूस एवं चीन से टक्कर लेना आवश्यक है, और ऐसी लड़ाई में पाकिस्तान को ही युद्ध क्षेत्र बनाया जायगा। भारत पाकिस्तान में काश्मीर की समस्या अति प्रबल है। संयुक्त राष्ट्र संघ के पास यह प्रस्ताव रक्खा गया है परन्तु यह व्यर्थ ही है कि क्योंकि उस अन्तर्राष्ट्रीय संगठन पर भी अमेरिकन गुट्ट का ही प्रतिबन्ध लगा हुआ है। काश्मीर भारत में मिलना चाहता है। वहाँ की सम्विधान-सभा

ने काश्मीर को भारत में मिलने की स्वीकृति दे दी है । भारत-पाकिस्तान की नीति को प्रगट करते हुए mr. Stephens ने कहा है कि पाकिस्तान काश्मीर के किसी भाग को भारत को नहीं देना चाहता है। पाकिस्तानी प्रधान मन्त्री मुहम्मदअली ने कहा कि जब तक काश्मीर का निर्णय नहीं होता तब तक भारत एवं पाकिस्तान में मित्रता नहीं हो सकती (१६-४-५४)। 'निर्णय' का प्रयोग अली ने इसी अर्थ में किया है कि पाकिस्तान में जब तक काश्मीर नहीं मिलता तब तक भारत से मित्रता असंभव है।

इधर पाकिस्तान ने अमेरिका से सैनिक सहायता की सन्धि कर ली—मित्रता कर ली। (१६ मई १९५४)। यह ज्ञातव्य है—"भक्ष्यभक्षकयो प्रीतिर्विपतेः कारणं मतम्।" भारत ने ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण एशिया एवं शुभाकांक्षी देशों ने इस सन्धि का प्रतिवाद किया परन्तु पाकिस्तान ने जिद न छोड़ा। जफरुल्ला खां, ने जो पाकिस्तान के वैदेशिक मन्त्री हैं बताया कि यह सैनिक सहायता है न कि सैनिक सन्धि। इन्हीं सब कारणों से भारत और पाकिस्तान में नहीं पटती। पं० नेहरू ने भारतीय नीति के विषय में कहा है—"हम लोग पाकिस्तान के साथ की समस्यायों का शान्ति एवं दोस्ती पूर्ण भाव से सुलझाना चाहते हैं।.....मैं जानता हूँ कि पाकिस्तान की जनता की राय है कि ये समस्याएँ शान्ति पूर्ण ढंग से सुलझ जाय। परन्तु अभाग्य वस अभी तक ऐसा न हो सका है।"
(१५ मई १९५४ ई०)

चीन—के साथ भारत का मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध है। चीन ने जिस जनतांत्रिक पद्धति को अपनाया है भारत उसके प्रति प्रेम रखता है। वह भी युग था जब हम कहते थे कि उत्तर में हिमालय होने के कारण हम निश्चिन्त हैं परन्तु वर्तमान काल में वायुयान के कारण कोई स्थान अगम्य नहीं। भारत की उत्तरी सीमा पर चीन ही एक शक्तिशाली और दुर्जेय देश है। चीन भारत सम्बन्ध का इतिहास का नवीन रूप २५ जून १९५४ से शुरू होता है जब चीन के प्रधान मन्त्री चाऊ-एन लाई भारत आए और भारत चीन मैत्री पर जोड़ दिया। लाई ने कहा कि चीन और भारत मिलकर पवित्र ध्येय (शान्ति) के लिये प्रयास करें (२७ जून)। लाई ने कहा कि prime minister Nehru's efforts for peace deserve praise from all of us." जेनवा (Geneva) में इस मिलन पर आलोचना करने के बाद कहा गया कि यह मिलन "for talks: which are expected to have an important impact on relation between the two Countries and on Asian affairs generally."

एशिआई अन्य समस्याओं के समाधान के लिये भी भारत प्रयत्नशील है। हिन्द-चीन की लड़ाई के शान्ति के लिये भारत का प्रयास स्तुत्य है।

एशिआई समस्याओं को समाधान करने के लिये एशिया के प्रमुख ५ देशों के प्रधान मंत्रियों का मिलन कोलम्बो में हुआ था, जहाँ एशियाई समस्याओं पर विचार किया गया।

इस तरह हम देखते हैं कि भारत एशिया के प्रत्येक देश के साथ मैत्री पूर्ण सम्बन्ध रखता है परन्तु पाकिस्तान अपवाद में है। इसका कारण यह है कि उस देश से भारत मैत्री नहीं रख सकता जो यह सोचते हों कि अपनी नाक कटे तो कटे परन्तु दूसरे का सुगुन बिगरे।

प्रश्न—२१ वर्तमान काल में भारत का जागतिक देशों के साथ वैदेशिक नीति कैसी है ?

(टिप्पणी—इस प्रश्न के उत्तर के लिये छात्रों को चाहिये कि प्रश्न १८, १६, २० के उत्तर को हृदयस्थ कर लें।)

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद इङ्गलैंड का भाग्य सूर्य अस्त हो गया और अमेरिका ने उसका स्थान ग्रहण किया। लेलिन और स्टालिन के नेतृत्व में रूस ने जारशाही का नाश कर निज देश में प्रगति की ऐसी लहर ला दी कि कुछ ही दिनों में वह अमेरिका से टक्कर लेने वाला हो गया। अमेरिका पूंजीवादी देश है तो रूस साम्यवादी यानी दोनों विरोधी मत वाले हैं। अमेरिका साम्यवाद का नाश चाहता है और पूंजीवाद का उदय परन्तु रूस साम्यवाद का उदय और पूंजीवाद का क्षय चाहता है। आज कुछ देश अमेरिकन प्रभाव क्षेत्र में है जिनमें प्रमुख ब्रिटेन हैं, और कुछ रूसी प्रभाव क्षेत्र में है जिनमें प्रमुख चीन

है। अमेरिका ने एटम बम फिर हाइड्रोजन बम बनाकर विश्व को डराना चाहा परन्तु रूस भी उनसे कम न रहा। इस प्रतियोगिता का न जाने कहाँ अन्त होता है।

भारत मध्यम पथ (मज्झिम निकाय) का यात्री हैं, वह न अमेरिकन गुट्ट में मिलना चाहता है न रूसी गुट्ट में। क्योंकि इन दोनों में से किस गुट्ट में मिलने का अर्थ होता है अपनी स्वतंत्र सत्ता खोना। पाकिस्तान ? अमेरिकन गुट्ट में मिल गया है। सच पूछिये तो पाकिस्तान की हस्ती उसी दिन मिट गई जिस दिन उसने अमेरिका के साथ सैनिक सन्धि की। भारत चाहता है कि दोनों दलों के साथ भारत का मैत्री पूर्ण सम्बन्ध रहे। परन्तु काश्मीर की समस्या, ने बतला दिया कि अमेरिकन गुट्ट भीतर से भारत का हित नहीं चाहता। पाकिस्तान को सैनिक सहायता देकर तो अमेरिका ने भारत की सीमा पर युद्धाग्नि सुलगा रखी है। भारत ने इसका खूब प्रतिवाद किया—अन्य देशों ने भी भारत का समर्थन किया—पर अमेरिका में भारत की बातें नहीं सुनी गई।

अफ्रिका में मलान का शासन बर्बरतापूर्ण दानवता का ज्वलंत उदाहरण है। भारतीयों के साथ उसका नीच व्यवहार उस उन्नत विश्व को भी नत मस्तक होने के लिये बाध्य करता है। भारत दिल से मलान शाही की इस कटुतापूर्ण चाल का नाश चाहता है। मलान ने भारत पर बड़े बड़े आक्षेप भी लगाए हैं जो उसकी असत्यवादिता का प्रकट उदाहरण है। मलान ने

दक्षिणी अफ्रिकन पार्लमेंट में कहा था–'The prime minister of India had his 'eyes on Africa'. इस पर आलोचना करते हुए पं० नेहरू ने सिद्ध किया कि यह आक्षेप बिलकुल निराधार है।[1]

चीन को संयुक्त राष्ट्र संघ में स्थान नहीं है। भारत सदा प्रयत्नशील है कि चीन को सं० रा० सं० में स्थान मिले। १८ मई ५४ को पं० नेहरू ने पार्लमेंट में इस विषय पर बहुत जोर दिया। नेहरू ने कहा कि Secretaryof state होने के पहले डलेस (Mr. Dulles) ने स्वीकार किया था कि चीन को संयुक्त राष्ट्र (U. N.) में स्थान मिले। परन्तु डलेस को अब निज राय बदलने का कोई अधिकार नहीं है।

कोरिया की समस्या (देखे पृ० ८७)।

काश्मीर की समस्या (पृ० ८६)।

हिन्द चीन की समस्या बहुत जटिल समस्या हो चली है। हिन्द चीन बौद्धधर्मानुआई है। जापानियों को परास्त कर फ्रांसीसियों ने इस देश पर कब्जा कर लिया है। यहाँ की

---

1 "The prime minister of S. Africa and some other ministers there have gone so utterly beyond all bounds of decency and propriety in international affairs, that I find it rather difficult to deal with the matter."

(H. P.) I. N. (12th May 1954)

जनता डा० हो-चाई-मिन्ह को नेता बनाकर स्वातंत्र्य संग्राम कर रही है। फ्रान्स, अमेरिका से मिलकर जनता के कन्धे पर साम्राज्यवादी जुए को रखना चाहता है। इस समस्या को सुलझाने के लिये जेनेवा (Geneva) में जहाँ १६ राष्ट्रों की सभा हो रही है, प्रयास किया जा रहा है। परन्तु आश्चर्य तो यह है कि भारत, जो हिन्द चीन के अति निकट है, को इस सभा में नहीं बुलाया गया है। फिर भी हिन्द चीन समस्या के समाधान के लिये भारत के प्रधान मंत्री ने एक प्लान जेनेवा सभा में भेजा है। भारत ने हिन्द चीन में तुरत (Case fire) का प्रस्ताव किया है। २६ मई को ओसलो (Oslo) में जो अन्तर्राष्ट्रीय रेड क्रास कानफ्रेंस हो रही थी ने भारत के प्रस्ताव को न्याय-पूर्ण बतलाया। मि० केसी (Mr. R. G. Casey, Australian minister for External affairs) ने कहा कि हिन्द चीन समस्या में भारत का भी स्थान होना चाहिये। परन्तु अमेरिकन गुट ऐसा करना नहीं चाहता। देखे भविष्य में क्या होता है।

भारत सम्पूर्ण विश्व में शान्ति और स्वतंत्रता का प्रचार चाहता है। आज भारत की अन्तर्राष्ट्रीय-नीति का संचालन प्रधान मंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू कर रहे हैं।

—::०::—

टिप्पणियां

(१) मोहन जो दड़ो (देखे ऐतिहासिक भारतवर्ष पृ० २)।

(२) हड़प्पा (देखे ,, ,, पृ० २)।

(३) **श्रीमद्भगवद्गीता**—कई पाश्चात्य विद्वों का मत है कि गीता किसी ब्राह्मण-रचित है जो महाभारत के बहुत बाद हुआ है वे कहते हैं कि कहां तक यह सम्भव माना जा सकता है कि रणक्षेत्र में उपदेश दिया जाय। परन्तु उपर्युक्त तर्क व्यर्थ है। गीता व्यास सम्पादित महाभारत की ही प्रमुख अंश है जो कृष्ण-मुख से निकली हुई वाणी है।

गीता सुगीता कर्त्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुख पद्माद्विनिसृता॥

गीता में १८ अध्याय हैं क्रमश ·····(१) अर्जुन विषाद योग (२) संख्य योग (३) कर्म योग (४) ज्ञान कर्म योग (५) कर्म सन्यास योग (६) आत्म संयम योग (७) ज्ञान विज्ञान योग (८) अक्षर ब्रह्मयोग (९) राजविद्याराजह्य योग (१०) विभूति योग (११) विश्व रूप दर्शन योग (१२) भक्ति योग (१३) क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग (१४) गुणत्रय विभाग योग (१५) पुरुषोत्तम योग (१६) दैवासुरसंपद्विभाग योग (१७) श्रद्धात्रय-विभाग योग (१८) मोक्ष सन्यास योग। गीता का सार 'कर्म'—कर्त्तव्य है।

अर्थशास्त्र—चाणक्य (विष्णु गुप्त) ने इस ग्रंथ का प्रणयन किया था। यद्यपि कुछ पाश्चात्य विज्ञों का विचार है कि यह ग्रन्थ आर्य्य चाणक्य कृत नहीं है और कुछ लोगों का विचार है कि इस ग्रन्थ का प्रणेता वह चाणक्य नहीं था जो चन्द्रगुप्त मौर्य्य का गुरु था। परन्तु उपर्युक्त विचारों में कुछ भी तथ्य नहीं है। यही कारण है कि विश्व के प्रमुख प्रमुख इतिहासज्ञों का विचार यही है कि इस ग्रंथ का प्रणेता चाणक्य (चन्द्रगुप्त मौर्य का प्रधान मंत्री) ही है। अर्थशास्त्र का अर्थ साधारणतया 'सम्पत्ति शास्त्र' समझा जाता है, जो गौण अर्थ है। चाणक्य ने इस शब्द का अर्थ विस्तृत रूप में लिया था। इस शास्त्र में नीति, विज्ञान, सदाचार शासन कर्त्तव्य, कृषि, न्याय सम्बन्धी विचारों का संग्रह हुआ है। यह अपने ढंग का एक अनूठा ग्रन्थ है।

अग्निमित्र—(देखें ऐतिहासिक भारतवर्ष पृ० ८)

अजन्ता—(देखें प्रश्न १८ पृ०, ४४, ५१)

अलबरुनी—इसका जन्म ९७२ ई० में हुआ। यह खीवा प्रदेश का रहनेवाला था। वह बहुत बड़ा दार्शनिक था। ज्योतिष विद्या से भी उसे प्रचुर प्रेम था। गणित का यह आचार्य था। वह महमूद गजनवी के पास रहता था। वह भारत आया था। यहाँ उसने बहुत अध्ययन किया और भारत वर्णन लिखा है जिससे तत्कालीन परिस्थितियों पर पूर्ण प्रकाश पड़ता है।

अबुल फजल एवं फैजी—ये दोनों शेख मुबारक के पुत्र थे। दोनों भाई अकबरी दरबार के रत्न थे। अकबर के वे चिर मित्र थे। इन्हीं से प्रभावित होकर अकबर में सूफी भावना का समावेश हुआ।

"Akber had all ways been a free thinker in reli-

gion with a learning towards sufi mysticism. In this he was encouraged by the Shaikh Mubarak aud his two sons Abiul Fazil and Shaikh Fazi
(Chamber Encylopaedia.)

फैजी बहुत बड़ा कवि और अबुल फजल इतिहासज्ञा था अबुल फजल कृत 'अकबर नामा' प्रसिद्ध ग्रन्थ है। 'आयन-ए-अकबरी' "अकबर नामा का ही एक भाग है।

अष्ट प्रधान—(देखें प्रश्न ४६ भाग १ पृ० १०७)

अपहरण नीति—(प्रश्न ५ भाग २ पृ० १३)

अबीवर्दी खां—(देखें प्रश्न १ भाग २ पृ० १; ऐ० भा०)

अलीनगर की सन्धि—(प्रश्न १ भाग २ पृ० २)

असहयोग आंदोलन—(१६३० ई०) (नमक कानून)

समुद्र से नमक बनाने का अधिकार कानून द्वारा भारतीयों से छीन लिया गया था। गांधीजी ने इसे तोड़ना चाहा। ७६ अनुयाइयों के साथ साबरमती से गांधी जी दांडी को चले (१२-३-१६३० ई०) और दांडी में जाकर नमक कानून तोड़ा और सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरूआत हुई। सरकार ने इन्हें (गांधी) बन्दी बना लिया परन्तु इससे क्या ? नमक बनाना विदेशी चीजें का परित्याग, छूटा नहीं। इस आंदोलन में खां अब्दुल गफ्फार खां (सीमांत गांधी) ने प्रमुख भाग लिया। कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओं से जेल भर गई। फिर गांधी इर्विन समझौता हुई और सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगित कर दिया गया।

अगस्त क्रान्ति—क्रिप्स मिसन भारतीयों को शान्त न कर सका। द्वितीय विश्वयुद्ध की ज्वाला फैल रही थी। जापान बढ़ता हुआ भारत के पास चला आया था। भारतीय नहीं

चाहते थे कि अँगरेजों से छुटकारा तो पावें परन्तु जापानी गुलामी में वर्धे। 'हरिजन' नामक पत्र से गांधीजी भारतीयों में उत्तेजना फैल रहे थे। ८ अगस्त को कांग्रेस ने 'भारत छोड़ो' का प्रस्ताव पास किया। गांधीजी की नीति समझौतावादी थी। परन्तु गांधीजी ९ अगस्त को बंदी बना लिये गये। देश के सभी नेताओं को बंदी बना लिया गया परन्तु जनता ने विद्रोह कर दिया। स्कूल कालेज के छात्रों ने एवं साधारण जनताओं ने डाक, तार, टेलीफोन पोस्टआफिस, कचहरी, थाना आदि को नष्ट भ्रष्ट करना शुरू किया। जिसमें बिहार सबसे आगे रहा। सभी जगह हड़तालें हुईं। अँगरेजों ने दमन चक्र चलाया, हजारों गोली से उड़ा दिये गये। जयप्रकाश जेल फांद कर जनता में आ गये। उनका 'आजाद दस्ता' ने इस क्रांति में प्रमुख भाग लिया।

गांधीजी जेल से इसलिये छोड़ दिए गये कि उन्होंने २१ दिन का अनशन किया था जिसमें वे मर भी जा सकते थे। "अणो मोदी और सरकार" ने एक्सक्यूटिव कौंसिल छोड़ दिया।

यदि यह क्रांति न होती तो न जाने भारतीयों को स्वतंत्रता कब प्राप्त होती।

अजातशत्रु—मगध सम्राट बिम्बसार के मरने पर उसका लड़का अजातशत्रु मगध की गद्दी पर बैठा। वह बहुत बड़ा महत्वाकांक्षी था। कहते हैं कि इसने अपने पिता को कैद कर लिया और खाना देना भी बंद कर दिया था। इसी दशा में घुलता घुलता बिम्बसार मर गया। परन्तु उपर्युक्त विचार को निश्चित सत्य नहीं कहा जा सकता है। इसने प्रसेनजित (कौशल के राजा) की लड़की से शादी की। इसका (अजात

शत्रु का) महामंत्री (वर्षकार) नामक कूटनीतिज्ञ था। इसने काशी, एवं कौशल को जीत लिया था। लिच्छवी संघ की राज्य नर्तकी आम्बपाली पर मुग्ध होकर उसने कूटनीत के द्वारा वैशाली को परास्त किया। वास्तव में वह बौद्धधर्मानुयायी था। स्वयं महात्मा बुद्ध से इसने कई बार भेंट की थी।

आजाद हिन्द फौज—रासबिहारी बोस जापान गये और उन्होंने जापानी सरकार से कहा कि "मुझे स्वतंत्र सैनिक संगठन करनेदी जाय। जापान सरकार भी मुझे मदद दे। जिस जिस देश पर जापान विजय करे उस देश के भारतीयों से मित्रतापूर्ण व्यवहार किया जाय।" जापान सरकार ने उपर्युक्त प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। रासबिहारी बोस ने भारतीय सैनिकों का जो भारत में थे, मिलना चाहा। इस कार्य में प्रीतम सिंह का पूर्ण हाथ रहा। अगस्तक्रांति के समय मोहन सिंह ने आ० हि० फौज की एक सैनिक दस्ता वर्मा भेजा। जापानियों और मोहन सिंह में अनबन हो गई। और इस फौज का संगठन बिगड़ गया। परन्तु अनिल चटर्जी, जगन्नाथ भोसले शाहनाज आदि के प्रयास से आजाद हिन्द फौज का फिर सुचारु रूप से कार्य चलने लगा। रासबिहारी बसु ने इस सेना का नेतृत्व सुभासचन्द्र बोस को दिया। नेताजी ने 'दिल्ली चलो' की घोषणा कर दी। जापानी सेना के साथ सिंगापुर पहुँचे। बर्मा पर चढ़ाई हुई। दोनों ओर अँगरेज और आ० हि० फौज—डट गये। घमासान युद्ध हुआ। महीनों घेरे पड़े पहे। १९५४ ई० में अमेरिका ने जापान पर अणुबम का प्रयोग किया। जापान झुक गया। इसी समय नेताजी की मृत्यु वायुयान से गिरने के कारण हो गई। आ० हि० फौज का संगठन भंग हो गया।

इत्सिंग—यह तृतीय चीनी यात्री था जिसने ६७१ ई० में भारत के लिये प्रस्थान किया था। यह ताम्रलिप्ति बंदरगाह पर उतरा। उन दिनों नालंदा विश्वविद्यालय ज्ञान का केंद्र था। उनका ध्येय केवल बौद्ध ग्रंथ संग्रह करना था इसलिए उसने अन्य देशी अवस्थाओं के प्रति कुछ वर्णन न लिखा। इसकी लिखी हुई पुस्तक का नाम "नन-हैची-कुअन-नेफा-चुअन" है जिसमें बुद्धधर्म के बारे में ही वर्णन है। जिससे तत्कालीन बुद्धधर्म की अवस्था के बारे में जानने में बहुत मदद मिलती है।

इब्न बतूता—इनका जन्म १३०४ ई० में टेनजेयर में हुआ था। इसे भ्रमण करने में खूब मन लगता था। १३३३ ई० में वह भ्रमण करता हुआ भारत आया। इस समय मुहम्मद बिन तुगलक दिल्ली का गद्दी पर था। इब्न बतूता का इसने दिल खोलकर स्वागत किया। वह भारत में बहुत दिनों तक रहा। इसके भारत वर्णन में कहीं-कहीं इतिहास विरुद्ध तत्व भी मिलते हैं। इब्न बतूता राजदूत बनाकर चीन भेजा गया फिर इसने अनेकों स्थानों में भ्रमण किया। इसकी मृत्यु फेज प्रदेश में हुई।

कलिंग युद्ध—(देखें प्रश्न ६ पृ० १२)

कनिष्क—(देखें प्रश्न १३ भाग १ पृ० ३१)

कालिदास—देखें प्रश्न १८ पृ० ४१, ४३, प्रश्न ९, पृ० ४५, ४६)

कबीर—इनका (जन्म १५०० ई० मृत्यु १५१६ ई०)।

ज्ञान मार्ग के राही, रामानन्द के शिष्य, कबीर किसी ब्राह्मणी विधवा से जनित और नीरुद्वारा पालित थे। ये ज्ञानी

थे, कवि थे और ग्रहस्थ भी थे । इनमें शिक्षा के अभाव में भी हार्दिकता का अभाव न था। उनका रहस्यवाद साहित्यिकों के लिये पहेली बन जाती है।

इनके ७५ ग्रन्थ हैं जिनमें 'बीजक' प्रमुख हैं। कबीर की आत्मा विश्वात्मा में मिलनी चाहती हैं—

उठा बगूला प्रेम का, तिनका उड़ा अकाश,
तिनका तिनके से मिला, तिनका तिनके पास।

वे काशी में रहते थे परन्तु इससे अप्रसन्न होकर तत्कालीन सम्राट सिकन्दर लोदी ने इन्हें काशी से निर्वासन दे दिया था।

कृष्णदेव राय—(प्रश्न ३७ भाग १ पृ० ६५)

करनाटक की १, २, ३ लड़ाई--(देखें ऐतिहासिक भारत-वर्ष पृ० १८,१६)

—(देखें प्रश्न ५ पृ० १०)

चांद सुलताना—यह श्री अहमदनगर राज्य की सुलताना थी। इसमें राजनीतिज्ञता एवं कूटनीतिज्ञता कूट-कूट कर भरी हुई थी। अकबर को अहमदनगर जीतने की बहुत लालसा थी और इसी लालसा को पूर्ण करने के लिये अकबर ने मुराद को अहमद नगर पर आक्रमण करने के लिये भेजा। १५६३ ई० चांद सुलताना ने डट कर मुकाबला किया। बहुत दिनों तक युद्ध करने के बाद सुलताना को सन्धि करनी पड़ी परन्तु बरार लेकर फिर युद्ध शुरू हुआ। अकबर ने दनियाल को अहमद नगर भेजा। चांद सुलताना ने समझौता करनी चाही परन्तु दरबारियों ने उसकी हत्या कर दी। इसकी मृत्यु के बाद अहमदनभर मुगल साम्राज्य का ही एक अंश हो गया।

जलियानावाला वाग—अँगरेजों की दमन नीति से यूं तो भारतीय रुष्ट थे ही, रौलट एक्ट के पास होने पर भारतीयों की नाराजगी और भी बढ़ गई (६ फरवरी १९१९ ई०)। इसे भारतीयों ने 'काला कानून' कहा और इसके बारे में यह कहा जाता था—"न वकील न अपील न दलील। गांधीजी ने देश व्यापी हड़ताल का एलान कर दिया। पंजाब में इसी समय एक महती सभा, जिसमें करीब २०,००० लोग के थे, (१३ अप्रैल १९१९ ई०)। अँगरेजों से यह देखा न गया। जेनरल डायर बहुतसी सेना के साथ वहाँ पहुंचा और हुक्म दिया कि सभी लोग बाग छोड़ दें। इसमें देरी लगते ही मसीनगनचलाना शुरू कर दिया गया। हजारों लोग मरे और अनेकों घायल हुए। इसने भारतीयों की धमनियों में प्रबल क्रांति का नारा बुलंद किया। इस घटना की जांच करने के लिये हंटर कमीशन बनी थी।

टोडरमल—राजा टोडर मल अकबर का वित्त मंत्री था। वह बहुत बड़ा अर्थशास्त्री था। वह अकबर का प्यारा दोस्त था। इसी के बतलाये हुए मार्ग के अनुसार अकबर ने माल-गुजारी का बन्दोबस्त किया ; टोडरमल का सुधार (मालगुजारी सम्बन्धी) शेरशाह कृत सुधारों की भित्ति पर ही था। टोडर-मल रण-नीति - योग्य भी था। बंगाल को उसी ने फतह किया था।

टामस रो—जहांगीर की दर्बार में आंग्ल सम्राट जेम्स प्रथम ने सर टामस रो को व्यापारिक सुविधा प्राप्त करने को भेजा था। इसने जहांगीर को प्रसन्न किया और अनेक सुविधाएँ

प्राप्त की। इसके जो भारत विषयक लेख हैं, उनसे तत्कालिक परिस्थितियों पर पूरा प्रकाश पड़ता है।

डेमेट्रियस—बैक्ट्रियाधिपति डिमित या डेमेट्रियस ने १८३ ई० पू० में भारत पर चढ़ाई की थी। इसने पंजाब एवं सिन्ध के कुछ इलाकों को जीत लिया। फिर मथुरा साकेत (वर्त्तमान अयोध्या) को जीत लिया और पाटलीपुत्र तक आ पहुँचा। इसने एक शहर भी बसाया। इसने अपनी सिक्कों पर भारतीय भाषा का प्रयोग किया।

डा० राजेन्द्रप्रसाद—इनका जन्म १८८४ ई० में जीरादेई (सारन जिला, जो बिहार में है) में हुआ था वे। बाल्यावस्था में बहुत ही कुशाग्रबुद्धि थे। विश्वविद्यालय के ये नामी छात्र थे। कुछ दिनों तक ये प्राध्यापक भी रहे। फिर वकालत किया परन्तु गांधी के आह्वान पर इन्होंने वकालत छोड़ दिया और गांधीजी के पूरे अनुयायी बन गये। कई बार जेल भी गये और अनेक यातनाएँ सही।

पं० जवाहरलाल नेहरू—इनका जन्म १८८९ ई० में हुआ था। इनके पिता का नाम पं० मोतीलाल नेहरू था। जो बहुत बड़े राष्ट्रीय नेता एवं विज्ञ वकील थे। इलाहाबाद का आनन्दभवन इनका निवास स्थल है। ये काश्मीरी ब्राह्मण हैं। पं० जवाहर लाल नेहरू की शिक्षा हेरो (Harrow) और ट्रिनीटी (Trinity) में हुई।

ये वर्तमान संसार के सबसे महान वक्ता एवं राजनीतिज्ञ के रूप में है। ये बहुत बड़े इतिहासज्ञ भी हैं। विश्व इतिहास की झलक जो १४९६ पृष्ठ की महान पुस्तक है एवं हिन्दुस्तान की कहानी जो ७२० पृष्ठ का भारतीय संस्कृत का दर्पण ग्रन्थ

है। इनकी आत्मकथा विश्व विख्यात ग्रन्थ है। ये अँगरेजी साहित्य के उच्चतम लेखकों में से है।

ये समाजवादी पद्धति पर गमन करते हुए भी कांग्रेसी हैं। पण्डितजी १९२९ में कांग्रेस के अध्यक्ष बनाये गये फिर १९३६ और १९३७ में भी बने। आप, आज भी इसी पद पर हैं।

ये वर्तमान स्वतंत्र भारत के सर्व प्रथम प्रधान मंत्री एवं अन्तर्राष्ट्रीय नीति के संचालक हैं।

पानीपत की लड़ाई १५२६-यह लड़ाई १५२६ ई०में बाबर और दिल्ली सम्राट इब्राहिम लोदी के बीच हुई थी। यह लड़ाई पानीपत नामक मैदान में हुई थी। बाबर की वीरता एवं रणचातुरी ने एवं उसके नवीन वैज्ञानिक आयुधों के आगे इब्राहिम नहीं ठहर सका और परास्त हुआ—मारा गया।

पोरस—(देखें प्रश्न ४ पृ० ६)

पूना पैक्ट—१७ अगस्त १९३२ को मेकडोनल्स (तत्कालीन ब्रिटिश प्रधान सचिव) ने कम्युनलरिआर्ड निकाला। अँगरेजों का सदा यही विचार था कि फूट डालो और शासन करो। इस नियम के अनुसार हरिजनों को अलग मताधिकार दिया गया था यानी उन्हें मिलाने की कोशिश की गई और भारतीयों में फूट डाली गई। गांधीजी ने दुःख के साथ-नजर बंदी की हालत में भी-आमरण अनशन कर दिया (सितम्बर १९३२ ई०)। देश भर में तहलका मच गया। सभी लोगों ने मिल कर (जिसमें हरिजन भी थे) मेकडोनल्स की आलोचना की। इसी को पूना पैक्ट कहते हैं। तदुपरांत गांधीजी ने भी अनशन भंग किया।

फाहियान—फाहियान चीनी यात्री था। वह चीन के कानसू प्रान्त का रहनेवाला बौद्ध पंडित था। बौद्ध पुस्तकों की खोज में एवं भारतीय अध्यात्म ज्ञान से प्रभावित होकर वह भारत को चला और भारत में ४०५ ई० से ४११ ई० के बीच तक रहा। वह चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के समय में आया था। इसने भारत का सुन्दर वर्णन किया है।

धार्मिक अवस्था—बौद्ध धर्म की अवस्था अच्छी नहीं थी यद्यपि बंगाल, पंजाब, मथुरा इसके प्रबल केन्द्र थे, तथापि कपिलवस्तु जंगल हो गया था, गया उजार हो गया था। जहां तहां ब्राह्मणधर्म की उन्नति थी। गुप्त सम्राटों में धार्मिक कट्टरता तनिक भी नहीं थी।

सामाजिक अवस्था—अहिंसकों का आदर था, प्याज लहसुन, शराब त्याज्य था। चंडाल नगर के बाहर रहते थे और वे अछूत समझे जाते थे।

पटना—पटना में अशोक के प्रासाद को देखकर वह आश्चर्य चकित हो गया। वह नहीं समझ सका कि वह मानव निर्मित है या देवनिर्मित। पाटलिपुत्र में हीनयान एवं महायान के मठ थे उसके पास ही जैनों और ब्राह्मणों का भी मठ था। प्रत्येक वर्ष बुद्ध मूर्त्ति की प्रदर्शनी होती थी।

लोगों को आवागमन की स्वतंत्रता प्राप्त थी। न्याय पद्धति उदार थी। मृत्युदण्ड नहीं दिया जाता था। चोर डाकुओं का पता नहीं था। देश में शान्ति थी।

मेगास्थनीज—(देखें प्रश्न ५ पृ० १२, १७, २०, २४)

मिनान्डर—यूथीडिमस वंश में सबसे प्रसिद्ध राजा मिनान्डर ही हुआ। इसकी राजधानी साकल या स्यालकोट

थी। मिनान्डेर बौद्ध धर्मावलम्बी था। पश्चिमी भारत के बहुत से इलाकों को उसने जीत लिया था। उसके धावों से पाटलीपुत्र तक के लोग त्रस्त रहते थे। यह वीर और महात्वाकांक्षी राजा था।

मिनहाजुशिराज कृत तवाकत-ए-नासीरी—यह बहुत बड़ा ऐतिहासिक ग्रन्थ है। शिराज' नासिरउद्दीन के दरबार में रहता था। इस ग्रन्थ की विशेषता यह है कि तिथियां प्रामाणिक एवं इतिहास संगत है। नासिरउद्दीन कालीन देश की अवस्थाओं पर इस ग्रन्थ से पूर्ण प्रकाश पड़ता है।

मलिक काफूर—१२९७ ई० में अलाउद्दीन ने गुजरात को फतह किया और अनेक गुलामों को अपने साथ दिल्ली लाया जिसमें एक गुलाम, मलिक काफूर, अपूर्व साहसी, वीर एवं नीतिज्ञ था। इसी कूटनीतिज्ञता के बल पर वह सेनापति बन गया और अलाउद्दीन ने उसे दक्षिण भारत पर विजय करने की आज्ञा दी। १३०७ में इलिचपुर जाकर काफूर ने राजा रामदेव को परास्त किया फिर १३०८ में औरंगल राजा प्रतापरुद्र को परास्त किया। फिर तामिल, मैसूर एवं होयसल राज्यों को झुकाया। कहते हैं कि दक्षिण में काफूर ने एक मस्जिद भी बनवाई थी, परंतु यह कथन एकदम असत्य है।

महान इतिहास ग्रंथ तारीखे फिरोज शाही—इस इतिहास में फिरोज कालीन अवस्थाओं का विस्तृत वर्णन है। इसका लेखक जियाउद्दीन बर्नी नामक इतिहासज्ञ था।

मलिक अम्बर—रण-नीतिज्ञ, महान सेनापति, योग्य शासक मलिक अम्बर; अहमदनगर के निजामशाही सुल्तान

का मंत्री था। उसने मुगलों को कई बार छक्के छुड़ाये। जहांगीरी फौज को इसने अनेकों बार परास्त किया। अंत में खुर्रम के द्वारा अम्बर परास्त हुआ। और खुर्रम ने उसे सन्धि करने पर बाध्य किया। उस प्रवीण व्यक्ति की मृत्यु १६२७ ई० में हुई।

महाकवि तुलसीदास—(१५३३-१६२४ ई०)

साहित्य१, रस२, ध्वनि३, अलंकार४ भाव५ के पण्डित, धर्म-ध्वज तुलसी का जन्म आत्माराम के वीर्य से हुलसी के गर्भ से राजपुर जिला बांदा में हुआ था। काशी के महात्मा शेष सनातन से इन्होंने इतिहास, भूगोल एवं काव्य-विषय का अध्ययन किया और दीनबन्धु पाठक की लड़की रत्नावली से विवाह किया, स्त्री पर उनका बहुत प्रेम था। अति प्रेम से ही विराग उत्पन्न होता है। घर से निकल पड़े। काशी आदि क्षेत्र में भ्रमण किया, इनकी मत्यु बहुत दुःखद रूप में हुई। रामचरित्रमानस, कवितावली, गीतावली, विनयपत्रिका इनकी प्रमुख कृतियों में है। आचार्य चतुरसेन के शब्दों में—विश्व-साहित्य में अँगरेज कवि शेक्स-

---

१ सहितस्य भावः=साहित्यः।

२ आन्तरिक आनन्द प्रपूरित उद्रेक है जिसकी निष्पत्ति विभानुभाव-व्यभिचारिसंयोगाद से होती है।

३ पीड़ानंद के कारण उत्पन्न स्पष्ट या अस्पष्ट हार्दिक उद्‌गार को ध्वनि कहते हैं।

४ काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते —दण्डी

५ बाह्य जागतिक सूक्ष्म या स्थूल, काल्पनिक या वास्तविक वस्तु का प्रभाव जब मानव-मानस-वीणा को झंकृत करता है, तब 'भाव' की उत्पत्ति होती है।

पियर; ग्रीक कवि होमर, इटालियन कवि वर्जिल, फ्रेञ्च कवि दान्ते, रूसी कवि पुश्किन अरबकवि हम्मासा, फारसी कवि फिरदौसी, सादी, हाफिज, खाकनी, उर्दू कवि गालिब, सौदा, बंगाली कवि मधुसूदन दत्त और रवीन्द्र, महाराष्ट्र कवि तुकाराम और गुजराती कवि दयाराम आदि महामेधावी कविवरों के नाम का भी महात्म्य है। परन्तु कवि की हैसियत से तुलसी कदाचित इन सबसे उपर उठ गये हैं।"[६] ये नैसर्गिक कवि थे।

सुकृत पुंज मंजुल अलिमाला।
ज्ञान-विराग विचार मराला।
गुंजत मधुकर मुखर अनूपा।
सुन्दर खग रव नाना रूपा॥

मुसलिम लीग—मार्ले मिन्टो सुधार के समय में इसकी स्थापना, आगाखां कृत प्रयत्न एवं अँगरेजों से प्राप्त सहायता से हुई (१९०६ ई०)। यह कट्टर मुसलमानी संस्था के रूप में, उस समय थी। इसने प्रतिनिधि बनाकर सरकार के पास भेजा। लीग कट्टर वादियों की संस्था थी। मि० मुहम्मद अली जिन्ना के समय में इसकी खूब प्रगति हुई। १९४० में लीग ने भारतवर्ष के विभक्तीकरण का प्रस्ताव किया, यानी पाकिस्तान की मांग की थी।

महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर—महाकवि रवीन्द्र का जन्म ७ मई १८६१ ई० को कलकत्ता के एक वैभवपूर्ण बंगाली परिवार में हुआ था। इनके पिता देवेन्द्रनाथ ठाकुर जो कला, साहित्य आदि सुविषयों के प्रेमी एवं अपूर्व प्रतिभा पूरित व्यक्ति थे। पितृप्रेम रवीन्द्र को पूर्ण प्राप्त था। इनकी प्रतिभा

---

६ हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास।

ओरियंटल सेमेनरी स्कूल, कलकत्ता में प्रस्फुटित हुई । सेंट जीवियर्स में शिक्षा प्राप्त कर लेने के बाद ये इङ्गलैण्ड गये। वहां के प्राध्यापक हेनरी मार्ले का प्रेम उन्हें प्राप्त था।

वे बाल्यावस्था से ही प्रकृति प्रेमी थे। प्राकृतिक दृश्यों को देखने में इनका मन तन्मय रहता था। नैसर्गिक कला-कारिता पर वे मुग्धमान रहा करते थे। वे बाल्यावस्था से ही काव्य रचते थे। इनकी पहली प्रकाशित कविता 'अभिलाष' है। वे कवि थे, आलोचक थे, काव्यकार थे, कलाकार थे, नाटक-कार थे, उपन्यासकार थे। कहने का तात्पर्य यह कि साहित्य के विविध अङ्गों पर इनकी प्रतिभा-किरण नर्तित हुई थी।

इनकी सबसे प्रसिद्ध कृति 'गीतांजलि' है इसपर मुग्ध होकर पाश्चात्य जगत ने भारतीय प्रतिनिधि कवि रवीन्द्र को नेबेल पुरस्कार-प्रदान किया था। ये साहित्यिक के साथ समाज सुधारक एवं क्रांतिकारी व्यक्तित्व सम्पन्न थे। इन्होंने शान्तिनिकेतन की स्थापना कर निज प्रांजल विचार को कर्त्तव्य के ठोस परिधान से परिवेष्टित किया। इनकी मृत्यु ७ अगस्त १९४१ ई० को हुई।

मोहन दास कर्मचन्द्र गांधी—इनका जन्म २ अक्टूबर १८६९ ई० में सुदामापुरी में, जो पोरबन्दर (काठियावाड़) में है, हुआ था। वे जाति के वैश्य थे। १३ वर्ष की उम्र में इन्होंने कस्तूरबा से शादी की और १८८८ में कानून पढ़ने के लिये इङ्गलैंड गये। भारत लौटने पर बम्बई में वकालत करने लगे फिर दक्षिण अफ्रिका १८९३ में गये। वहां के प्रवासी भारतीयों के हेतु इन्होंने वहां की सरकार से शान्तिपूर्ण घोर विद्रोह किया। भारत आकर इन्होंने राष्ट्रीय संग्राम में भारतीयों का नेतृत्व

किया। सवज्ञा आन्दोलन, (१९३०); सत्याग्रह संग्राम; नमक कानून भंग; सत्यनीति पूतिपालन, सेवा, इनके प्रमुख कार्य्य थे। १९२४ ई० में वे कांग्रेस के अध्यक्ष भी बने। १९३२ ई० में इन्होंने गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया था।

गांधीजी को कई बार जेल भी जाना पड़ा था।

वे अर्वाचीन युग के महान अहिंसक एवं सत्यवादी, दृढ़ प्रतिज्ञ, साहित्यिक थे। इनकी मृत्यु ३० जनवरी १९४८ को हुई थी।

यादवू की सन्धि—(देखें प्रश्न १६ पृ० ७२)

रजिया—(देखें ऐतिहासिक भारतवर्ष पृ० १०)

राणा संग्राम सिंह—रायमल पुत्र संग्राम सिंह मेवाड़ का राणा था, जो नीतिज्ञ, वीर, सेनापति, रण विद्या विशारद, महत्वाकांक्षी एवं हिन्दू सभ्यताभिमानी था। इसी समय भारत पर बाबर का आक्रमण हुआ। बाबर ने सांगा के कुछ प्रदेशों पर आक्रमण कर जीत लिया। सांगा भी वीरता से बढ़ा और बयाना जीत लिया। बाबर एवं राणा के बीच **खनवा में लड़ाई** हुई। राणा के डर से मुगल सेना कांपती रहती थी। मुगलों ने कई बार मुँह की खाई। बाबर किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया। बाबर ने सैनिकों के बीच खूब जोशीले भाषण दिये, धर्म दी दुहाई दी, शराब की प्यालियों फोड़ डाली गई। सांगा ने समझा बाबर लौट जायगा परन्तु बाबर ने अचानक राणा-फौज पर आक्रमण कर दिया (मार्च १५२७ ई०)। प्रथम तो राणा ही प्रबल रहा परन्तु अचानक एक शर राणा की आंख में लग गया जिससे राणा मुर्छित हो गया। अन्त में राणा-सेना की हार हुई। राणा के बारे में कहा जाता है—

अस्सी घाव लगे थे तन में।
फिर भी व्यथा नहीं थी मन में ॥

रेग्यूलेटिंग-एक्ट—पृष्ठ २ भाग २)

रिपोर्ट नेहरू—दिल्ली सम्मेलन (१६२८ ई०) में कांग्रेस नेताओं ने यह प्रस्ताव पास किया है संविधान में सुधार हो। इसे पूर्ण करने के लिये एक मण्डल बना जिसके प्रधान पं० मोतीलाल नेहरू थे। इन्होंने जो सुधार किया वह यही था कि भारत को औपनिवेशिक स्वतंत्रता दी जाय। इसी को 'नेहरू रिपोर्ट' कहते हैं। बहुत-से उग्रवादी भारतीयों ने इस रिपोर्ट के विरोध में आवाज उठाया था।

लार्ड मेकाले—(देखें प्रश्न ११ पृ० ४२)

बाण—हर्ष के दरबारी कवियों में बाण का नाम पूसिद्ध है। इनकी रचना "हर्ष चरित" में इतिहा -रस का पूर्ण परिपाक हुआ है। कादम्बरी में बहुल रस निष्पन्न होता है। 'चण्डी शतक' देवी महिमा वर्णन है।

स्कंद गुप्त—गुप्त वंशी सम्राट कुमार गुप्त के मरने के बाद बहुत बड़ा गृह हुआ। जैसा कि वह स्वयं (स्कंदगुप्त) शिलालेख पर लिखता है :—

पितरिदिवमुपेते विप्लुतां वंश लक्ष्मी,
भुजबलविजिताग्यि प्रतिष्ठाप्य भूयः।
जितमिव पारितोषान् मातरं साश्रु नेत्रां,
हतरिपुरिव कृष्णो देवकी मम्युपेतः ॥

उसी समय हूणों का पूबल आक्रमण हुआ जिसमें गुप्तों की कुल लक्ष्मी विचलित हो गई। स्कंद ने कुललक्ष्मी का स्तंभन किया (रोका) और हूणों को मार भगाया। वह पूजा हितकारी एवं धर्मान्धताहीन सम्राट था।

१६ **महाजनपद**—(देखे—ऐतिहासिक भारतवर्ष पृ० ६)।

सूर--(१४७६–१५८६ ई०) चन्दवरदाई (पृथ्वीराज रासो के प्रणेता) के वंशज, रेणुका तीर्थ के बासी, वल्लभाचार्य के शिष्य, कृष्ण के बालमूर्ति पर मुग्ध,, व्रजभाषा काव्य के मूर्ति वात्सल्य रस के महत्तम पण्डित, दास्य भावना भावित सूर का हिन्दी साहित्य में प्रमुख स्थान है। सूर गुरु के बड़े भक्त थे जैसा कि उन्होंने लिखा है—"भरोसे दृढ़ इन चरनन केरो।

श्री वल्लभ-नख-चंद-छटा बिनु, सब जग माँझ अंधेरो।"

वात्सल्य रस तो उच्चता को प्राप्त है "मैया मैं माखन नहि खायो।

मैं बौना पाइन तैं छोटो, छीको हाथ न आयो।"

इनके भ्रमर-गीत—"मधुकर काके मति भए।

दिवस चारि करि प्रीति लगाई, रस लै अनत गए।

—सुप्रसिद्ध है। मस्तिष्क व्यायाम एवं यमक ६ अलंकार का मोह इन्हें पूरा रहा है।

जनि हठ करहु सारंग-नैनी।

सारंग ससि सारंग पर सारंग, ता सारंग पर सारंग बैनी।

इनकी प्रसिद्ध कृति सूरसागर है।

सर सर्वपल्ली राधा कृष्णन्—वर्त्तमान भारत के ये उप-राष्ट्रपति हैं। ये राष्ट्र के योग्यतम व्यक्तियों में से हैं। इनका व्यक्तित्व महान है। अन्ताराष्ट्रीय-ज्ञान के क्षेत्र में इनका स्थान प्रमुख है। ये वक्ताओं में मूर्द्धन्य हैं। दर्शन के—प्राधनतः भारतीय दर्शन

---

६ सव्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यञ्जन सहते।
क्रमेण तेनैवावृतिः यमकं विनिद्यते॥ साहित्य दर्पण

के—प्रतिनिधि हैं। भागवद्गीता का आंग्लभाष्य ने पाश्चात्य जगत को दिखला दिया है कि प्राच्य दर्शन आध्यात्म ज्ञान का समुच्चय है। "गौतम दि बुद्ध"—लिखकर उन्होंने विश्व की महान आत्माओं में से एक गौतम बुद्ध के जीवन का वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक विश्लेषण किया है।

विदेशों में इनका स्थान उच्चतम है। प्रत्येक अन्तर-राष्ट्रीय विश्वविद्यालय इन्हें सम्मान की आंखों से देखता है।

साइमन कमीशन—पार्लमेंट ने मांटेग्यू चेम्सफोर्ड के सुधारों के गुण एवं दोष देखने के लिये और उसपर विचार देने के लिये साइमन के नायकत्व में ८–११–१९२७ को एक मण्डल बनाया जिसमें एक भी भारतीय नहीं थे। भारतीयों ने इसका विरोध किया (१९२७ ई०, मद्रास कांग्रेस)। ३–२–१९२८ को यह कमीशन बम्बई आया। लोगों ने उसका पूर्ण अपमान किया जिसका उत्तर अँगरेजों ने भी दमनचक्र चलाकर दिया। इसने अपनी विज्ञप्ति १९३० में निकाला।

स्वराज्य पार्टी—१९१९ के कानून के अनुसार भारतीयों को भी निर्वाचित होने का अधिकार प्राप्त था। कुछ लोगों का कहना था कि निर्वाचन में भाग लिया जाय और कुछ लोगों का विचार था कि 'क्रांति भीतर से लाई जाती है बाहर से नहीं'—इसलिये एसेम्बली में भाग लिया जाय। दूसरी बात पर अमल करने वालों में प्रमुख पण्डित मोतीलाल नेहरू, चितरञ्जन दास आदि थे। उन्हीं की, इस पार्टी को स्वराज्य पार्टी के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

ह्वेनत्सांग—इस चीनी यात्री जिसका जन्म चीन के होन-नफू प्रान्त में हुआ था (६०५ ई०), बाल्यावस्था में बौद्ध धर्म

से बहुत प्रभावित हुआ। इसने चीनी सम्राट से भारत जाने की आज्ञा मांगी। पर सम्राट क्यूसू ने उसे आज्ञा न दी। परन्तु ह्वेनत्साङ्ग रुका नहीं, चल पड़ा। अनेक कठिनाइयों के बावजूद भी वह समरकन्द पहुँच गया। समरकन्द की, जो प्रसिद्ध बौद्ध केन्द्र था, हालत बहुत बुरी थी। जो बौद्ध आचार्य वहाँ थे वे बुद्ध के आदर्श नियमों के परे थे। फिर ह्वेनसाङ्ग क्रमशः बल्क और बेमियान आया जो उस समय बौद्धधर्म का प्रधान केंद्र था। फिर ह्वेनसांग तक्षशिला, जो उन दिनों विद्या केंद्र था, पहुँचा (६३१ ई०) जहाँ उसने विद्याध्ययन किया। तदुपरांत हर्षवर्द्धन की राजधानी कन्नौज पहुँचा। जहां हर्ष ने हर्षित होकर उसका स्वागत किया। ह्वेनत्साङ्ग वहाँ कई वर्षों तक ठहरा फिर प्रयाग कौशम्बी श्रीवास्ती कपिलवस्तु आदि स्थानों में भ्रमण करता हुआ नालंदा पहुँचा। वहाँ वह कुछ दिनों तक ठहरा फिर निज देश को लौट गया।

इसके वर्णन के अनुसार उस समय बौद्धधर्म के कई साम्प्रदाय हो चले थे। वाह्य पाखण्डता की ही आचार्यों में प्रधानता थी। उस समव बौद्धधर्म का प्रबलतम स्तम्भ हर्षवर्द्धन था। अंतरजातीय सम्प्रदान (विवाह) ही होते थे। विधवाओं को पुनः सम्प्रदान करने का अधिकार प्राप्त नहीं था। भारत की सैनिक शक्ति सुसंगठित थी। व्यापार की हालत उन्नत थी। इसके वर्णन से हर्षवर्द्धन के बारे में बहुत जानकारी मिलती है (देखें प्रश्न २१ पृ० ५१)।

हसन गंगू—(देखें प्रश्न ३८ पृ० ६७)

हल्दी घाटी—यह लड़ाई महाराणा प्रताप सिंह और मुगल सम्राट जलालुद्दीन अकबर के बीच १५७६ ई० में हुई

थी। इस युद्ध का कारण यह था कि अकबर, स्वतंत्रता-भिमानी प्रताप को परतन्त्रता स्वीकार कराना चाहता था, जो प्रताप को स्वीकार नहीं था। मुगलिया फौज का नायक राजपूत मानसिंह था। महाराणा के वीरों में इसी भावना की प्रधानता थी कि

झाला माना मुगल दीप का मतवाला परवाना है।
दीपक उसे बुझा देना है या लड़ कर मर जाना है।

राणा फौज ने वीरता तो खूब दिखाई परन्तु असंख्य अकबरी फौज के निकट वे ज्यादे देर तक डट न सके। फिर भी प्रताप ने मस्तक न झुकाया और जंगल भाग गये जहाँ उन्होंने घास की रोटी खाई। अपनी प्रतिभा एवं रण-चातुरी के बल पर इ होंने अन्त में सफलता भी पाई।

होमरुल आंदोलन—कांग्रेस १९०८ में २ मतों के लोगों से भर गयी थी। एक मत के लोग गरम दल या उग्रवादी और द्वितीय दल के नरम या शान्तिवादी थे। उग्रवादी दल के नेता बाल गंगाधर तिलक एवं एनीविसेंट थे। बाल गंगाधर तिलक ने कहा कि आंतरिक मामलों में पूर्ण स्वतंत्रता दी जाय। १९१६ में एनी विसेंट ने मद्रास में होमरूल की स्थापना की। सरकार ने दमन चक्र चलाया। इसी आंदोलन को होमरूल आंदोलन कहते हैं।